तज़किया-ए-नफ़्स
तसफ़िया-ए-क़ल्ब

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

तज़किया-ए-नफ़्स

व

तसफ़िया-ए-क़ल्ब

मुअल्लिफ़
डा०-आज़म बेग क़ादरी
09897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये महफ़ूज़ हैं

नाम किताब- तज़किया-ए-नफ़्स व
तसफ़िया-ए-क़ल्ब

मुअल्लिफ़-डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

सने इशाअत-अगस्त- 2022

कम्पोज़िंग-जुनैद अली क़ादरी &
ज़ैनुल आबदीन क़ादरी

क़ीमत- 90/- रुपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
01	हम्द	07
02	तम्हीद	09
03	क़ल्ब के अहवाल व कैफ़ियात	12
04	दिल की अक़साम	18
05	नफ़्स का क़ल्ब से तअ़ाल्लुक़	21
06	इत्मीनाने क़ल्ब की राज़	24
07	नफ़्स की ताअ़रीफ़	26
08	नफ़्स का लुग़बी माअ़ना	28
09	उ़ल्मा के नज़दीक नफ़्स का माअ़ना	29
10	नफ़्स के इस्तिलाही माअ़ने	30
11	नफ़्स की हक़ीक़त	33
12	रियाज़त व मुजाहदा	36
13	नफ़्स की अक़साम	37
14	नफ़्स के मज़ीद मदारिज	41
15	रुह की ताअ़रीफ़	45
16	नफ़्स बुराई और गुनाहों की तरफ़ माइल करता है	46
17	ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर‘वी करने वालों की मज़म्मत	49
18	नफ़्स की पैर‘वी करने वाले यक़ीनन गुमराह हैं	58

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
19	नफ़्स का तज़्किया करने वाले दुनिया व आख़िरत में कायमाब होते हैं..........	67
20	नफ़्सानी ख़्वाहिशात को क़ाबू में रखने वालों का ठिकाना जन्नत है................	71
21	शैतान लईन वसवसों के ज़रिये इन्सान को गुमराह करता है.......................	77
22	इन्सानों में भी शैतान होते हैं..............	83
23	इख़्लास याफ़्ता बन्दों पर शैतान का कोई ज़ोर नहीं चलता............................	93
24	शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है.........	105
25	शैतान इन्सानों को उनके बुरे आअ़्माल आरास्ता करके दिखाता है................	113
26	शैतान हमेशा बेहयाई और बुरे कामों का हुक्म देता है..................................	124
27	शैतान वसवसों के ज़रिये इन्सान को फ़ित्नों में डालता है.............................	129
28	शैतान वसवसे डालता और अल्लाह बख़्शिश व फ़ज़्ल का वाअ़्दा फ़रमाता....	132
29	शैतान के शर व मक्रो फ़रेब और उसके वसवसों से बचने का तरीक़ा.............	136
30	शुरु रात के वक़्त शैतान फैल जाते हैं...	152
31	अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से................	152
32	ख़्वाब में हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की शक्ल में शैतान नहीं आ सकता................	153

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
33	जमाई शैतान की तरफ़ से है............	153
34	जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से है........	154
35	बीवी के पास जाने से पहले शैतान से तहफ़्फ़ुज की दुआ करना................	155
36	घर में घुसते वक़्त अल्लाह का नाम......	155
37	तुलूब व गुरुबे आफ़ताब के वक़्त नमाज़ न पढ़ने की वजह........................	156
38	कसरत से शैतानी वसवसों का आना ऐ़न ईमान है................................	156
39	शैतान खून की तरह गार्दिश करता है....	157
40	हर इन्सान के साथ शैतान होता है......	157
41	ग़ैर इख़्तियारी वसवसे मुआ़फ़ हैं.........	159

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

नफ़्स तमाम आफ़तों और बुराइयों की जड़ है और इब्लीस (शैतान) का यही ख़ज़ाना है नफ़्स ख़बीस का कमीना पन व जहालत का ये अ़ालम है जब ये किसी गुनाह का क़सद करे या शहवत पर उठ खड़ा हो तो खुदा व रसूल और कुरान का वास्ता पेश करने या क़ब्र क़यामत जन्नत दोज़ख़ उसके सामने पेश करने के बावुजूद भी ये गुनाह से नहीं रुकता।

हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि किसी जानवर को इतनी सख़्त लगाम की ज़रुरत नहीं होती जितनी नफ़्स को होती है ये नफ़्स दिल पर ग़ालिब रहता है और दिल को अपना क़ैदी बनाये रखता है नफ़्स एक महबूब दुश्मन है और महबूब शैः के नक़ायस व उ़यूब नज़र नहीं आते वो तो मुहब्बत में अन्धा रहता है लिहाज़ा उयूब से नवाक़िफ़ शख़्स हलाकत के गढ़े में गिर जाता है चुनांचा नफ़्स की इताअ़त की आफ़ात मसलन गुस्सा, हसद, बुग्ज़, कीना, ग़ीबत, चुग़ली, बदगुमानी, ऐ़ब जोई, हिर्स, लालच, शहवत परस्ती, खुदपसंदी, तकब्बुर, हुब्बे माल व हुब्बे जाह व मन्सब व ज़र का लालच, फ़रेब झूठ इफ़्तिरा, तुहमत, धोका, वग़ैराह ये सब नफ़्स की आफ़ात हैं माल व दौलत के लिये नाजाइज़ तरीक़े अपनाना बुख़्ल, बेईमानी, ख़्यानत, चोरी डाकाज़नी

क़त्ल वग़ैराह और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की नाफ़रमानी ये सब नफ़्स की आफ़ात के ज़ुमरे में शामिल हैं।

अगर नफ़्स का दिल पर ग़लबा हो जाये तो इन्सान मुकम्मल तौर पर नफ़्स का ज़ेरे फ़रमान हो जाता है इसलिये हर इन्सान पर लाज़िम है कि वो अपने नफ़्स की आफ़ात व ख़तरात से बचने की हत्तल इमकान कोशिश व तदाबीर करता रहे और शहवत भी नफ़्स की एक हौलनाक आफ़ात में से एक आफ़त है।

हज़रत मौलाना रुम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि शहवात की गुलामी किसी इन्सान की गुलामी से बदतर और सख़्त होती है इसकी गुलामी से आज़ादी पाना आसान नहीं है बन्दा इसकी गुलामी में धीरे धीरे गुनाहों व माअ़सियत की गहराइयों में धंसता चला जाता है शहवत बड़े बड़े बादशाहों को गुलाम बना देती है और तर्के ख़्वाहिश व शहवत गुलामों को बादशाही का मक़ाम अ़ता करती है ख़्वाहिश व शहवत इब्ने आदम की फ़ितरत में गूँधी गई है ये शहवत मिस्ले आतिश है जो कि पूरा करने से कम नहीं होती अलबत्ता ये साकिन और ज़ब्त करने से कम हो सकती है।

बाअ़ज लोग ये समझते हैं कि शहवत पूरी हो जाये ताकि तबीअ़त खाली हो जाये और फिर तौबा कर ली जाये तो शैतान यही धोका देकर बार

बार गुनाह कराता है सिर्फ़ इश्के इलाही व इश्के रसूल इससे बचने की बेहतरीन तदबीर हैं ज़ाहिरी आग तो पानी के साथ बुझ जाती है मगर शहवत की आग दोज़ख़ तक ले जाती है और नफ़्स का तज़किया व क़ल्ब का तसफ़िया व जुहदो तक़वा जन्नत तक ले जाता है।

हज़रत गौसुल आज़म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं जब तू अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद करेगा और तू उसे मग़लूब कर लेगा तो अल्लाह तअ़ाला बाअ़ज़ ज़राए से नफ़्स को तुझ पर ग़लबा व इक़्तिदार देगा ताकि तू फिर रियाज़त की तरफ़ लौटे ताकि तेरा ईमान पहले से ज़्यादा पुख़्ता हो जाये और आइन्दा शैतान के लिये तुझे गुमराह करने की गुंजाइश बाक़ी न रहे इसीलिये नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद को जिहादे अकबर फ़रमाया।

फ़क़ीर
डा० आज़म बेग क़ादरी
Mob- 9897626182
9045442223

-: क़ल्ब के अहवाल व कैफ़ियात :-

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि इन्सान को तमाम मख़लूक़ पर शराफ़त व फ़ज़ीलत इस वजह से हासिल है क्योंकि उसे माअ़रिफ़ते इलाही हासिल करने पर कुदरत अ़ता की गई है इसी के सबब उसे दुनिया में जमाल व कमाल और फ़ख़्र हासिल है और यही उसकी आख़िरत का सरमाया है माअ़रिफ़ते इलाही के हुसूल का ज़रिया इन्सान का दिल है और यही दिल अल्लाह को जानता है और उसका कुर्ब हासिल करता है और उसके लिये वो अ़मल करता है और उसकी तरफ़ रसाई पाता है।

अल्लाह तआ़ला अपने अनवार व तजल्लियात की बारिश उसी पर फ़रमाता है जिसका दिल अल्लाह तआ़ला के सिवा हर शैः को छोड़ दे और फिर उसका दिल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत पाता है और जिस बन्दे का दिल पाको साफ़ हो तो वो दिल कुर्बे इलाही की सआ़दत से सरफ़राज़ होता है अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी और उसके अहकामात से इअ़राज़ करने वाला भी यही दिल है और इसी दिल की रौशनी व तारीकी के सबब इन्सान से अच्छा या बुरा अ़मल सादिर होता है और जिसे अपने दिल की सहीह पहचान हो जाये वो खुद को पहचान लेता है फिर उसे अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त हासिल हो जाती है

हर मोमिन के लिये हक़ीक़ी सआ़दत व कामयाबी इसमें है कि वो अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात को अपना मक़सद व आख़िरत को अपना मुस्तक़बिल और दुनिया को सफ़र की जगह और बदन को सवारी व अपने जिस्मी आज़ा को अपना ख़ादिम तसव्वुर करे।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) से पूछा गया कि क्या वजह है कि हम दुआ़ करते हैं लेकिन हमारी दुआ़ कुबूल नहीं होती जबकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है " कि- तुम मुझसे दुआ़ करो मैं कुबूल करूँगा"।
(सू०-मोमिन-40/60)

हज़रत इब्राहीम बिन अहदम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने फ़रमाया इसलिये कि तुम्हारे दिल मुर्दा हैं लोगों ने पूछा किस चीज़ ने हमारे दिलों को मुर्दा कर दिया तो आपने फ़रमाया आठ बातों ने तुम्हारे दिलों को मुर्दा कर दिया 1- कि तुम अल्लाह तआ़ला के हक़ को जानते हो मगर उसका हक़ अदा नहीं करते 2- तुम कुरान पाक पढ़ते हो लेकिन उसके अहाकामात पर अ़मल नहीं करते 3- तुम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत का दाअ़वा करते हो मगर उनकी सुन्नत पर अ़मल नहीं करते 4- तुम कहते हो कि हम मौत से डरते हैं लेकिन उसके लिये तुम तैयारी नहीं करते 5-अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है " बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे

(मुख़ालिफ़त की शक्ल में) उसे दुश्मन बनाये रखो (सू०-फ़ातिर-35/6) लेकिन गुनाहों के मुअ़ामले में तुम उसका साथ देते हो 6- तुम्हारा दाअ़वा ये है कि हम दोज़ख़ से डरते हैं मगर तुम्हारे काम तो दोज़ख़ वाले हैं 7- तुम कहते हो कि हम जन्नत के ख़्वाहिश मन्द है लेकिन उसे पाने के लिये नेक आअ़माल नहीं करते 8- जब तुम सुबह को अपने बिस्तरों से उठते हो तो अपने ऐ़बों को पीठ पीछे डालकर दूसरों के ऐ़ब निकालने में लग जाते हो।

इन्सान का दिल मुख़्तलिफ़ सिफ़ात के घेरे में है और इस पर हर जानिब से मुसलसल असरात दाख़िल होते रहते हैं और जब इस पर कोई चीज़ आती है जिसका असर वो कुबूल करता है तो दूसरी तरफ़ से उसके बर अ़क्स दूसरी चीज़ आ जाती है और उसकी पहली सिफ़त बदल जाती है अगर दिल में शैतान आकर उसे बुलाता है तो फ़रिश्ता उसमें उतरकर उसको ख़्वााहिश से फेर देता अगर एक शैतान किसी शर की तरफ़ खींचता है तो दूसरा शैतान दूसरे शर की तरफ़ ले जाता है इसी तरह एक फ़रिश्ता एक भलाई की तरफ़ बुलाता है और दूसरा फ़रिश्ता उसे दूसरी भलाई की तरफ़ बुलाता है ये खींचतान कभी दो फ़रिश्तों के दरमियान होती है और कभी दो शैतानों के दरमियान होती है और कभी दो फ़रिश्तों और दो शैतानों के दरमियान होती है अलग़रज दिल का हाल इस तरह से बदलता रहता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हम उनके दिलों और आंखों को फेर देते हैं (सू०–अनआ़म–6/110)

अल्लाह तआ़ला के इस इरशादे गिरामी में इसी बात की तरफ़ इशारा है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) दिल के बदलते रहने पर मुत्तलाअ़ थे इसलिये आप इस तरह क़सम खाया करते थे–

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की क़सम ‘‘ला, वमुक़ल्लिबिल कुलूब’’ होती थी यानी दिलों को फेरने वाले की क़सम। (बुख़ारी–सहीह–6/142-ह०–6628)

➡हज़रत नव्वास बिन समआ़न (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जितने भी दिल हैं वो अल्लाह तआ़ला की दो उँगलियों के दरमियान हैं अगर वो किसी दिल को सीधा रखना चाहता है तो सीधा रखता है और अगर टेढ़ा रखना चाहता है तो टेढ़ा रखता है और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अक्सर ये दुआ़ फरमाते थे कि ऐ दिलो को बदलने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/46-ह०–2140)
(मुस्नद अहमद–7/290-ह०–17780)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दिल की तीन मिसालें बयान फ़रमाई हैं-

1- इन्सान का दिल चिड़िया की तरह है जो एक दिन में सात बार बदलता है एक रिवायत में है कि दिल की मिसाल चिड़िया की तरह है जो जगह बदलती रहती है।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-6/304-ह०-7850)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-1/453-ह०-755)

2- दिल बदलने की मिसाल हांडी जैसी है कि जब उसमें खूब जोश आता है तो हांडी में मौजूद चीज़ तेज़ी के साथ बदलती है।
(कंजुल उ़म्माल-1/86-ह०-1212)

3- दिल कि मिसाल परिन्दे के उस पर जैसी है जो कि मैदानी ज़मीन में पड़ा हुआ हो और हवायें उसे उलट पलट करती जायें।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-1/452-ह०-751)

बाअ़ज़ ज़हनों में शैतान ये ख़्याल डालता है कि जो ग़ैर मुस्लिम के यहां पैदा हुआ फिर उसने शिर्क किया तो उसमें उसका क्या कुसूर व गुनाह है तो इसका जवाब ये है कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला आ़लिमुल ग़ैब है वो कायनात की हर शैः के मुताअ़ल्लिक़ को पहले से जानता है कि कौन सी शैः किस वक़्त क्या अ़मल करेगी और क्या नहीं करेगी इसी तरह वो अपने तमाम बन्दो के-

उन सब अहवाल व अफ़्आ़ल और अक़्वाल को बन्दे के करने से पहले से ही जानता है कि कौन बन्दा दुनिया में क्या क्या अ़मल करेगा इसलिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने बन्दों को मुख़्तलिफ दीनों व मज़ाहिब और क़ौमों में तक़्सीम फ़रमाया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
वो ग़ायब व हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है और ज़बरदस्त और बड़ा हिकमत वाला है।
(सू०–तग़ाबुन–64/18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ लोगो हमने तुम्हें मर्द और औ़रत से पैदा किया और हमने तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में (तक़्सीम) किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको और बेशक अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुम में ज़्यादा बा इज़्ज़त वो है जो तुममें ज़्यादा परहेज़गार है।
(सू०–हुजुरात–49/13)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर पैदा होने वाला बच्चा मिल्लते इस्लाम पर पैदा होता है सो उनके माँ बाप उसे यहूदी या नसरानी या मुशरिक बना देते हैं फिर अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह जो ना बालिग़ बच्चे यहूदी या नसरानी बनने से पहले ही मर गये तो उनका क्या तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला खूब जानता है कि वो बड़े होते तो वो-क्या करते। (तिर्मिज़ी-सुनन-2/44-ह०-3138)

:- दिल की अक़साम:-

तक़्वे से आबाद दिल :- एक दिल वो होता है जिसे तक़्वे से आबाद किया गया हो व रियाज़त के ज़रिये जिसका तज़किया किया गया हो और बुरे अख़लाक़ से पाको साफ़ कर लिया गया हो उस दिल में ग़ैब के ख़ज़ानों और आ़लमे मलाकूत से अच्छे ख़्यालात आते हैं और फिर अ़क़्ल उन ख़्यालातों में ग़ौरों फ़िक्र करती रहती है ताकि उस भलाई की बारीक बातों की पहचान हासिल करे और उसके फ़वाइद के असरार पर मुत्तलाअ़ हों।

फिर जब बसीरत के नूर से उसकी सूरत मुन्कशिफ़ और वाज़ेह हो जाती है तो अ़क़्ल इस बात का फ़ैसला कर लेती है कि उसे ऐसा ज़रुर करना चाहिये चुनांचा क़ल्ब को उस फ़ेअ़ल की तरग़ीब देती है और उसे उस पर अ़मल करने की तरफ़ बुलाती है और फ़रिश्ता जब ये देखता है कि दिल अस्ल ख़िल्क़त के एतबार से पाक व तक़्वा के ज़रिये से साफ़ और अ़क़्ल के नूर से रौशन और माअ़रिफ़त के अनवार से माअ़मूर है तो वो उसे अपने ठिकाने और उतरने के क़ाबिल मक़ाम समझता है फिर वो फ़रिश्ता नज़र न आने वाले लश्करों के साथ उसकी मदद करता है और

ख़ैर व भलाई के दूसरे कामों की तरफ़ उसकी रहनुमाई करता है हत्ता कि एक नेकी दूसरी नेकी की तरफ़ ले जाती है व ये सिलसिला यूँ ही जारी रहता है और ख़ैर की तरग़ीब और उस पर हर मुअ़ामले को आसान करने के ज़रिये उसकी मदद का सिलसिला ख़त्म नहीं होता।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
पस जिसने दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की और उसने (तक़्वे के ज़रिये) अच्छाई (यानी दीने हक़ और आख़िरत) की तस्दीक़ की तो हम उसे अ़नक़रीब आसानी फ़राहम कर देंगे।
(सू०–लैल–92/5-7)

ख़्वाहिशात से लबरेज़ दिलः– दूसरा दिल वो है जो ख़्वाहिशात से भरा हुआ और बुराईयों से आलूदा होता है और क़ाबिले मज़म्मत व बुरी आदात में मुलव्विस होता है इस दिल के दर‘वाज़े शयातीन के लिये खुले रहते हैं और फ़रिश्तों के लिये बन्द रहते हैं इस दिल में शर का आगाज़ यूँ होता है कि इसमें नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ख़्याल पैदा होता है और दिल पर नफ़्स ग़ालिब आ जाता है और फिर शैतान का ग़लबा मज़बूत हो जाता है और शैतान दुनिया की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत, मक्रो फ़रेब और झूठी उम्मीदों के ज़रिये दिल को अपने जाल में फंसा लेता है और फिर उस दिल से अल्लाह तअ़ाला और आख़िरत का ख़ौफ़ निकल जाता है और दिल के अनवार बुझ जाते है और वो तारीक

और अन्धा और बहरा हो जाता है फिर इन्सान के आज़ा दिल की कैफ़ियत के मुताबिक़ हरकत करते हैं।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

क्या आपने उस शख़्स को देखा कि जिसने अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्स को अपना माअ़बूद बना लिया है तो क्या आप उस पर निगेहबान बनेंगे क्या आप ये ख़्याल करते हैं कि उनमें से अक्सर लोग सुनते या समझते हैं (नहीं) वो तो चौपायों की मान्निद हो चुके हैं बल्कि उनसे भी बदतर गुमराह हैं।
(सू०–फुरक़ान–25/43-44)

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है अगर वो दुरस्त हो जाये तो सारा जिस्म दुरस्त हो जाता है और अगर वो ख़राब हो तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है सुन लो कि वो दिल है यानी सारे जिस्म की इस्लाह क़ल्ब की इस्लाह पर मौकूफ़ है।
(बुख़ारी–सहीह–1/109-ह०–52)
(मुस्लिम–सहीह–3/337-ह०–4094)

सूफ़िया किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहिम) फ़रमाते हैं कि दिल की एक क़िस्म ये है कि कुछ दिल वो हैं जो दुनिया में पर‘वाज़ करते हैं और उनकी पर‘वाज़ ख़्वाहिशों व शहवतों के इर्द गिर्द–

होती है और कुछ दिल वो हैं जो आ़लमे आख़िरत की फ़िज़ाओं में पर'वाज़ करते हैं और उन दिलों की पर'वाज़ आख़िरत के मरातिब व दरजात के इर्द गिर्द होती है उनके रुख जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों और आअ़ला मुक़ामात व दरजात की तरफ़ होते है।

और कुछ दिल वो हैं जो सिदरतुल मुन्तहां में पर'वाज़ करते हैं और उनकी पर'वाज़ अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत के इर्द गिर्द होती है तो पहली क़िस्म का दिल दुनिया के साथ जुड़ा हुआ होता है और दुसरी क़िस्म का दिल आख़िरत के साथ जुड़ा हुआ होता है और तीसरी क़िस्म का दिल सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के साथ जुड़ा हुआ होता है और दुनिया वाला दिल अल्लाह तआ़ला की अ़ता का मुन्तज़िर रहता है और दूसरा दिल जो अल्लाह तआ़ला की रिज़ा का मुन्तज़िर रहता है व तीसरा दिल अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात का मुन्तज़िर रहता है।

-: नफ़्स का क़ल्ब से तआ़ल्लुक़ :-

क़ल्बे इन्सानी एक नूरानी चीज़ है इसमें एक फ़रिश्ता मुताअ़य्यन रहता है जो इन्सान को नेकी और भलाई के कामों के लिये राग़िब करता है लेकिन जब दिल नफ़्स की हम सायगी से आलूदा हो जाये तो दिल में बुरे ख़्यालात और बुरे काम करने से सियाह धब्बे लगते रहते हैं हत्ता कि दिल

गुनाहों की वजह से बिल्कुल सियाह हो जाता है अगर नफ़्स को मशक़्क़त में डाला जाये तो ये थक कर अपनी आदत को बदल देता है और इन्सान के ताबेअ़ फ़रमानी में आ जाता है और इसको अहकामे शरीअ़त के कामों में मशगूल रखा जाये तो नफ़्स की हालत तब्दील होती है व इसके दरजात बुलन्द होते हैं अगर क़ल्ब की हालत जंग आलूद हो जाये तो नफ़्स इन्सान के दिल पर शेर की तरह ग़ालिब होकर हमला करता रहता है और इन्सान को कसीर गुनाहों का मुरतकिब व दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बना देता है इसलिये क़ल्ब को फ़िक्रे आख़िरत और यादे इलाही और ज़िक्र व अज़कार में मसरुफ़ रखना निहायत ज़रुरी है।

जब तक बातिनी अहवाल की इस्लाह नहीं होगी तब तक ज़ाहिरी आअ़माल की इस्लाह नहीं हो सकती यानी जब तक बातिन दुरस्त नहीं तब तक ज़ाहिरी अ़मल भी दुरस्त नहीं हो सकते यानी बन्दे के अ़मल तब तक सालेहा नहीं बन सकते जब तक क़ल्ब की हालत सालेहा न हो जाये और अगर दिल की हालत बिगड़ने की वजह से, रिया होने की वजह से, तकब्बुर होने की वजह से हिर्स और लालच होने की वजह से, शोहरत तलबी की वजह से, जाह व मन्सब तलबी की वजह से या नियत में सिद्क़ व इख़लास न हो तो आअ़माल सालेहा की बजाय आअ़माले सय्या बन जाते हैं जिनका आख़िरत में कोई अज्र नहीं मिलेगा तो दिल का तमाम कुदूरतों से पाक होना ज़रुरी है।

और दिल का तसफ़िया तब होगा जब नफ़्स का तज़किया हो जिसका नफ़्स मुज़क्का नहीं उसका क़ल्ब मुसफ़्फ़ा नहीं हो सकता यानी जिसका नफ़्स पाक नहीं उसका दिल साफ़ नहीं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
फ़रमां दीजिये कि मेरे रब ने तो सिर्फ़ बेहयाई की बातों को हराम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों–और जो पोशीदा हों। (सू०–आअ़राफ़–7/33)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बेहयाई के कामों के क़रीब न जाओ ख़्वाह वो ज़ाहिर हो ख़्वाह वो पोशीदा हों।
(सू०–अनआ़म–6/151)

तमाम ज़ाहिरी आअ़माल का मदार व इन्हिसार क़ल्बो बातिन पर होता है अगर क़ल्ब में सिद्क़ नियत व इख़लास हो और क़ल्ब रियाकारी से पाक हो तो हर नेक अ़मल मक़बूल है वरना हर अ़मल के ज़ाया होने का इमकान है और जिसने अपने क़ल्बो बातिन को हर ऐ़ब व नक़्स व मैल कुचैल से पाको साफ़ कर लिया तो वो जुहद व तक़वा की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाता है और इस मन्सब पर वही फ़ाइज़ होता है जिसने अपने नफ़्स की इस्लाह की और नफ़्स पर क़ाबू पाया और नफ़्स को तमाम बुराईयों व ऐ़बो से खुद को महफ़ूज़ कर लिया और जब नफ़्स पर रुह का ग़लबा हो जाये तो उसका क़ल्बो बातिन हर ऐ़ब–

से पाको साफ़ हो जाता है और वो जुहदो तक़वा हासिल कर लेता है और आअ़माल ज़ाहिरी वो आअ़माल हैं जिनका तअ़ाल्लुक़ जिस्म और उसके आज़ा से होता है जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और वो तमाम आअ़माल जो इन्सान के आज़ा से वाक़ैअ़ होते हैं और ज़ाहिरी बुरे आअ़माल जैसे चोरी, बदकारी, शराब खोरी, ज़िना, ज़्यादती क़त्लो ग़ारत, डाकाज़नी, सूद खोरी वग़ैराह और आअ़माल बातिनी या क़ल्बी से मुराद क़ल्बी आअ़माल हैं जिनका तअ़ाल्लुक़ इन्सान के क़ल्ब की हालत व कैफ़ियत के साथ होता है जैसे नीयत, इख़लास, सिद्क़, रिज़ा, खुशूअ़ व खुज़ूअ़, तवक्कुल अल्लाह पर यक़ीन व उम्मीद और ख़ौफ़े इलाही और क़ल्ब के बुरे आअ़माल निफ़ाक़, रियाकारी, गुरुर, हसद तमाअ़ बुग्ज़ कीना दुनिया की हिर्स लालच वग़ैराह

–: इत्मीनाने क़ल्ब का राज़ :–

हज़रत गौसुल आज़म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि अपना हर मुअ़ामला कुल्ली तौर पर अपने पर'वर दिगार को सौंप दें और अपने दिल के दर'वाज़े पर अल्लाह तअ़ाला का दरबान बन जा ताकि नफ़्स व शैतान के वसवसे उसमें दाख़िल न हो सकें और फिर अल्लाह तअ़ाला जिस चीज़ को दिल में आने का हुक्म दे तो उसे आने दे और जिससे मनाअ़ करे तो उसे रोक दे और इरादा ए हक़ के अ़लावा किसी और इरादे की ख़्वाहिश न कर और इरादा ए हक़ शरीअ़ते–

इस्लामियां की मुकम्मल इत्तेबाअ़ है व ख़्वाशिहाात की कसरत बन्दे के लिये परेशानी और बर्बादी व हलाकत का सबब है पस हमेशा अहकामे इलाही की इत्तेबाअ़ कर व उसके मनाअ़ किये हुये कामों से इजतिनाब कर और तक़दीर को भी अल्लाह के इख़्तियार व रिज़ा पर रहने दे सिर्फ़ बुत परस्ती ही शिर्क नहीं बल्कि ख़्वाहिशाते नफ़्स की अन्धा धुंद व हद से ज़्यादा पैर'वी करना और दुनिया ए फ़ानी में किसी भी शैः से क़ल्ब व दिमाग़ को बा दर्जा इश्क़ वाबस्ता कर लेना भी शिर्क है जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला है ''ऐ महबूब क्या आपने उस शख़्स को नहीं देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अपना माअ़बूद बना रखा है।
(सू०–जासिया–45/23)

पस अल्लाह तअ़ाला के सिवा जो कुछ भी है वो सब ग़ैरुल्लाह है और जब तू ग़ैरुल्लाह में मशगूल हुआ तो बिला शुबा तूने अल्लाह तअ़ाला का शरीक ठहराया और खुद मुशरिक हो गया पस तू ज़िक्रे खुदा में जद्दो जह्द कर आराम न कर व ख़ौफ़े खुदा रख और बेख़ौफ़ न हो तलाशे हक़ में सदाक़त कर ग़ाफ़िल न रह और सुलूक में जो मक़ामात हासिल हों तो उन्हें अपनी ज़ात की तरफ़ मन्सूब न कर बल्कि अल्लाह तअ़ाला की अ़ता व तौफ़ीक़ समझ फिर अगर तुझे कोई हाल या मक़ाम बख़्शा जाये तो उसे मख़्फ़ी रख और ना अह्लों से उसका ज़िक्र न कर इस तरीक़ से तुझे और भी रुहानी रौशनी मिलेगी क्योंकि तेरा–

तअ़ाल्लुक़ बराहे रास्त अल्लाह तअ़ाला से हो जायेगा और अगर तेरा हाल बरक़रार रहे तो उसे खुदा की बख़्शिश जान और तौफ़ीके़ शुक्र और मज़ीद नेअ़मत का अल्लाह तअ़ाला से सुवाल कर अगर तेरा ये हाल बाक़ी रहा तो इसमें तेरे लिये इ़ल्मे माअ़रिफ़त में तरक़्क़ी व इज़ाफ़ये अदब होगा

–ः नफ़्स की ताअ़रीफ़ ः–

अह्ले इ़ल्म के नज़दीक किसी चीज़ की ज़ात को उसका नफ़्स कहते हैं नफ़्स हर जानदार मख़्लूक़ में पाया जाता है मगर इन्सानों का नफ़्स दूसरी मख़्लूक़ से मुख़्तलिफ व मुमताज़ हैसियत रखता है और नेक व सालेह अ़मल को नफ़्स के एतबार से ही पहचाना जा सकता है क्योंकि नफ़्स की मौजूदगी के बग़ैर अ़मल के बेहतर होने की शिनाख़्त क़तअ़न मुम्किन नहीं है नफ़्स की वजह से ही आदम अ़लैहिस्सलाम ने ममनूअ़ा चीज़ को खाया था और शैतान इसी नफ़्स के ज़रिये लोगों को बहकाने का आला बनाता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
उसने ज़िन्दगी और मौत पैदा की ताकि वो तुम्हें आज़माये कि तुममें अ़मल के लिहाज़ कौन बेहतर है। (सू०–मुल्क–67/2)

नफ़्स अपनी फ़ितरत व तबीअ़त में ख़बीस और तारीकी उसकी ज़ात की सिफ़त है मगर जब

इसका ख़बसे ज़ाती दूर हो जाये तो यही नफ़्स ख़ैर व कमाल का महल बन जाता है और जब ये नफ़्स इन्सान के क़ल्ब की सल्तनत व हुकूमत के तहत रहकर इत्तेबाअ़े सुन्नत व शरीअ़त और फ़िक्रे आख़िरत पर गामज़न हो जाये तो उसका ख़बसे ज़ाती दूर हो जाता है नफ़्से अम्मारा की ये ख़्वाहिश होती है कि वो लोगों में हर मुअ़ामलात में बुलन्दी व फ़ौक़ियत चाहता है और वो चाहता है कि सिर्फ़ वही हाकिम हो और बाक़ी सब उसके ताबेअ़ हों और वो खुद किसी का ताबेअ़ न हो सारी मख़लूक़ उसकी मुहताज हो और वो किसी का मुहताज न हो और ये सिफ़ात सिर्फ अल्लाह तअ़ाला के लिये मख़सूस है।

मशायख़े इज़ाम फ़रमाते है कि नफ़्स एक सरकश घोड़े की मानिन्द है जो अहकामे इलाहिया की मुख़ालिफत के लिये हर वक़्त अमादा रहता है और इत्तेबाअ़े शरीअत़ व ख़ौफ़े खुदा से बढ़कर नफ़्स की सरकशी का कोई इलाज नहीं है और नफ़्स पर इत्तेबाअ़े शरीअत़ से भारी और कोई चीज़ नहीं और शिकम सेरी नफ़्स की कुव्वतों को बेदार करती व नफ़्स की मुरादों को पूरा करती है मशायख़े इज़ाम ख़्वाहिशाते नफ़्स की रोक थाम के लिये तवज्जौ इलल्लाह व ज़िक्रे इलाही व इत्तेबाअ़े सुन्नत, फ़िक्रे आख़िरत व तअ़ाल्लुक़ माअ़अल्लाह व रसूल और सब्रो शुक्र पर इस्तिक़ामत, ईसार व दीगर औसाफ़े हमीदा के पैदा करने को लाज़मी तसव्वुर करते हैं और ग़फ़लते अ़मल, हुब्बे दुनिया

और ख़्वाहिशाते दुनिया को तर्क करने से नफ़्स की सरकशी व आफ़ात से तहफ़्फ़ुज़ हासिल किया जा सकता है।

–: नफ़्स का लुग़वी माअ़ना :–

लुग़त में अ़ाम तौर पर नफ़्स के माअ़नी रुह के आते हैं जैसे फ़रमाया गया कि ''तुम अपनी जानें जिस्मों से निकालो''।
(सू०–अनअ़ाम–6/93)

नफ़्स का लफ्ज़ दिल या क़ल्ब के माअ़नी में भी आता है जैसे फ़रमाया गया कि ''यक़ीनन अल्लाह तअ़ाला जानता है जो तुम्हारे दिलों में है''।
(सू०–बक़राह–2/235)

नफ़्स का लफ़्ज़ ग़ज़ब व गुस्से के माअ़नी भी आया है जैसे फ़रमाया गया कि ''अल्लाह तअ़ाला तुम्हें डराता है अपने अ़ज़ाब से'' यानी ग़जब से इस आयत से नफ़्स का माअ़ना ज़ात भी लिया जाता है। (सू०–आले इमरान–3/30)

नफ़्स का लफ़्ज़ रुह व अ़क़्ल के माअ़नी भी आया है जैसे फ़रमाया गया कि ''अल्लाह तअ़ाला जानों को उनकी मौत के वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है और उन (जानों) को जिन्हें मौत नहीं आयी है उनकी नींद की हालत में (उनकी अ़क़्लों को क़ब्ज़ कर लेता है)। (सू०–जुमर–39/42)

नफ़्स का लफ़्ज़ ग़ैब के माअ़नी में भी आया है जैसे फ़रमाया गया ''तू हर उस बात को जानता है जो मेरे दिल में है और मैं उन बातों को नहीं जानता जो तेरे इ़ल्म में हैं बेशक तू ही ग़ैब की सब बातों को खूब जानने वाला है''।
(सू०–मायदा–5/116)

उ़ल्मा के नज़दीक नफ़्स का माअ़ना

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं हर इन्सान के लिये दो नफ़्स हैं एक नफ़्स अ़क़्ल जिसके ज़रिये अशया में तमीज़ होती है और दूसरा नफ़्से रुह जिस पर हयात का दारोमदार है नफ़्से अ़क़्ल हालते नींद में जुदा हो जाती है और नफ़्से रुह जब निकल जाये जो हयात बाक़ी नहीं रहती।

तो माअ़लूम हुआ कि जिस्म और रुह से जो चीज़ वुजूद में आती है उसकी ज़ात को नफ़्स कहते हैं यानी नफ़्स इन्सान के तीन अजज़ा का मजमूआ़ है रुह, जिस्म और नफ़्स और नफ़्स फ़ितरी कैफ़ियत है जो कि ज़ाते इन्सानी के साथ मुत्तसिल है और अह्ले इ़ल्म की एक जमाअ़त कहती है कि नफ़्स एक ज़ात है जो बन्दे के ढ़ांचे में रखी गई है जैसे रुह वग़ैराह व एक जमाअ़त कहती है कि नफ़्स बन्दे की एक फ़ितरी व ज़ाती सिफ़त है नफ़्स को मुत्लक़न रुह नहीं कहा जा सकता जब तक उसे मुक़ीद बिल मफ़अूम न किया

जाये और न ही रुह को मुत्लक़न नफ़्स कहा जा सकता है जैसे कि अंगूर के अन्दर मौजूद पानी को ख़म्र (शराब) या सिरका नहीं कहा जाता जब तक उस पानी में वो औसाफ़ पैदा नहीं किये जायें जिस की वजह से उसे ख़म्र या सिरका कहा जा सके।

-: नफ़्स के इस्तिलाही माअ़नी :-

सूफ़िया किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) की नज़र में रुह और नफ़्स में ज़ाती फ़र्क़ है नफ़्स की बक़ा रुह पर है और नफ़्स एक ख़्वाहिशात व शहवात का मुरक्कब है और इन्सान का उसके नफ़्स से ज़्यादा कोई दुश्मन नहीं है नफ़्स दुनिया चाहता है और दुनिया से ही उसे रग़बत है और रुह उसे आख़िरत की तरफ़ दाअ़वत देती और आख़िरत को ही तरजीह देती है ख़्वाहिशात को नफ़्स का ताबेअ़ बना दिया गया है और शैतान को नफ़्स की ख़्वाहिश की तकमील का मुहर्रिक (यानी हरकत देने वाला) बना दिया गया है और नफ़्स की हक़ीक़त ये है कि वो शर व फ़ित्ने का सर चश्मा है और नफ़्स बुराई पर आमादा करने वाली कुव्वत है और बन्दे के बुरे आअ़माल और मज़मूम अफ़आ़ल का सबब नफ़्स है और मज़मूम हरकात और ख़्वाहिशात व शहवात का सुदूर इसी नफ़्स से होता है।

इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं लफ़्ज़े नफ़्स कई माअ़नों में मुश्तरक है

उनमें से एक ये है कि नफ़्स इन्सान के अन्दर ग़ज़ब व शहवत की एक जामेअ़ कुव्वत है और अहले तसव्वुफ़ के यहां लफ़्ज़े नफ़्स इसी माअ़नी में इस्तेअ़माल होता है इसलिये वो लोग नफ़्स को सिफ़ाते मज़मूमा की अस्ल जामेअ़ कुव्वत क़रार देते हैं जो इन्सान से ज़ाहिर होती है और नफ़्स की तेज़ी को तोड़ने के लिये रियाज़त व मुजाहदा लाज़मी है।

हज़रत दाता गंज बख़्श (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जब नफ़्स फ़ानी हो जाये तो बन्दे की सिफ़त रिज़ा हो जाती है और जब रिज़ा हासिल हो जाती है तो वो बन्दा अपने हाल में मुस्तक़ीम हो जाता है और फिर वो कुर्बे इलाही के हुसूल में मशगूल हो जाता है और फिर उसके दिल में बाक़ी तमाम अहवाल से इअ़राज़ पैदा हो जाता है उस वक़्त विलायत का उसके दिल पर कश्फ़ (इल्हाम) होता है और विलायत के तमाम असरार (पोशीदा बातें और भेद) ज़ाहिर होते हैं इसीलिये नफ़्स का लुग़वी माअ़नी शैः या शैः की ज़ात या हक़ीक़त व ज़ात के माअ़नी में मुरव्वज है लेकिन सूफ़िया किराम ने इसके माअ़नी ख़सायले रद्दया व अख़लाक़े सय्या और आदाते सिफ़लिया यानी कमीना, नालायक और ख़्वाहिशाते रज़ीलिया यानी कमीना पाजी के लिये हैं।

हज़रत शेख शहाबुद्दीन सोहरवर्दी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते है कि जब मुत्लक़न नफ़्स

कहा जाये तो उससे वुजूद मुराद नहीं है और न ही वो ढांचा मुराद है बल्कि नफ़्स से मुराद बन्दे के औसाफ़ हैं जिनमें ख़ामी या कजी (तिरछापन, टेढ़ापन) पाया जाता है और इससे मुराद अख़लाक़े मज़मूमा है।

हज़रत क़ाज़ी सनाउल्ला पानीपती (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं नफ़्से इन्सानी अगर ताअ़लीमे वही के मुताबिक़ रियाज़त व मेहनत कर लेता है तो वो नफ़्स अनवारे इलाही से मुनव्वर हो जाता है और दूसरों को भी मुनव्वर करता है ऐसे नफ़्स को जिस्मे लतीफ़ कहते हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इसे अपनी कुदरत से एक आइने की मिस्ल बनाया है जो आफ़ताब के बिल मुक़ाबिल रख दिया गया हो तो आफ़ताब की रोशनी इसमें ऐसी आ जाती है कि ये खुद अफ़ताब की तरह रौशनी फैलाता है और वो नफ़्स जो कि कसीफ़ (गन्दे, मैले) व ख़राब असरात से मुलव्विस होता है तो वो नफ़्स नफ़्से मज़मूम होता है।

रुह अगर कमज़ोर हो जाये तो नफ़्स इन्सान के दिल को अपनी चोंच में दबाकर वसवसे पैदा करता है और रुह अगर क़वी व मज़बूत हो तो नफ़्स को दिल की तरफ़ निगाह करने की जुर्रात भी नहीं होती हज़रत मौलाना रुमी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते है कि नफ़्स अपने घर में है और तेरी अ़क़्ल घर से बाहर है और तू अ़क़्ल से बेगाना हो गया है और तूने बदअ़मली के बाइस

उसे अपने से दूर कर दिया है व अपने दिल के अन्दर नफ़्स को बसा लिया है क्योंकि तू उसके हर हुक्म को मानता है और अब वो नफ़्स का कुत्ता अपने घर में रहकर शेर बन गया है और तेरी अ़क्ल मारी मारी बे सरो सामान फिरती है जब अ़क्ल अपने असली घर में मुक़ीम हो जाये तो नफ़्स के कुत्ते पर अ़क्ल की हुकूमत हो जाती है अ़क्ल नूरानी और बेहतरीन चीज़ की तलबगार है और नफ़्स इन्सान को हमेशा बुराई की तरफ़ राग़िब करता है।

-: नफ़्स की हक़ीक़त :-

नफ़्स की कई क़िस्में है और इन सब के औसाफ़ व आअ़माल मुताफ़र्रिक़ है मौलाना जलालुद्दीन रुमी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं जब एक नफ़्स दूसरे नफ़्स की ताईद में काम करना शुरु कर देता है तो आ़म इन्सान की अ़क्ल जो उ़मूमन नाक़िस होती है वो बेकार, सुस्त और वे फ़ायदा हो जाती है चूंकि ये दोनो मिलकर कमज़ोर रुह से बहुत ज़्यादा ताक़तवर बन जाते हैं और रुह पर तारीकी छा जाती है और शैतान भी नफ़्स को अपनी पैर'वी और इत्तेबाअ़ में लाना चाहता है और नफ़्स और शैतान शुरु से ही इन्सान के सबसे बड़े दुश्मन हैं और उसे शर व गुनाह की तरफ़ राग़िब करने वाले हैं और हक़ीक़त में नफ़्स और शैतान एक ही तरह की दो चीज़ें हैं जिन्होंने दो मुख़्तलिफ़ सूरतों में खुद को ज़ाहिर किया है।

मौलाना जलालुद्दीन रुमी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि एक नफ़्स जब दूसरे नफ़्स का यार बना तो नाक़िस अ़क़्ल बेकार हो जाती है और नफ़्स दूसरे नफ़्स के साथ मिलकर दो गुना हो जाता है तो अंधेरा बढ़ जाता है और अ़क़्ल का रास्ता छुप जाता है और नफ़्स को रियाज़त व मुजाहदा के बग़ैर क़ाबू नहीं किया जा सकता और इस रियाज़तो मुजाहदा के दौरान नफ़्स को बहुत बड़ी तकलीफ़ो परेशानी से दो चार होना पड़ता है

नफ़्स बेवफ़ा है वो किसी से वफ़ा नहीं करता और इस दुनिया में नफ़्स व शैतान की हुक्मरानी है और यहाँ सिर्फ़ इन दोनों की बात चलती है क्योंकि जब कोई शख़्स बुराई व गुनाह या शैतानी व बेहयाई का काम करता है तो इसके शायक़ीन (मुश्ताक़, आरज़ूमंद, शौक़ीन) सब इकट्ठे होकर उसके लिये रंग व राग की महफ़िलों को सजाते हैं और अगर कोई रुहानी मजलिस का इन्इक़ाद करे तो वहाँ सिर्फ़ चन्द लोग ही पहुँचते है नफ़्स के साथ मेहरबानी व रहमत या नरमी से पेश आने वाले को नफ़्स रेज़ा रेज़ा कर देता है।

नफ़्स रुह का नूर नहीं बल्कि ये फ़िरऔ़न है इसको भूका रखो और नफ़्स में शहवत और फ़िरऔ़नियत कूट कूट कर भरी है और नफ्स में रुह जैसा नूर मौजूद नहीं होता बल्कि नफ़्स में तारीकियाँ व खुदा के लिये नाफ़रमानी व सरकशी का शर मौजूद रहता है ख़बरदार इस नफ़्स की-

आरज़ुओं को पूरा करके इसका पेट न भर बल्कि खाना कम खाओ और अपने पेटों को भूका रखो ताकि तुम अल्लाह तअ़ाला के नूर को देख सको और अपने नफ़्स को सब्र के ज़रिये कमज़ोर बना क्योंकि वो कमीना है और तुम कोशिश करो और अपने नफ़्स को क़त्ल कर दो।

नफ़्स ने लोगों को गुमराह करने की बहुत सी तदाबीर इख़्तियार कर रखी है कहीं वो तस्बीह और कुरान से गुमराह करता रहता है और कभी हज व ज़कात से गुमराह करता है इसलिये जो बात या जो मशवरा तुम्हें नफ़्स की तरफ़ से मिले तो उसके बरअ़क्स अ़मल करो नफ़्स को बुराई से अगर रोका न जाये तो ये बुराई से नहीं रुकता और अगर इसकी बात को तवज्जौ से सुना जाये तो ये बुरा मशवरा ही देता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

और आप उन्हें उस शख़्स का क़िस्सा सुनादें जिसे हमने अपनी निशानियाँ दीं फिर वो उन (के इ़ल्म व नसीहत) से निकल गया और फिर शैतान उसके पीछे लग गया तो वो गुमराहों में से हो गया।
(सू०-आअ़राफ़-7/175,176)

इस आयते करीमा में से एक शख़्स का बयान है जो पहले अच्छे दर्जे पर था मगर बाद में अपने नफ़्स के कहने में आकर उसने अपना सब कुछ गंवा दिया और वो गुमराह हो गया।

-: रियाज़त व मुजाहदा :-

हज़रत सुफ़ियान सौरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि नफ़्स के इलाज से सख़्त तरीन इलाज मैंने किसी का नहीं देखा कभी वो मेरे लिये मुफ़ीद होता है और कभी नुक़सान का बाइस हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते है कि नफ़्स को सरकश जानवर से भी बढ़कर मज़बूत लगाम की हाजत होती है और मुजादहा व रियाज़त की तलवार से नफ़्स के साथ जिहाद करो।

रियाज़त की चार सूरतें हैं कम खाना, कम सोना, बा क़दरे ज़रुरत कलाम करना व लोगों की तरफ़ से मिली तकलीफ़ को बर्दाश्त करना चूँकि थोड़ा खाने से शहवत ख़त्म होगी थोड़ा सोने से इरादों में पाकीज़गी आयेगी और बाक़दरे ज़रुरत कलाम करने से आफ़ात से सलामती हासिल होगी और लोगों की तरफ़ से तकलीफ़ बर्दाश्त करने पर बुलन्द मर्तबे तक रसाई होगी और हर इन्सान के लिये जुल्म के वक़्त बुर्दबारी व तकलीफ़ के वक़्त सब्र से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है इन्सान के तीन दुश्मन हैं दुनिया व शैतान और नफ़्स लिहाज़ा दुनिया से किनारा कशी इख़्तियार करो चूंकि नफ़्स व शैतान की मुख़ालिफ़त व नफ़्स की ख़्वाहिशात को तर्क करके ही इनसे महफ़ूज़ रहा जा सकता है और जिस इन्सान पर उसका नफ़्स ग़ालिब आ

जाये तो वो नफ़्सानी ख़्वाहिशात के कुऐं में क़ैद हो जाता है और उसकी लगाम नफ़्स के हाथों में होती और वो जिस तरह चाहता है उसे लिये लिये फिरता है और उख़र‘वी नेअ़मतों का हुसूल दुनियावी नेअ़मतों के छोड़े बग़ैर हासिल नहीं होता और जो दुनिया और ख़्वाहिशाते नफ़्स से मुहब्बत करता है वो ज़िल्लत, रुसवाई और हलाकत के लिये तैयार रहे और जो शख़्स जन्नत का शौक़ रखता हो वो दुनियावी ख़्वाहिशात से दूर रहे क्योंकि उख़र‘वी ख़ैर व सआ़दतों का हुसूल नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोककर और शहवात की मुख़ालिफ़त करते हुये हासिल होता है और दुनिया की मुहब्बत से छुटकारा उसी सूरत में मुम्किन है जब दिल रब तआ़ला की माअ़रिफ़त व उसकी मुहब्बत में मशगूल हो जाये और दुनिया से उसी क़दर फ़ायदा उठाये जो उसे ज़िक्रे खुदा व आख़िरत की फ़िक्र से मानेअ़ न हो

–: नफ़्स की अक़साम :–

नफ़्स एक ही होता मगर उसकी कई अक़साम हैं और औसाफ़ के एतबार से नफ़्स के कुछ दर्जे हैं

नफ़्से अम्मारा:– इस लफ़्ज़ माअ़ना है बहुत हुक्म करने वाला नफ़्स और जब ये सेर हो जाये तो वो सरकश हो जाता है और ये हर वक़्त बुराई का हुक्म देता है जैसा कि फ़रमाया गया ‘‘बेशक नफ़्स तो बुराई का हुक्म देता है मगर जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाये’’ (सू०–युसूफ़–12/53) ये–

नफ़्स कुफ़्फ़ार, मुश्रिक़ीन, मुनाफ़िक़ीन, फ़ासिक़ीन, फ़ाजिर और दुनिया दार लोगों का होता है अगर इसकी इस्लाह न की जाये तो ये इन्सान से हैवान और हैवान से दरिन्दा बल्कि मुत्लक़ शैतान बन जाता है।

नफ्से लव्वामाः– अगर नफ़्स की इस्लाह की जाये और नेक तरबियत की जाये और जब वो अल्लाह की याद व इताअ़त में लग जाये तो अल्लाह के फ़ज़्लो करम से उसके ऐ़ब ज़ाहिर होना शुरु हो जाते हैं तो ये नफ़्स अम्मारा से लव्वामा हो जाता है यानी मलामत करने वाला यानी शर व गुनाह पर इन्सान को उसका नफ़्स मलामत करता है और शर्मसारी दिलाता है और फिर वो पशेमान होता है और खुद को बुरा भला कहता है तो ऐसे नफ़्स को नफ़्से लव्वामा कहते हैं जैसा कि ''मैं क़सम खाता हूँ मलामत करने वाले नफ़्स की'' (सू०–क़ियामाह–75/2) नफ़्से लव्वामा मोमिन का नफ़्स है जो हर वक़्त उसे अपनी कोताहियों व ग़फ़लतों पर मलामत करता रहता है अगर कोई शख़्स यादे इलाही व ज़िक्रे इलाही और इताअ़ते इलाही में कोशिश करने वाला हो जाये या कोई अच्छी सुहबत उसे हासिल हो जाये या फिर दीनी किताबों का मुताअ़ला करने लग जाये तो फिर उसका नफ़्स लव्वामा की तरफ़ माइल होने लगता है और बुराई पर मलामत करने लगता है और नेकी के तर्क होने पर भी मलामत करता है और आअ़माले हसना के फ़ौत होने पर नादिम होता है

यानी ख़ैर के तर्क और गुनाह करने पर मलामत करता है।

नफ़्से मुल्हिमाः- (यानी इल्हाम करने वाला नफ़्स) नफ़्स का जब तज़किया होता है तो वो लव्वामा से मुल्हिमा हो जाता है और ऐसा नफ़्स गुनाह के इरतिकाब से पहले ख़बरदार करता है कि अल्लाह तआ़ला से डरो व गुनाह से बाज़ आ जाओ तो ऐसे नफ़्स को नफ़्से मुल्हिमा कहते हैं ''और जो शख़्स अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरता रहा और उसने अपने नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात व शहवात से बाज़ रखा तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत है'' (सू०-नाज़िआ़त-79/40,41)

नफ़्से मुतमइन्नाः- इत्मीनान वाला नफ़्स यानी हुक्मे इलाही पर चलने वाला नफ़्स तज़कियाए नफ़्स के सबब इसमें तरक़्क़ी और उरुज होता है और जब तज़किया-ए-नफ़्स कामिल हो जाता है तो फिर ये नफ़्से मुतमइन्ना हो जाता है और नफ़्से लव्वामा की मुसलसल मलामत से बन्दा आअ़माले हसना की तरफ़ धीरे धीरे बढ़ता है और बुरे आअ़माल से किनारा कश रहता है हत्ता कि ऐसा वक़्त आ जाता है कि उसे सिर्फ़ नेकियों में ही राहत, क़रार और सुकून मिलता है जैसा कि फ़रमाया गया कि ''ऐ इत्मीनान पा जाने वाले नफ़्स तू अपने रब की तरफ़ इस हाल में लौट आ कि तू उसकी रिज़ा का तालिब भी हो और तू उसकी रिज़ा का मतलूब भी''। (सू०-फ़ज्र-89/27,28) (यानी गोया-

उसकी रिज़ा तेरी मतलूब हो व तेरी रिज़ा उसकी मतलूब हो) नफ़्स जब रब तआ़ला के साथ सुकून हासिल करे और उसके ज़िक्र के साथ मानूस हो और उसकी तरफ़ राजेअ़ हो व उसकी मुलाक़ात का मुश्ताक़ हो और वो अल्लाह तआ़ला के कुर्ब से उन्स हासिल करे तो वो नफ़्से मुतमइन्ना है और ऐसे शख़्स का क़ल्ब नूर से रौशन होता है और उसकी सब मज़मूम सिफ़ात ख़त्म हो जातीं और वो अख़लाक़े हमीदा से आरास्ता हो जाता है

ऐसा पाकीज़ा नफ़्स अम्बिया किराम व औलिया किराम का होता है नफ़्स की ये बातिनी शख़्सियत बहुत ही अरफ़ाअ़ व आअ़ला होती है नफ्से मुतमइन्ना का हामिल शख़्स दिन रात ख़ौफ़े खुदा में रोने वाला और रब तआ़ला की ममनूअ़ बातों से परहेज़ करने वाला, नेकी फैलाने वाला व हलाल कमाई खाने वाला, कामिल इताअ़त गुज़ार, ईमान की सलामती वाला, तौफ़ीक़े इलाही से मदद किया हुआ, जुह्दो तक़्वा व इ़बादत गुज़ार और हर ऐ़बो नक़्स से पाक, माअ़रिफ़ते इलाही व कुर्बे इलाही का हामिल व रहम करने वाला व उ़म्दाह अख़लाक़ वाला होता है अह्ले नफ़्से मुतमइन्ना हक़्कुल यक़ीन के मरतबे पर फ़ाइज़ होता है वो कभी बातिल की तरफ़ मुतवज्जै नहीं होता अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत से मुस्तग़रक रहने वाला और सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न रहने वाला होता है।

नफ़्से राज़िया– ये वो नफ़्स है जो तमाम हालात

में अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात से राज़ी रहता है

नफ़्से मरजिय्याः- ये वो नफ़्स है जिसे मक़ामे रज़ा पर फ़ाइज़ होने की वजह से रिज़वाने इलाही से- नवाज़ दिया जाता है।

नफ़्से कामिलाः- ये गुज़िश्ता तमाम मरातिब का इंतिहाई आअ़ला तरीन रुतबा है जैसा कि फ़रमाया गया ‘‘जिसके हुसूल में शायक़ीन को जल्द कोशिश करके सबक़त लेनी चाहिये। (सू०-मुताफ़िफ़्फ़ीन-83/26)

-: नफ़्स के मज़ीद मदारिज :-

नफ़्से दस्सास :- ये नफ़्स उल्टे अख़लाक़ में रंग बदलता रहता है और इसकी गिज़ा गुनाहों से लज़्ज़त हासिल करना है और इसकी हालतों और शक्लों की पहचान निहायत ही मुश्किल है और ये इन्सान को वहम व ख़्याल में ग़र्क़ रखता है जैसा कि फ़रमाया गया ‘‘और बेशक वो शख़्स नामुराद हो गया जिसने इसे (गुनाहों में) मुलव्विस कर लिया (व नेकी को दबा दिया) (सू०-शम्स-91/10) इस आयत में इसी तरफ इशारा है।

नफ़्से मुश्तराः- ये महबूब के हाथ पर फ़रोख़्त शुदा नफ़्स है ये नफ़्स बशरी मिल्कियत व उसके तसर्रुफ़ से निकल कर सरमदी दायमी मिल्कियत में चला जाता है ये वो नफ़्स है कि जिसने जिहाद

किया तो ग़नीमत पाई या शहादत पाई और उसने अपने ज़ुहद से अपने शैतान साथी को हलाक कर दिया और अपने पर'वरदिगार के अ़हद को कुबूल किया फ़रमाया गया ''बेशक अल्लाह ने अह्ले ईमान की जानें और उनके माल जन्नत के ऐवज़ ख़रीद लिये। (सू०-तौबा-9/111)

नफ़्से सव्वालः-ये बुराई को मुज़य्यन करके इन्सान को तबाह करने वाला है ये फ़ज़ाइल व इ़बादत के लिबास में आकर गुमराह करता है ये नफ़्स शहद में ज़हर घोलकर पिलाता है और अ़ाबिदीन और ज़ाहिदीन को अ़जीब रियाकारी के जाल में फंसाये रखता है इसका इलाज ये है कि इस नफ़्स को इसकी ताअ़ज़ीम करने वालों के सामने रुसवा व ज़लील किया जाये यहाँ तक कि ये तवाज़ोअ़ व अ़ाजिज़ी के साथ हक़ को कुबूल करे हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने सामरी से सुवाल किया ''तो वो कहने लगा और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे ये बात भली करके दिखाई''। (सू०-ताहा-20/26)

नफ़्से ज़ाकियाः- ये उस शख़्स का नफ़्स है जिसने अपने नफ़्स का मुकम्मल तज़किया कर लिया हो तो उसकी हक़ीक़त का आफ़ताब हर वक़्त रौशन रहता है और हमेशा ख़ैर के रास्ते पर चलता है और ये अपने रब के यहाँ सुकून पाता व दुन्यावी लज़्ज़ते इसके सामने हक़ीर होती हैं फ़रमाया गया 'बेशक वो शख़्स फ़लाह पा गया जिसने इस नफ़्स को पाक कर लिया'। (सू०-शम्श-91/9) इस नफ़्स

वाले शख़्स के दिल को इल्हाम की नेअ़मते उ़ज़्मा से नवाज़ा जाता है।

नफ़्से ज़ाकिरा– ये नफ़्स ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहता है फ़रमाया गया ''और अपने रब का अपने दिल में ज़िक्र किया करो आ़जिज़ी व ख़ौफ़ से''। (सू०–आअ़राफ़–7/205) इस आयत में इसी तरफ़ इशारा है कि कभी ये नारे ख़ौफ़ की हरारत को महसूस करता है और कभी उम्मीद में राहत के मज़े लेता है।

नफ़्से मम्लूकः– नफ़्स की ये क़िस्म अपनी अस्ल वज़अ़ में कुदरत की तरफ़ से मम्लूक (मक़बूज़ा) होती है यानी वो चीज़ जिस पर क़ब्जा किया जाये या गुलाम और ये आ़लमे समाअ़त में पर'वरिश पाता है इसे नफ़्से इ़ल्मिया यानी सीखा सिखाया नफ़्स भी कहा जाता है और ये नफ़्स तल्क़ीन व इल्हाम के जलवों में पर'वरिश पाता है और ये तल्क़ीन व इल्हाम अल्लाह तआ़ला की तरफ़ होता है फिर जब ये अपने शबाब पर आता है तो इसके हामिल को वस्ल (मुलाक़ात) के हिज़ाब के पीछे से निदा की जाती है व उसे सिद्क़ व कैफ़ की पोशाक पहनाई जाती है व उससे कहा जाता है बेशक मैंने तुझे अपने लिये चुन लिया है और जो मैं तुझे अ़ता करूँगा उसे मज़बूती से पकड़ो और उस नफ़्स को वो मर्तबा और मक़ाम अ़ता किया जाता है जिसे कोई कोशिश या अ़मल से हासिल नहीं कर सकता इस आयत में इसी तरफ़ इशारा

है ''ऐ मेरे रब मैं अपनी ज़ात के सिवा किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखता (सू०–मायदा–5/25) और वो हर रात कुर्बे इलाही में तरक्की करता है और उसके तमाम अहवाल कुर्ब पर मबनी होते हैं व अ़ाजिज़ी व तवाज़ोअ़ उसका सरमाया होता है।

नफ़्से इल्मिया:– ये नफ़्स कमालात का मरकज़ व तफ़्सील की किताब का अ़र्श पर जलवा फ़िगन व मअ़ानी लाहूतिया का सहीफ़ा व कलिमाते नासूतिया का मम्बा है इस नफ़्स पर नूरे वहदत के परदे हैं ताकि अग़यार की आंखे उस तक रसाई हासिल न कर सकें और ऐसा नफ़्से मुबारक रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का था जब हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का बचपन में शक़े सदर किया गया तो उस वक़्त मलायका ने कहा था कि आपकी जुबान सादिक़ व आपका नफ़्स मुतमइन्ना है तो जिस हस्ती का नफ़्से मुबारक उस वक़्त भी मक़ामे मुतमइन्ना पर फ़ाइज़ था तो बाअ़द में उस नफ़्स ने किस क़दर तरक़्क़ी फ़रमाई होगी और यही वो नफ़्स जिसे कुरान ने दूसरों के नुफूस का तज़किया करने वाला बताया।

➡ हज़रत इब्ने ग़न्म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि जब जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का सीना चाक किया तो जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा इसमें बुलन्द व मज़बूत दिल है और इसमें दो सुनने वाले कान है और दो देखने वाली आंखें

है और ये आख़िरी रसूल हैं और सबको इकट्ठा करने वाले हैं और आपका अख़लाक़ सबसे अच्छा है और आपकी ज़बान सच्ची है व आपका नफ़्स मुतमइन्ना है। (दारमी–सुनन–1/102-ह०–54)

वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक (बा अ़ज़मत) रसूल भेजा जो कि उन पर इसकी आयतें पढ़कर सुनाते हैं और उन (के ज़ाहिर व बातिन) को पाक करते हैं। (सू०–जुमअ़ा–62/2)

–: रुह की ताअ़रीफ़ :–

कुरान मजीद में लफ़्ज़े रुह का इत्लाक़ छः चीज़ों पर किया गया 1- कुरान 2- वही 3- अम्रे इलाही 4- हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) 5- और हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) 6- नफ़्ख़ (फूंकना) 1- सो इसी तरह हमने आपकी तरफ़ अपने हुक्म से रुह की वही की। (सू०–शूरा–42/52) 2- वो ही फ़रिश्तों को वही देकर अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिसे चाहता है नाज़िल फ़रमाता है। (सू०–नहल–16/2) 3- उन्हें बताइये ये रुह मेरे रब के हुक्म से है। (सू०–इसरा–17/85) 4- जिसे उसने मरयम की तरफ़ पहुँचा दिया और उसकी तरफ़ से एक रुह है। (सू०–निसा–4/171) 5- इसे रुहुल अमीन लेकर उतरे हैं। (सू०–शुअ़रा–26/193) 6- फिर मैं उसमें फूंक मारता हूँ। (सू०–इमरान–3/49) मैं जब रुह फूंकूँ तो तुम सब सज्दे में गिर जाना। (सू०–हिज्र–15/29) उसके अन्दर अपनी रुह फूँकी सू०–अम्बिया–21/91 तीनों आयतों में यही मुराद है

नफ़्स बुराई और गुनाहों की तरफ़ माइल करता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

बेशक नफ़्स तो बुराई का बहुत ज़्यादा हुक्म देने वाला है सिवाये उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाये। (सू०-युसूफ़-12/53)

नफ़्स इन्सान को बुराई और बेहयाई और दीगर गुनाहों का हुक्म देता है और नफ़्से इन्सानी शैतान की सवारी और इन्सान को बुराई व गुनाहों की तरफ़ माइल करने का ज़रिया है शैतान नफ़्स के रास्ते से इन्सान में दाख़िल होता है और नफ़्स दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत और लज़्ज़ात व शहवात की तरफ़ ज़्यादा दिलचस्पी और तवज्जो रखता है और दुनिया की पुरकशिश चीज़ें इन्सान को अपनी तरफ खींचती हैं और बहुत कम लोग ऐसे हैं जो दुनियावी लज़्ज़तों को छोड़कर उख़र'वी लज़्ज़तों की तरफ़ राग़िब होते हैं और वो नुफ़ूस जो अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात में मुस्तग़रक़ रहते हैं और उसकी सिफ़ात का मुताअ़ला करते व उनकी तबीअ़त शरीअ़त के सांचे में ढ़ली हुई होती है और उन पर दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत और पुर कशिश चीज़ें उन पर अपना असर नहीं डाल पातीं क्योंकि उन पर अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त व उसके ख़ौफ़ का ग़लबा होता है नफ़्स इन्सान को हर वक़्त नये नये फ़ित्नो की तरफ़ माइल करता है और लज़ीज़ ग़िज़ा खाने को मांगता है ये नफ़्स ऐसा ज़ालिम है

कि अल्लाह तआ़ला ही इसके शर से बचा सकता है हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं शहवत परस्त इन्सान का नफ़्स मरीज़ और दिल बीमार होता है व जिस शख़्स पर शहवत ग़ालिब हो जाये तो वो शख़्स जानवरों की सफ़ में शामिल है इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि शहवते नफ़्स को कुव्वत व ज़ोर पकड़ने से पहले दबा दें क्योंकि अगर वो तुझ पर ग़ालिब आ गई तो वो तुझे शर व बुराई की तरफ़ खींच ले जायेगी और फिर तू उसका मुक़ाबला नहीं कर सकेगा।

और बेशक बड़ा सआ़दत मंद है वो शख़्स जो खुद का मुहासिबा करता रहे और उसका नफ़्स उससे इताअ़ते इलाही का तक़ाज़ा करता रहे और रिज़ाये इलाही व क़नाअ़त और दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करना सआ़दत मंदी है और वो शख़्स जो बाक़ी रहने वाली लज़्ज़त की ख़ातिर फ़ानी लज़्ज़त को छोड़ दे और तक़वा इख़्तियार करे और अपने नफ़्स को क़ाबू में रखे वही कामयाब व अ़क्लमंद है

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़क्ल मंद वो होता है जो अपने नफ़्स का मुहासिबा करता है और मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करता है और आ़जिज़ वो होता है जिसका नफ़्स अपनी ख़्वाहिशात के ताबेअ़ होता है फिर भी वो अल्लाह तआ़ला पर उम्मीद क़ायम करता है। (इब्ने माजा–सुनन–3/389-ह०–4260) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/310-ह०–10545)

नफ़्स हर बुराई का सर चश्मा है और इन्सान की आज़माइश नफ़्स का मुक़ाबला करने पर मौकूफ़ है और जो नफ़्स की बुराई से बच गया वो फ़लाह पा गया अगर कोई इन्सान बुरे कामों में मुब्तिला हो तो उसके बुरे असरात उसके दिल पर मुरत्तब होते रहते हैं जिसके सबब रुह कमज़ोर हो जाती है और जब गुनाहों की ताअ़दाद बढ़ती है तो रुह उस मर्ज़ में गिरफ़्तार हो जाती है जिसको हम रुहानी बीमारी कहते हैं रुह और बदन एक दूसरे के बरअ़क्स होते हैं जिन कामों के करने से बदन कमज़ोर होता है तो रुह ताक़तवर हो जाती है रुह की ताक़त नेक कामों से होती है और बुरे कामों से रुह कमज़ोर व बदन ताक़त वर होता है

मसलन रोज़ा रखने से बदन कमज़ोर होता है तो रुह को ताक़त मिलती है ज़्यादा खाने से बदन ताक़तवर हो जाता है और रुह कमज़ोर हो जाती है नफ़्स को रियाज़ात व मुजाहदात से क़ाबू किया जा सकता है और जब आदमी नफ़्स की हर बात मानता रहता है तो नफ़्स को उन बातों की आदत हो जाती है नफ़्स हमारा सबसे बड़ा व छुपा हुआ दुश्मन है दुश्मन के मशवरे पर क़तई अ़मल नहीं करना चाहिये बल्कि इसके ख़िलाफ़ अ़मल करना चाहिये और हमेशा अच्छे व नेक लोगों की सुहवत इख़्तियार करना चाहिये और बुरे लोगों की सुहवत तमाम बुराइयों व गुनाहों की जड़ है और बुराई को दिल के दर‘वाज़े पर ही रोको अगर वो दिल में दाख़िल हो गई तो निकालना बहुत मुश्किल होगा।

ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर‘वी करने वालों की मज़म्मत

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ महबूब) और आप उन्हें उस शख़्स का हाल सुनादें जिसे हमने अपनी आयात इ़नायत की थीं लेकिन वो उन (के इ़ल्म व नसीहत) से निकल गया और शैतान उसके पीछे लग गया तो वो गुमराहों में से हो गया और अगर हम चाहते तो उसे इन (आयतों के इ़ल्म व अ़मल) के ज़रिये से सर बुलन्द करते मगर वो दुनिया की तरफ़ माइल (व राग़िब) हो गया और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैर‘वी करने लगा सो उसकी हालत कुत्ते जैसी है अगर तुम उसको धुतकारो जब भी वो ज़बान निकाले रहता है या तुम उसे छोड़ दो (तब भी) ज़बान निकाले रहता है ये ऐसे लोगों की मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया सो आप ये वाक़्यात (लोगों से) बयान करें ताकि वो ग़ौरो फ़िक्र करें। (सू०-आअ़राफ़-7/175,176)

मज़कूरा आयात में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को जिस शख़्स का क़िस्सा बयान करने का हुक्म फ़रमाया है कुरान व अहादीस में उसके नाम की तसरीह नहीं है मुफ़स्सिरीने किराम के इसके मुताअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़बाल हैं और मुख़्तलिफ़ नामों का ज़िक्र है उनमें से एक नाम बुलअ़म है वो एक बहुत बड़ा आ़लिम था और वो

जो भी दुआ़ करता था वो कुबूल हो जाती थी और ये शख़्स फ़ज़्ल व कमाल के आअ़ला मन्सब पर फ़ाइज़ था और गुज़िश्ता किताबों का आ़लिम था अल्लाह तआ़ला का इस्मे आज़म इसे माअ़लूम था और ये अपनी जगह पर बैठे बैठे अ़र्श को देख लेता था और ये बुलन्द तरीन मर्तबा और आअ़ला तरीन दरजात पर फ़ाइज़ था।

फ़ज़्ल व कमाल का इतना बड़ा मर्तबा पाने वाला शख़्स जब नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने लगा और दुनिया के माल व असबाब और उसकी नेअ़मतों की तरफ़ राग़िब हो गया और दुनिया और उसकी लज़्ज़तों को आख़िरत और उसकी नेअ़मतों पर तरजीह देने लगा तो अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ उसे अ़ता किया था सब छीन लिया और उसका ईमान बर्बाद हो गया इस वाक़्ये में हम मुसलमानों के लिये इ़बरत है कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने वाले और दुनिया का माल और उसकी नेअ़मतों से मुहब्बत व रग़बत रखने वाले लोगों की मिसाल कुत्तों जैसी है।

हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के ज़माने में ये आ़लमे दीन जब्बारैन की बस्ती में रहता था जो मुल्के शाम में वाक़ेअ़ थी जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने जब्बारैन से जंग करने का इरादा किया तो उस आ़लिम की क़ौम उसके पास आयी और फिर उससे कहा कि हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बहुत बड़ा लश्कर है जो

हमें हमारे शहरों से निकाल देगा और वो बनी इसराईल को इस सर ज़मीन पर आबाद कर देगा और तुम्हारे पास इस्मे आज़म है और तुम ऐसे शख़्स हो कि तुम्हारी हर दुअ़ा कुबूल होती है तुम अल्लाह तअ़ाला से दुअ़ा करो कि वो हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और उनके लश्कर को यहाँ से भगा दे क़ौम की बात सुनकर उसने मनाअ़ कर दिया लेकिन क़ौम ने जब ज़्यादा इसरार किया व हदिये व नज़राने दिये तो उस पर माल व मताअ़ की मुहब्बत व रग़बत व ख़्वाहिशे नफ़्स उस पर ग़ालिब आ गई और वो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के लिये बद्दुअ़ा करने के लिये पहाड़ पर चड़ गया।

फिर जब वो बद्दुअ़ा करने लगा तो अल्लाह तअ़ाला ने उसकी ज़बान को उस क़ौम की तरफ़ फेर दिया और वो अपनी क़ौम के लिये जो दुअ़ाऐ ख़ैर करता तो बजाये उस क़ौम के बनी ईसराईल का नाम उसकी ज़बान पर आता था ये देखकर उसकी क़ौम ने कहा कि तू ये क्या कर रहा है तू बनी ईसराईल के लिये दुअ़ा और हमारे लिये बद् दुअ़ा क्यों कर रहा है उसने कहा कि मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े व मेरे इख़्तियार में नहीं है रब तअ़ाला की कुदरत मुझ पर ग़ालिब आ गई है और मेरी दुनिया व आख़िरत दोनों बर्बाद हो गई हैं फिर उसकी ज़बान निकलकर उसके सीने पर लटक गई और उससे उसका इ़ल्म व इस्मे आज़म व उसका आअ़ला तरीन दरजा और बुलन्द तरीन मर्तबा सब कुछ उससे छीन लिया गया।

इस वाक़्ये से हमें नसीहत व इबरत हासिल करना चाहिये कि दुनिया की फ़ानी चीज़ों की रग़बत व हिर्सो लालच इन्सान की दुनिया व आख़िरत दोनों तबाह व बर्बाद कर देती हैं इसलिये हमें चााहिये कि दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को अपने दिल से कुल्ली तौर पर बाहर निकाल दें और इस दिल में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह व रसूल और अल्लाह तआ़ला के मक़बूल व मख़्सूस बन्दो की मुहब्बत से दिल को मुज़य्यन करें और ताअ़त व कसरते आअ़माल में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करें और माल दुनिया के लिये जमाअ़ न करें बल्कि आख़िरत के लिये जमाअ़ करें यानी माल के हुकूक़ अदा करें उसकी पूरी ज़कात अदा करें और राहे खुदा में सद्क़ा व ख़ैरात करें और जो उसके मुस्तहिक़ व अह्ल हों उन पर भी ख़र्च करें ताकि तेरा माल पाक और आख़िरत के लिये जमाअ़ हो जाये जो तेरे मरने के बाद तेरे काम आयेगा और तू उससे नफ़ा उठायेगा अ़ज़ाबे क़ब्र व अ़ज़ाबे क़यामत में तेरा माल व तेरे नेक आअ़माल तेरे लिये ढाल होंगे जो तुझे अल्लाह तआ़ला के शदीद अ़ज़ाब से बचायेंगे और तुझे जन्नत तक ले जायेंगे याद रहे कि माल व जाह की हिर्स दीन के लिये इन्तिहाई नुक़सान देह हैं।

➡हज़रत काअ़ब बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो भूके भेड़िये बकरियों के रेबड़ में छोड़ दिये जाये तो वो उसको

इतना बर्बाद न करेंगे जितना कि माल इन्सान के दीन को बर्बाद करता है माल व जाह की हिर्स की वजह से। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/216-ह०–2376)

➡हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया ऐ हकीम दुनिया का माल शींरी (मीठा) व हरा भरा तरो ताज़ा है जो इसे नेक नीयत से ले तो उस माल में उसे बरकत दी जाती है और जो इसको लालच से लेगा तो उस माल में बरकत नहीं दी जाती है और वो उस शख़्स की तरह हो जाता है जो खाये मगर शिकम सेर न हो और याद रखो ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। (बुख़ारी–सहीह–6/56-ह०–6441)

जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला इ़ल्मे दीन की लज़्ज़त से सरफ़राज़ फ़रमाये फिर वो दुनिया के माल व मताअ़ और जाह व मन्सब की तरफ़ माइल हो और दीन के ज़रिये दुनिया को हासिल करना उसका मक़सद बन जाये और वो दीन की बजाए दुनिया के माल और उसकी नेअ़मतों की तरफ़ राग़िब हो और ख़्वाहिशाते नफ़्स के पीछे लग जाये और वो अल्लाह व रसूल की इताअ़त को छोड़ दे तो ऐसा आ़लिम कुत्ते की मानिन्द है और जो अपने इ़ल्म पर अ़मल नहीं करते तो अल्लाह तआ़ला उन पर शैतान मुसल्लत कर देता है और ये आयात उन तमाम लोगों के लिये आ़म

है जिनको हिदायत दी गई और उन्होंने हिदायत से इअ़राज़ किया फिर उनसे हिदायत छीन ली गई

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का इ़ल्म ज़्यादा हो और उसकी दुनिया से बे रग़बती ज़्यादा न हो तो वो अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा दूर हो जाता है। (कंजुल उ़म्माल–5/431-ह०–29016) (देलमी–अल फ़िरदौस–4/254-ह०–6298)

तलबे इ़ल्म लोगों की तीन क़िस्में हैं एक वो शख़्स जो इ़ल्म को सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह के लिये तलब करता है और वो उस इ़ल्म से सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने का इरादा करता है ये कामयाब लोगों में से है दूसरा वो शख़्स जो इ़ल्म को दुनिया के माल व मताअ़ के लिये तलब करता है अगर तौबा से पहले मौत आ गई तो उसके बुरे ख़ात्मे का अंदेशा है और तीसरा वो शख़्स जिस पर शैतान का ग़लबा हो जाये और वो अपने इ़ल्म को माल की कसरत का ज़रिया बनाये और अपने माल पर तकब्बुर करे और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी करने के बावुजूद खुद को नेकोकारों में शुमार करे तो ये शख़्स हलाक होने वाले में से है मौला अ़ली फ़रमाते हैं जिस शख़्स का इ़ल्म ज़्यादा हो फिर उसके दिल में दुनिया की मुहब्बत ज़्यादा हो तो उस पर रब तआ़ला का ग़ज़ब ज़्यादा होगा।

सूफ़िया किराम में से किसी का क़ौल है तहक़ीक़ तू उसका बन्दा है जिसके हाथ में तेरी लगाम है पस अगर तेरी लगाम दुनिया के हाथ में है तो तू दुनिया का बन्दा है और अगर तेरी लगाम ख़ुदा के हाथ में है तो फिर तू ख़ुदा का बन्दा है और अगर तेरी लगाम तेरे नफ़्स के हाथ में है तो फिर तू नफ़्स का बन्दा है और तेरी लगाम ख़्वाहिश के हाथ में है तो फिर तू अपनी ख़्वाहिश का बन्दा है और अगर तेरी लगाम मख़लूक़ के हाथ में है तो फिर तू मख़लूक़ का बन्दा है इसलिये तुझे नज़र करनी चाहिये और तुझे ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि तूने अपनी लगाम किसके सुपुर्द की है।

ख़्वाहिश की इत्तिबाअ़ करना इन्सान को लज़्ज़ाते जिस्मानिया में मसरुफ़ रखता है और फिर वो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत और उसके अहकाम की इताअ़त करने से गाफ़िल हो जाता है और वो नफ़्स के मरगूबात को हासिल करने में माअ़सियत के दलदल में डूबने लगता है और इसकी वजह से वो योमे हिसाब को भूल जाता है इसलिये नफ़्स को रियाज़त व मुजाहदा के ज़रिये क़ाबू में रखना और हर वक़्त इसकी निगरानी करना निहायत ही ज़रुरी है वरना ये तुम्हें हलाक और बर्बाद करके रख देगा।

हज़रत ग़ौसुल आज़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि ऐ बदबख़्त मैं तुझको देखता हूँ तू मख़लूक़ को राज़ी करता है व ख़ालिक़ को नाराज़

तू दुनिया की इमारत बनाकर अपनी आख़िरत को बर्बाद व वीरान कर रहा है तू अ़नकरीब पकड़ा जायेगा तुझ को वही पकड़ेगा जिसकी पकड़ सबसे सख़्त और दर्दनाक है जिसकी पकड़ मुख़्तलिफ़ तरीक़ों की है फिर अगर तू ख़ालिक़ के साथ हो गया तो तू उसका बन्दा है और अगर तू मख़लूक़ का साथी हुआ तो फिर तू उसका बन्दा है और ये दुनिया एक बाज़ार है जो अ़नक़रीब बन्द हो जायेगा और अपने कुलूब को आख़िरत के साथ और अपने बातिन को अल्लाह तआ़ला के साथ मुन्सलिक कर लो और अल्लाह व रसूल के अम्र व नही के मुताबिक़ अ़मल करो और अ़नक़रीब तू दुनिया से मुफ़लिस व मोहताज होकर निकलेगा क्या तू अल्लाह तआ़ला का बन्दा है या तू अपने नफ़्स व ख़्वाहिशाते नफ़्सानी और शैतान व अपनी तबिअ़त और दिरहम व दीनार का बन्दा है।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि बेशक अ़क़्ल मंद है वो शख़्स जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को रोके और दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत से वो अपनी आंखें बन्द कर ले और बाक़ी रहने वाले घर की तैयारी में मसरुफ़ियत इख़्तियार कर ले अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल से बढ़कर कोई चीज़ तक़सीम नहीं फ़रमाई और अ़क़्ल का अच्छा साथी अदब है सबसे ज़्यादा अ़क़्लमंद वो है जो अपने ऐ़ब तो देखे मगर दूसरों के ऐ़ब देखने से अन्धा हो और दुनिया व नफ़्स को अपना दुश्मन जाने व दुनिया से अपनी उम्मीदें क़ताअ़ करदे और जो

शख़्स लोगों के ऐ़ब तलाशने में लगा रहता है तो अल्लाह तआ़ाला उसके ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमां देता है और तअ़ाज्जुब है उस शख़्स की हालत पर जो लोगों के ऐ़बो को बुरा समझता है और खुद अपने ऐ़बो पर नज़र तक नहीं डालता और ऐसा शख़्स बहुत बुरा है जो लोगों के ऐ़बो का मुतलाशी हो और अपने ऐ़बो से अन्धा हो और जो शख़्स अपने ऐ़बो को देखता है तो उसकी नज़र में दूसरों के ऐ़ब छोटे नज़र आते हैं।

बेशक तमाम बन्दों में अल्लाह तआ़ाला के नज़दीक सबसे अफ़ज़ल और बेहतरीन शख़्स वो है जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को दबाया और अपने नफ़्स की ना फ़रमानी की और जो शख़्स नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे पड़ता है वो हलाक व ज़लील होता है नफ़्सानी ख़्वाहिशात इन्सान की सबसे बड़ी दुश्मन है और जो शख़्स नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर सवार होता है उसकी अ़क़्ल ज़ाइल हो जाती है और वो खुद को हलाकत के गढ़े में डालता है ख़्वाहिशे नफ़्स की पैर‘वी करना शैतान की मदद करना है और ऐसा शख़्स दोज़ख़ के किनारे पर खड़ा होता है और तअ़ाज्जुब है उस शख़्स की हालत पर जो लज़्ज़ते नफ़्सानी के बुरे अंजाम को जानता है फिर भी वो उससे बाज़ नहीं रहता है और जो शख़्स नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अपने ऊपर मुसल्लत कर लेता है वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है और अपनी आख़िरत तबाह व बर्बाद कर लेता है

नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने वाले यक़ीनन गुमराह हैं

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को अपना माअ़बूद बना लिया तो क्या आप उस पर निगेहबान हैं क्या आप ये ख़्याल करते हैं कि उनमें से अक्सर लोग सुनते या समझते हैं (नहीं बल्कि) वो तो चौपायों की मानिन्द है बल्कि उनसे भी बद तर गुमराह हैं। (सू०-फुरक़ान-25/43,44)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को माअ़बूद बना रखा है और अल्लाह ने उसे इल्म के बावजूद गुमराह ठहरा दिया है और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया फिर उसे अल्लाह के बाद कौन हिदायत कर सकता है सो क्या तुम नसीहत कुबूल नहीं करते हो। (सू०-जासिया-45/23)

नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने वाला भी एक क़िस्म के शिर्क में मुब्तिला होता है और इस फ़ानी दुनिया की किसी भी शैः से इश्क़ कर लेना भी शिर्क है और नफ़्स की इताअ़त तमाम गुनाहों व आफ़तों की जड़ और बुनियाद है नफ़्स

की ख़बासत व जहालत का आ़लम ये है कि जब ये किसी गुनाह का क़सद करे या शहवत पर उठ खड़ा हो तो अल्लाह व रसूल या कुरान का वास्ता पेश करो या क़ब्र क़यामत व दोज़ख़ का निहायत शदीद अ़ज़ाब उसके सामने पेश करो मगर फिर भी ये गुनाह करने से नहीं रुकता

हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं किसी जानवर को इतनी सख़्त लगाम की ज़रुरत नहीं होती कि जितनी नफ़्स को होती है और ये नफ़्स दिल पर ग़ालिब रहता है और दिल को अपना क़ैदी बनाये रखता है नफ़्स एक महबूब दुश्मन है और महबूब शैः के नक़्स व ऐ़ब नज़र नहीं आते और वो उसकी मुहब्बत में अन्धा रहता है लिहाज़ा नफ़्स के उ़यूब से ना-वाक़िफ़ शख़्स हलाकत के गढ़े में गिरता चला जाता है और अगर नफ़्स का दिल पर ग़लबा हो जाये तो इन्सान मुकम्मल तौर पर नफ़्स का ज़ेरे फ़रमान हो जाता है।

इसलिये इन्सान को चाहिये कि नफ़्स को हर शर व बुराई से रोके और हर फ़िज़ूल चीज़ और ग़ैर ज़रुरी अशया से इज़्तिनाब करे और दुनिया व मताये दुनिया की मुहब्बत व रग़बत से किनारा कश हो जाये और तमाम अवामिर पर अ़मल पैरा और तमाम नवाही से इजतिनाब करे ऐसा करने से उसके जिस्म के ज़ाहिरी और बातिनी आज़ा सिफ़ते तक़वा से मौसूफ़ हो जायेंगे।

जिस्म के पांच आज़ा की निगरानी करना निहायत ज़रुरी है 1- आंख 2- कान 3- दिल 4- ज़बान 5- शिकम और जब इन आज़ा की हिफ़ाज़त हो जाये तो उम्मीद है बाक़ी आज़ा भी महफ़ूज़ हो जायेंगे क्योंकि ये आज़ा हर बुराई व शर की तरफ़ माइल करने वाले और गुनाहों की तरफ़ राग़िब करने वाले हैं।

जैसे आंख हर फ़ित्ने की जड़ और बुनियाद व हर आफ़त का सबब है नज़र को नीची रखना दिल को बहुत ज़्यादा पाक करता है ये ताअ़त व ख़ैर में इज़ाफ़े व दुनिया से बे रग़बती का बाइस है और आँख को नज़रे हराम से रोकना शहबात से बचने का बेहतरीन तरीक़ा है अगर तुम अपनी आँख को खुला छोड़ दोगे तो वो दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत में तुम्हें मुब्तिला कर देगी और तुम्हारी रग़बत व मुहब्बत में इज़ाफ़ा करती चली जायेगी और तुम दुनिया की मुहब्बत में अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाओगे फिर तुम दुनिया में वो चीज़ें भी देखोगे कि उन चीज़ों पर तुम्हारी कुदरत न होगी और उनमें से बाअ़ज़ चीज़ों पर तुम सब्र न कर सकोगे और जब तुम नज़रे नीची रखोगे और उसे बे फ़ायदा चीज़ पर नहीं डालोगे तो तुम्हारा सीना नफ़्स की ख़्वाहिशात और शैतानी वसवसों से खाली रहेगा और दिल सुकून व राहत और शर के ख़तरात से महफ़ूज़ रहेगा और तुम दुनिया के फ़ित्ने व शर से महफ़ूज़ रहोगे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ हबीब आप अह्ले ईमान मर्दों से फ़रमादें कि वो अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें ये उनके लिये बड़ी पाकीज़ा बात है बेशक अल्लाह तआ़ला उनके कामों से खूब आगाह है जो वो अन्जाम दे रहे हैं और आप अह्ले ईमान औ़रतों से फ़रमादें कि वो अपनी नज़रें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी आराइश व ज़ैबाइश को ज़ाहिर न किया करें।
(सू०-नूर-24/30,31)

इसी तरह दिल की हिफ़ाज़त और उसकी इस्लाह निहायत ज़रुरी है क्योंकि दिल का मुआ़मला बाक़ी आज़ा से ज़्यादा ख़तरनाक है और इसकी इस्लाह निहायत मुश्किल है दिल एक बादशाह की मानिन्द है जिसकी इताअ़त की जाती है और बाक़ी आज़ा रिआ़या की तरह हैं कि सब इसकी पैर'वी करते हैं

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है अगर वो दुरस्त हो जाये तो सारा जिस्म दुरस्त हो जाता है और अगर वो ख़राब हो तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है सुन लो कि वो दिल है यानी सारे जिस्म की इस्लाह क़ल्ब की इस्लाह पर मौक़ूफ़ है।
(बुख़ारी-1/109-ह०-52) (मुस्लिम-3/337-ह०-4094)

इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि इन्सान का दिल अल्लाह तआ़ला की नज़र का मक़ाम है तो फिर उस शख़्स पर तअ़ाज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का इहतिमाम करे व उसे धोये और मैल कुचैल से साफ़ सुथरा रखे ताकि मख़्लूक़ उसके चेहरे पर कोई ऐ़ब न पाये मगर वो दिल का इहतिमाम न करे जो कि रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मक़ाम है हालांकि उसे तो चाहिये था कि दिल को दुनिया की मुहब्बत और रग़बत से खाली रखता और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से दिल को मुज़य्यन और आरास्ता रखता ताकि उसके दिल में अल्लाह तआ़ला कोई ऐ़ब न पाता लेकिन अफ़सोस दिल गन्दगी व पलीदी और ग़लाज़त से लबरेज़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और अल्लाह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है और अल्लाह खूब जानने वाला बड़ा हिल्म वाला है। (सू०-अहज़ाब-33/51)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक वो सीनों की छुपी हुई बातों को खूब जानने वाला है। (सू०-अनफ़ाल-8/43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
वो ख़्यानत करने वाली बातों को जानता है और (उन बातों को भी) जो सीने (अपने अन्दर) छुपाये रखते है। (सू०-मोमिन-40/19)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे माल और सूरतों को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आअ़मालों को देखता है। (मुस्लिम–सहीह–5/42-ह०–6543)
(इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4143)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/293-ह०–10477)

इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि एक दिल वो होता है जो ख़्वाहिश से भरा हुआ और बुरी अ़ादात से आलूदा होता है और उसमें ख़बासतें होती हैं और ख़्वाहिशात के ग़लबे के सबब इन्सान की अ़क्ल मग़लूब हो जाती है और ख़्वाहिशाते नफ़्स इन्सान को अपना गुलाम बना लेती है फिर दिल शर और बुराई का मरकज़ बन जाता है और शैतान की सल्तनत उस दिल पर मुहीत व मज़बूत हो जाती है और उसके दिल से उख़्र‘वी ख़ौफ़ निकल जाता है फिर वो दुनिया व मताअ़े दुनिया के धोके में फंस जाता है और ज़्यादा माल पाने की हिर्स में मुब्तिला रहता है और दुन्यावी माल व मताअ़ से उसकी मुहब्बत व रग़बत शदीद हो जाती है और वो अपने नफ़्स का गुलाम बन जाता है फिर वो नफ़्स का ज़ेरे फ़रमान हो जाता है और वो अपनी दुनिया को आबाद करता है और अपनी आख़िरत को वीरान कर लेता है जैसा कि सू०–फुरक़ान की आयत में फ़रमाया गया नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने

वाले चौपायों की मिस्ल हैं बल्कि उससे भी बदतर हैं और ये हक़ीक़त है क्योंकि जानवर भी अपने रब की तस्बीह करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उसके फ़रमां बरदार रहते हैं और वो एहसान करने वालों को पहचानते हैं और तकलीफ़ देने वालों से घबराते हैं और नफ़अ़ देने वाली चीज़ को तलब करते हैं और नुक़सान देने वाली चीज़ से बचते हैं और चरागाहों की राहें जानते है मगर नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पैरोकार न तो अल्लाह की इताअ़त करते हैं न उसके एहसान को पहचानते हैं और शैतान जैसे बड़े दुश्मन को दुश्मन नहीं जानते हैं और न ही वो आख़िरत में मिलने वाली नेअ़मतो के तालिब हैं और न आख़िरत के शदीद अ़ज़ाब से डरते हैं और बुरे अन्जाम से बेफ़िक्र व बे पर‘वाह रहते हैं नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर‘वी करना दुनिया व आख़िरत दोंनों के लिये आफ़त व मुसीबत और हलाकत है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और ख़्वाहिश की पैर‘वी न करना वरना ये पैरवी तुम्हें अल्लाह की राह से भटका देगी बेशक जो लोग अल्लाह की राह से भटक जाते हैं तो उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब है इस वजह से कि वो योमे हिसाब को भूल गये हैं। (सू०-सॉद-38/26)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें हलाक करने

वाली हैं 1- नफ़्स की इताअ़त 2- व ख़्वाहिश की इत्तेबाअ़ 3- और तकब्बुर व खुद पसंदी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/451-ह०–745)

➡ शद्दाद बिन औस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़क़्ल मंद वो है जो अपने नफ़्स को इ़बादत में लगाये और मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करे और बेवकूफ़ वो है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर‘वी करे और रब तअ़ाला की रहमत पर तकब्बुर करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/273-ह०–2459)

अक्सर देखा गया कि इन्सान का दिल जब किसी काम का इरादा करता है तो उस वक़्त वो जानता है कि अल्लाह तअ़ाला ने इस काम को करने से मनाअ़ फ़रमाया है और वो इस काम से नाराज़ होगा लेकिन अल्लाह तअ़ाला के मनाअ़ करने के बावुजूद इन्सान वो काम कर गुज़रता है और वो अल्लाह तअ़ाला के हुक्म पर अ़मल करने के बजाए वो अपनी ख़्वाहिश पर अ़मल करता है और अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त करने की बजाए अपने नफ़्स की इताअ़त करता है और वो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इत्तेबाअ़ करने की बजाए वो ख़्वाहिशाते नफ़्स की इत्तेबाअ़ करता है अल्लाह तअ़ाला की इ़बादत करने के बजाए अपने नफ़्स की इ़बादत करता है और अल्लाह तअ़ाला की इ़बादत में उसका सर–

कम झुकता या कभी कभी झुकता है मगर अपने नफ़्स के आगे हर वक़्त सर झुकाये खड़ा रहता है

पस जो शख़्स अल्लाह तबारक व तआ़ला को छोड़कर नफ़्स की इताअ़त व इ़बादत करे और ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ करे तो उसने अपने नफ़्स को अपना माअ़बूद बना लिया है और उसने अपनी लगाम अपने नफ़्स के हाथों में दे दी है और वो अपने नफ़्स का गुलाम और बन्दा हो गया है और ये इसलिये कि दुनिया व मताये दुनिया की मुहब्बत व रग़बत उस पर इस क़दर ग़ालिब हो गई है कि वो उस में मुस्तग़रक़ हो गया है और अपनी आख़िरत और उसमें पेश आने वाले मसाइबो आलाम और आफ़ात से वो ग़ाफ़िल हो गया और माल की हिर्स की इन्तिहाई मुहब्बत व रग़बत ने उसकी अ़क़्ल को ज़ाइल कर दिया और आँखों को अन्धा कर दिया और कानों को बहरा और ज़बान को गूँगा कर दिया जिसके सबब वो हक़ को समझ नहीं सकता और न हक़ को देख सकता और न हक़ को सुन सकता है और न हक़ बोल सकता और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और उसकी याद के लिये उसके पास वक़्त नहीं क्योंकि माल व मताअ़ कमाने और ज़्यादा से ज़्यादा उसे हासिल करने के सबब उसे फ़ुर्सत ही नहीं है।

नफ़्स का तज़किया करने वाले दुनिया व आख़िरत में कामयाब होते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक फ़लाह पा गया (यानी कामयाब हो गया) वो शख़्स जिसने इस नफ़्स को पाक कर लिया और बेशक वो शख़्स नामुराद हो गया जिसने इसे गुनाहों में मुलव्विस कर लिया।
(सू०–शम्स–91/9,10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक वही बा मुराद हुआ जो (नफ़्स की आफ़तों और गुनाहों की आलूदगियों से) पाक हो गया और वो अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रहा (और कसरत व पाबन्दी से) नमाज़ पढ़ता रहा।
(सू०–आअ़ला–87/14)

जिस शख़्स ने रियाज़त व मुजाहदा के ज़रिये अपने नफ़्स को शर व बुराई से पाक कर लिया और ऊ़यूब से साफ़ किया और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त के ज़रिये से उसको तरक़्क़ी दी व अ़मल सालेह के ज़रिये बुलन्द किया तो उस शख़्स ने दुनिया व आखिरत में सआ़दत व कामयाबी और कामरानी हासिल कर ली और जो शख़्स नफ़्स की आफ़तों से बच न सका और अपने नफ़्स को शर व गुनाहों से आलूदा रखा तो वो शख़्स ना मुराद और हलाक हो गया और

जो शख़्स नफ़्स की आफ़तों व ख़तरात से बचना चाहता हो और दुनिया व आख़िरत में कामयाबी का तालिब हो तो उसे चाहिये कि वो अपने नफ़्स को क़ाबू मे रखने की हत्तल इमकान कोशिश करे और अल्लाह तआ़ला से डरता रहे और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त पर गामज़न रहे तो उसे हक़ीक़ी कामयाबी हासिल हो जायेगी।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जो शख़्स अल्लाह व उसके रसूल की इताअ़त करता है और अल्लाह से डरता है और उसका तक़्वा इख़्तियार करता है पस ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले कामयाब हैं। (सू०–नूर–24/52)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इताअ़त करता है तो बेशक वो बड़ी कामयाबी से सरफ़राज़ हुआ। (सू०–अहज़ाब–33/71)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इन्सान को ख़ैर और शर के दोंनों रास्ते दिखा दिये और उसको ये इख़्तियार दिया कि वो ख़ैर और शर में जिस रास्ते को चाहे पसंद करे और अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अ़क़्ल अ़ता फ़रमाई जिससे वो बुरी चीज़ की बुराई और अच्छी चीज़ की अच्छाई को पहचान लेता है मगर बाअ़ज़ चीज़ों की पहचान उसमें ग़ौरो फ़िक्र करने व दीनी ताअ़लीम व इ़ल्मे शरीअ़त व इ़ल्मे नाफ़ेअ़ से ही मुम्किन है इसलिये

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया इ़ल्म का सीखना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है। (इब्ने माजा–1/109-ह०–224)

जब इन्सान अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये गुनाहों से बचता और नेक कामों के लिये जद्दो जह्द करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल में तक़्वे का इल्हाम कर देता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोग हमारे रास्ते पर चलने के लिये जद्दो जह्द करते हैं तो हम उन्हें अपने रास्तों पर चला देते हैं और बेशक अल्लाह साहिबाने एहसान को अपनी माअ़इयत से नवाज़ता है।
(सू०–अ़नक़बूत–29/69)

इन्सान के दिल में अचानक जिन कामों की सूरतें आती हैं अगर वो गुनाह और बुराई की तरफ़ राग़िब करें तो वो वसवसा है और अगर वो अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व इ़बादत की तरफ़ राग़िब करें तो वो इल्हाम होता है और वसवसा दो तरह का होता है एक वसवसा इख़्तियारी और दूसरा वसवसा ग़ैर इख़्तियारी, वसवसा इख़्तियारी वो है कि इन्सान के दिल में किसी नाजाइज़ काम की सूरत में आये और वो उसको अपने दिल में जमा ले और उसके मुवाफ़िक़ अ़मल करने की कोशिश करे और उस काम के तसव्वुर से लज़्ज़त हासिल करे और वसवसा ग़ैर इख़्तियारी ये है कि

इन्सान के दिल में आये और इन्सान उसका क़सद व इरादा न करे और वो उस पर अ़मल न करे और न ज़बान से ज़ाहिर करे बल्कि उसे दिफ़ाअ़ करने की वो हत्तल इमकान कोशिश करे तो ऐसा वसवसा ग़ैर इख़्तियारी है जो कि मुआ़फ़ है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला ने मेरे उम्मत से वसवसे और ख़्यालों को जो दिल में आयें और उनके दिलों में आने वाली की बातों से दर गुज़र फ़रमाया है जब तक कि वो उन पर अ़मल न करें या उन्हें जुबान पर न लायें।
(बुख़ारी–सहीह–6/158-ह०–6664)
(मुस्लिम–सहीह–1/223-ह०–331)
(अबू दाऊद–सुनन–1/688-ह०–2209)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/653-ह०–1183)
(इब्ने माजा–सुनन–2/93-ह०–2040)

➡ हज़रत नव्वास बिन सिमआ़न (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से नेकी व गुनाह के बारे में सुवाल किया तो आपने फ़रमाया कि नेकी अच्छा खुल्क़ है और गुनाह वो है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम ना पसंद करो कि लोगों को इसका पता चले।
(मुस्लिम–सहीह–5/33-ह०–6516)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/225-ह०–2389)

नफ़्सानी ख़्वाहिशात को क़ाबू में रखने वालों का ठिकाना जन्नत है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो शख़्स अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरता रहा और उसने अपने नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात व शहवात से बाज़ रखा तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत है।
(सू०–नाज़िआ़त–79/40,41)

जिस दिन जहन्नुम ज़ाहिर कर दी जायेगी और तमाम मख़्लूक़ उसे देखेगी तो वो शख़्स जिसने सरकशी की और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी में हद से गुज़रा और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर‘वी की और दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह दी तो बेशक जहन्नम ही उसका ठिकाना होगा और जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा और उसने जाना कि रोज़े क़यामत अपने रब के सामने हिसाब के लिये हाज़िर होना है और ताअ़ात व इ़बादात में ज़िन्दगी सर्फ़ की और अपने नफ़्स का तज़किया किया और नफ़्स को हराम चीज़ों की ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही उसका ठिकाना है।

जिस शख़्स के दिल में ख़ौफ़े आख़िरत व ख़ौफ़े इलाही हो वो हर हाल में अपने रब से डरता है तो ऐसे शख़्स के लिये अपनी लज़्ज़ात व शहवात

के तक़ाज़े तर्क करना और आख़िरत के लिये नेक अ़मल करना आसान हो जाता है और जो लोग आख़िरत के ख़ौफ़ से गुनाहों को तर्क कर देते है उनकी दो क़िस्में है एक क़िस्म उन लोगों की है जो हमेशा अपने नफ़्स को अपने क़ाबू में रखते और कभी भी शहवत से मग़लूब होकर गुनाह की वादी में नहीं उतरते और बाअ़ज़ लोग वो हैं जो अपने नफ़्स को आख़िरत का अ़ज़ाब याद दिलाते हैं और वो आख़िरत के अज्रो सवाब का मुशाहदा कर लेते हैं फिर वो आख़िरत की लज़्ज़तों को दुनिया की लज़्ज़तों पर तरजीह देते हैं क्योंकि वो दुनिया से निहायत ज़्यादा लज़ीज़ और दायमी हैं तो फिर उन पर आख़िरत के लिये अ़मल करना आसान हो जाता है।

सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स के नफ़्स में शहवत की आग है आख़िरत में उसके लिये उ़क़ूबत की आग होगी और जो आज अपनी शहवत की आग में जला क़यामत में वो उ़क़ूबत (दुख व तकलीफ़ देने वाली) आग में जलेगा और जो आज अपनी शहवत की आग को रियाज़त व मुजाहदा से ठण्डा करता है तो वो आख़िरत की आतिशे उ़क़ूबत से बच जायेगा इसी तरह से हर मोमिन के दिल में बहिश्त है जिसे जन्नते इरफ़ान कहा जाता है और आख़िरत की बहिश्त का नाम रिज़वान है तो जो दुनिया में इरफ़ान की जन्नत को ताअ़ात व इ़बादात से आरास्ता करता है तो कल क़यामत में वो जन्नते रिज़वान में होगा।

➡हजरत सलमा बिन अक्वाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी अपने नफ़्स की पैर‘वी में बराबर लगा रहता है यहाँ तक कि उसे ज़ालिमों में लिख दिया जाता है और उसे वही अन्जाम दिया जाता है जो उन ज़ालिमों को दिया जाता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1072-2000)

➡ हज़रत अस्मा बिन उमैस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो बन्दा बहुत बुरा है कि जिसने खुद को दूसरों से अच्छा समझा और तकब्बुर किया और बुलन्द व बाला ज़ात यानी खुदाये बजुर्ग को भूल गया और वो बन्दा भी बुरा है जिसने जुल्म व ज़्यादती की और ज़ाबिर व ज़ालिम बन गया और जब्बार बरतर को भूल गया और वो बन्दा भी बहुत बुरा है जो लह्व व लाअ़ब यानी वो खेलकूद में मशगूल रहा और भूल गया क़ब्रों को और हड्डियों के गल सड़ जाने को और वो बन्दा भी बुरा है जिसने सरकशी व नाफ़रमानी की और अपनी ख़िल्क़त और अपने अन्जाम को भूल गया और वो बन्दा बुरा है जो उमूरे दीन से दुनिया को तलब करता है यानी जिसने दीन को दुनिया कमाने का ज़रिया बनाया और वो बन्दा भी बुरा है जिसने हिर्स व तमाअ़ को अपना रहनुमा बना लिया है और वो बन्दा भी बुरा है जो नफ़्सानी ख्वाहिश का पुजारी हो गया है और उसको नफ़्सानी ख्वाहिश गुमराह

करती है और वो बन्दा भी बुरा है जिसको हिर्स ज़लील करती है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/268-ह०-2448)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक लश्कर जिहाद से वापस आया तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उनसे फ़रमाया खुश आमदीद तुम जिहादे असग़र से जिहादे अकबर की तरफ़ आये हो अ़र्ज़ की गई जिहादे अकबर क्या है इरशाद फ़रमाया नफ़्स से जिहाद करना। (तारीख़ बग़दाद–3/493-345)
(बैहक़ी–जुहदुल कबीर–165-373)

➡ हज़रत फुज़ाला बिन उ़बैद (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हक़ीक़ी मुजाहिद वो है जो अपने नफ़्स के साथ जिहाद करे।
(मुस्नद अहमद–10/1045-ह०–24451)

लिहाज़ा ज़रुरत इस अम्र की है कि हम हर वक़्त अपने नफ़्स और बातिन का मुहासिबा करें और देखें कि हमारा नफ़्स और बातिन किस हाल में है और हर वक़्त निगाह रखें कि ज़ाहिर अल्लाह की ताअ़त से खाली न हो और अल्लाह के अमाविर के ख़िलाफ़ न हो और नफ़्स शर व गुनाह में मुलव्विस न हो और बातिन अल्लाह की रिज़ा व सिद्क़ो इख़लास से खाली न हो क्योंकि मोमिन की नीयत उसके अ़मल से बेहतर होती है व मुनाफ़िक़ का अ़मल उसकी नीयत से बेहतर होता है।

हज़रत ग़ौसुल आज़म (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं ऐ बन्दे तू अल्लाह तआ़ाला के अहकाम पर अ़मल करते हुये अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात को फ़ना कर दे व तअ़ाल्लुक़ बिल्लाह को मज़बूत बनाने के लिये फ़ासिक़ और ग़ाफ़िल मख़लूक़ से क़ता तअ़ाल्लुक़ होना निहायत ही ज़रुरी है और अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात से फ़ना होने की अ़लामत ये है कि नफ़अ़ व नुक़सान और दिफ़ाअ़े ज़रर व शर और असवाबे दुनिया व जद्दो जहद के तमाम मुआ़मलात में अपनी ज़ात पर भरोसा करने के बजाए इन उमूर को कुल्ली तौर पर रब तआ़ाला के सिपुर्द कर दे चूंकि खुदा को मुख़्तारे कुल न समझ कर अपने नफ़्स पर भरोसा कर लेना शिर्क है।

जबकि हमेशा से अल्लाह तबारक व तआ़ाला ही हर बन्दे के उमूर व मुआ़मलात का कफ़ील रहा है और रहेगा और उसकी ये निगरानी व ज़िम्मेदारी उस वक़्त भी थी जब तू बतने मादर में था फिर माँ की आगोश में था और रब तआ़ाला के इरादे की ख़ातिर अपने तमाम इरादे से फ़ना हो जाने की अ़लामत ये है कि तू किसी ख़्वाहिश व मुराद का क़सद न करे इसलिये कि इरादा-ए-खुदा वन्दी सरा सर ख़ैर व बेहतरी पर मबनी होता है इससे तेरा क़ल्ब मुतमइन होगा सीना फ़राख़ व कुशादा होगा और चेहरा रौशन व पुर नूर होगा और तअ़ाल्लुक़ बिल्लाह की रुहानी तानाई पाकर तू कायनात की तमाम चीज़ों से बेनियाज़ हो जायेगा

अल्लाह तआ़ला के मुख़लिस बन्दे खुद कुछ भी नहीं चाहते मगर वही कुछ चाहते हैं जो अल्लाह चाहे और जब तू अपने तमाम मुआ़मलात को अल्लाह के सिपुर्द करके खुद खाली हो जाये और अपने तमाम इरादों को खुदा के इरादो में फ़ना कर दे और अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी चीज़ की तरफ़ मुतावज्जै न हो तो फिर अल्लाह तआ़ला तुझे नये सिरे से पैदा फ़रमायेगा और फिर तू नई बातिनी सिफ़ात का हामिल होगा और फ़ना की कोई हालत इसके सिवा नहीं है कि तू अपने आप से और मख़लूक से फ़ानी हो जाये तो फिर तेरे नफ़्स में अल्लाह ही अल्लाह बाक़ी रह जायेगा जैसा कि तू अपनी पैदाइश से पहले था।

और इस बात को न भूल कि ख़ैर व शर अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार व कुदरत में है जब तू अल्लाह तआ़ला पर यक़ीने कामिल रखेगा तो वो तुझे हर शर से बेख़ौफ़ कर देगा और ख़ैर की बरकात तेरे लिये कुशादा कर देगा और फिर तू हर ख़ैर का महल और हर नेअ़मत व मर्सरत का मरकज़ और हर नूर व ज़िया (रौशनी, चमक व रौनक़) का मरकज़ और हर अमन व अराम का सर चश्मा बन जायेगा।

शैतान लईन वसवसों के ज़रिये इन्सान को गुमराह करता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

इबलीस ने कहा ऐ पर‘वर दिगार इस सबब से जो तूने मुझे गुमराह किया मैं (भी) यक़ीनन उनके लिये ज़मीन में (गुनाहों व नाफ़रमानियों) को खूब आरास्ता व खुशनुमा बना दूँगा और उन सब को ज़रुर गुमराह करके रहूँगा सिवाये तेरे बरगज़ीदा बन्दों के (जो मेरे व नफ़्स के फ़रेब से) ख़लासी पा चुके हैं यानी जो तेरे मुख़लिस बन्दे हैं।
(सू०–हिज्र–15/39-40)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

इब्लीस ने कहा इस वजह से कि तूने मुझे गुमराह किया है (मुझे क़सम है कि) मैं भी उन (अफ़रादे बनी आदम को गुमराह करने) के लिये तेरी सीधी राह पर ज़रुर बैठूँगा (ताकि मैं उन्हें राहे हक़ से हटा दूँ) फिर मैं यक़ीनन उनके आगे से व उनके पीछे से और उनके दांये से और उनके बांये से उनके पास जाऊँगा और (नतीजातन) तू उनमें से अक्सर लोगों को शुक्र गुज़ार न पायेगा इरशादे बारी हुआ ऐ इब्लीस तू यहाँ से ज़लील व मरदूद होकर निकल जा और उनमें से जो तेरी पैर‘वी करेगा तो मैं ज़रुर तुम सबको दोज़ख़ से भर दूँगा
(सू०–आअ़राफ़–7/16-18)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
जिस शैतान के बारे में लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे दोस्त रखेगा सो वो उसे गुमराह कर देगा और उसे दोज़ख़ के सख़्त अ़ज़ाब का रास्ता दिखायेगा। (सू०–हज–22/4)

इब्लीस (शैतान) को जब बारगाहे इलाही से धुतकार कर और उसे मरदूद व मलऊ़न कहकर निकाला गया और उसने जान लिया कि वो कुफ़्र की हालत पर हमेशा रहेगा और कभी भी उसकी मग़फ़िरत न होगी तो उसने इस बात का अ़हद किया और क़सम उठाई कि ऐ मेरे रब मुझे इस बात की क़सम है कि तूने मुझे गुमराह किया पस मैं ज़रुर ज़मीन में हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद के लिये दुनिया की मुहब्बत और तेरी ना फ़रमानी को खुशनुमा बना दूँगा और मैं ज़रुर उन सबके दिलों में वसवसा डालकर गुमराह कर दूँगा और उन्हें बातिल की तरफ़ माइल करुँगा व गुनाहों की रग़बत दिलाऊँगा और तेरी इ़बादत व इताअ़त से रोकूँगा और बाअ़ज़ लोगों को काफ़िर व मुशरिक बना दूँगा और उन पर तमाम अतराफ़ से हमलावर होऊँगा।

जैसा कि शैतान लईन ने कहा कि मैं लोगों को बहकाने के लिये आगे व पीछे और दांयी व बांयी जानिब से हमला करुँगा तो सामने से मुराद ये है कि उनको दुनिया के मुताअ़ल्लिक़ वसवसे डालूँगा और पीछे से मुराद ये है कि उनकी आख़िरत के

मुताअ़ल्लिक़ वसवसे डालूँगा और दाँये से मुराद ये है कि दीन में शुबहात डालूँगा और बांये से मुराद ये है कि उनको गुनाहों की तरफ़ राग़िब करुँगा यानी उनके लिये दुनिया को आरास्ता करुँगा और उन्हें उसकी दाअ़वत दूँगा और आख़िरत के बारे में ये ख़बर दूँगा कि मरने के बाद न उठना है न जन्नत है और न दोज़ख़ हत्ता कि उन्हें अपनी मौत से बिल्कुल ग़ाफ़िल कर दूँगा कि वो अपनी मौत को भी याद नहीं करेंगे और उनके लिये शर व गुनाह को आरास्ता करके दिखाऊँगा और उन्हें उसकी दाअ़वत दूँगा और उनकी नेकियों को रिया के ज़रिये ज़ाया करने की कोशिश करूँगा सिवाये तेरे मख़सूस व बरगज़ीदा बन्दों के मैं हर एक को गुमराह कर दूँगा।

अल्लाह तआ़ला की शैतान को क़यामत तक मुहलत देना हिकमत के तक़ाज़े के तहत था ताकि इन्सान को आज़माइश में डाला जाये और जो मेरे बन्दे हैं वो शैतान के बहकावे में नहीं आयेंगे और अल्लाह के दुश्मनों में से जो उसके बन्दे होंगे वो उससे अलग हो जायेंगे और वो सिर्फ़ मेरी और मेरे रसूल की इताअ़त करेंगे और नेक अ़मल करेंगे वही मेरे मुख़लिस और बरगज़ीदा बन्दे होंगे जो शैतान की पैर'वी नहीं करेंगे और हर वक़्त अपने रब से डरते रहेंगे और वो अहकामे शरीअ़त पर अ़मल पैरा रहेंगे है और उनका हर नेक अ़मल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और खुशनूदी हासिल करने के लिये होगा।

शैतान (इब्लीस) ने ये गुमान किया कि जब मैं आसमानों के ऊपर हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) के दिल में वसवसा डालने और शजरे ममनूअ़ की तरफ़ रग़बत दिलाने में कायमाब हो गया तो मैं ज़मीन पर इनकी औलाद के दिलों में वसवसा डालने में ज़रुर कामयाब हो जाऊँगा और उनकी नज़रों में दुनिया की चीज़ों को हसीन व जमील बनाकर पेश करुँगा हत्ता कि वो अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जायेंगे मगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और औलिया किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) व उ़ल्मा किराम के ज़रिये से अपने बन्दों की मदद फ़रमाई और इन्हीं के ज़रिये हिदायत व रहनुमाई फ़रमाई।

बाअ़ज़ फ़रिश्ते इस अम्र पर मामूर किये गये हैं कि वो ज़रिया ए इल्हाम नेकी की तरफ़ राग़िब करते हैं और अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को भेजा व औलिया किराम व उ़ल्मा ए किराम को नेकी की तरफ़ राग़िब करने के लिये पैदा फ़रमाया और शर और गुनाह की तरफ़ राग़िब करने के लिये अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस व उसकी ज़ुर्रियात रख दी व खुद इन्सान में भी दो कुव्वतें रख दी हैं एक कुव्वत उसको दुनिया की तरफ़ राग़िब करती है व दूसरी कुव्वत उसे अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र व उसकी इ़बादत और आख़िरत की तरफ़ मुतव्वजै करती है और अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अ़क्ल अ़ता की व

उसको इख़्तियार दिया कि वो नेकी व बदी और ईमान व कुफ़्र और हक़ व बातिल में से किसी एक को इख़्तियार कर ले पस जो ईमान व नेकी और हक़ को इख़्तियार करेगा वो कामयाब होगा और जो कुफ़्र व बदी को इख़्तियार करेगा तो वो नाकाम होगा।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जान की क़सम और उसकी क़सम जिसने उसे दुरुस्त बनाया फिर उसे बदी व नेकी समझा दी बेशक वो कामयाब हो गया जिसने नफ़्स को पाक कर लिया और बेशक वो नाकाम हो गया जिसने नफ़्स को गुनाहों में मुलव्विस कर लिया। (सू–शम्स–9/7-10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और हमने उसको नेकी और बदी के दोंनों वाज़ेह रास्ते दिखाये तो वो नेक अ़मल की दुश्वार गुज़ार घाटी में दाख़िल नहीं हुआ (सू०–बलद–90/10-11)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से हर एक शख़्स के साथ एक शैतान मुक़र्रर किया गया है और एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया गया है सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या आपके साथ भी तो आप ने फ़रमाया हाँ मेरे साथ भी है

मगर अल्लाह तआ़ला ने मेरी मदद फ़रमाई और वो मुसलमान और मेरा इताअ़त गुज़ार हो गया और वो मुझे भलाई के सिवा कोई मशवरा नहीं देता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/600-ह०–2988)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–2/156-ह०–997)
(मुस्लिम–सहीह–5/320-ह०–7108)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/288-ह०–496)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने नेकी की तल्क़ीन के लिये एक फ़रिश्ता और बुराई पर तरग़ीब के लिये शैतान पैदा किया है और अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अच्छे और बुरे काम की समझ और अ़क्ल अ़ता फ़रमाई है शैतान वसवसे की सूरत में बुराई की दाअ़वत देता है तो उसके मुक़ाबले में अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया–ए–किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) और उ़ल्मा ए इज़ाम नेकी और ख़ैर की दाअ़वत देते हैं और अल्लाह तआ़ला ने ख़ैर और शर के दोंनों रास्ते वाज़ेह कर दिये हैं सो जो अपनी अ़क्ल व शऊ़र से गुनाहों को छोड़कर अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त को इख़्तियार करे तो उसको बेशुमार अज्रो सवाब अ़ता किया जायेगा और वो जन्नत का मुस्तहिक़ हो जायेगा और जो इताअ़त व इ़बादत को छोड़कर गुनाहों को इख़्तियार करे तो उसको दायमी अ़ज़ाब दिया जायेगा और वो दोज़ख़ का मुस्तहिक़ होगा।

–: इन्सानों में भी शैतान होते हैं :–

शयातीन की दो क़िस्में होती हैं 1- शयातीनुल जिन इससे इब्लीस लईन और उसकी मलऊ़न औलाद मुराद हैं 2- शयातीनुल इन्स इससे कुफ़्फ़ारों के दाअ़ी और मुनादी मुराद हैं।

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और इसी तरह हमने हर नबी के लिये इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे के दिल में बनावट की बातें वसवसा के तौर पर धोका देने के लिये डालते रहते हैं। (सू०–अनआ़म–6/112)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता रहता है ख़्वाह वो जिन्नात में से हो या इन्सानों में से हो। (सू०–नास–114/5-6)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह तआ़ला के बारे में बग़ैर इ़ल्म व दानिश के झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतान की पैर'वी करते है। (सू०–हज–22/3)

शैतान ख़्वाह इन्सानों में से हो या जिन्नो में से हो उनकी कोई भी बात न मानी जाये क्योंकि

अगर उनकी एक बात मान ली तो ये मलऊ़न उसी पर इक्तिफ़ा नहीं करेंगे बल्कि और बातें भी मनवाने की कोशिश करेंगे और जितना इनकी बात मानते चले जायेंगे तो इसका सिलसिला उतना ही बढ़ता चला जायेगा इसी तरह इनके साथ झगड़े और बहस में भी मसरुफ़ न हुआ जाये।

लिहाज़ा इनसे निजात की सूरत ये है कि इनकी कोई बात न सुनी जाये क्योंकि अगर इनकी बात सुनेंगे तो मुम्किन है कि कोई बात दिल पर असर कर जाये और सुनने वाला कुफ़्र व गुमराही के दलदल में फंसकर रह जाये।

लोगों में कुछ गिरोह ऐसे होते हैं जो गुमराही के रास्ते पर गामज़न होते हैं वो बातिल दलाइल के साथ हक़ से झगड़ते है वो बातिल को हक़ और हक़ को बातिल साबित करना चाहते हैं और उनका हाल ये है कि वो जहालत की इन्तिहा को पहुँच गये और उनके इ़ल्म की इन्तिहा ये है कि वो गुमराह आ़लिम और सरकश शैतान के पीछे चलते हैं और जो शख़्स इनकी पैर‘वी करेगा वो राहे रास्त से भटक जायेगा और जिन्नात और इन्सानों के हर सरकश शैतान के मुताअ़ल्लिक़ लौहे महफ़ूज़ में ये लिख दिया गया है कि जो भी इनकी इताअ़त व इससे दोस्ती करेगा तो शैतान ज़रुर उसे गुमराह कर देगा और उसे जन्नत से गुमराह कर देगा और जहन्नुम के अ़ज़ाब की राह बतायेगा।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरी ज़माने में ऐसे दज्जाल व फ़रेबी कज़्ज़ाब होंगे जो तुम्हारे पास ऐसी हदीसें लायेगे जो तुमने न सुनी होंगी न तुम्हारे आबा ने तुम उनसे दूर रहना कि कहीं वो तुम्हें गुमराह न कर दें और तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें। (मुस्लिम–सहीह–1/58-ह०–16)
(कंजुल उ़म्माल–5/432-ह०–29024)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़नक़रीब एक क़ौम आयगी जो मेरे सहाबा को गाली देगी और उनकी शान को गिराने की कोशिश करेगी तो ऐसे लोगों के साथ उठना, बैठना, खाना, पीना, शादी, ब्याह मत करना और न उनके साथ नमाज़ पढ़ना और न उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना।
(कंजुल उ़म्माल–6/527-32528)

शैतान हर सरकश व नाफ़रमान को कहते हैं चाहे वो इन्सान हो या जिन और जो शख़्स गुमराह हो और वो लोगों को शरीअ़त के ख़िलाफ़ किसी काम की तरग़ीब दे वो इन्सानी शैतान है ख़्वाह वो अपने अ़ज़ीज़ों में से हो या अ़ालिम के लिबास में हो इसलिये सब मुसलमानों पर लाज़िम है कि वो ऐसे इन्सानी शैतानों से खुद भी बचें व दूसरों को भी बचायें और कुछ लोग दज्जाल उसी

एक को समझते हैं जो सबसे बड़ा ख़बीस दज्जाल है जो आने वाला है जबकि ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि तमाम गुमराहों के दाई व मुनादी दज्जाल हैं और हमें सब दज्जालों से दूर भागने का हुक्म है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
अगर तू ज़मीन में मौजूद लोगों की अक्सिरयत का कहना मान ले तो वो तुझे अल्लाह की राह से भटका देंगे वो (हक़ व यक़ीन की बजाए) सिर्फ़ वहमो गुमान की पैर'वी करते हैं और महज़ ग़लत क़ियास करते रहते हैं बेशक आपका रब ही उसे खूब जानता है जो उसकी राह से बहका हुआ है और वही हिदायत याफ़्ता लोगों से खूब वाक़िफ़ है (सू०-अनआ़म-6/116-117)

इन्सानों में भी शैतान होने में हिकमत ये है कि सच्चे व झूठे और अ़क़्लमंद व जाहिल और साहिबे बसीरत व अन्धे के दरमियान इम्तियाज़ हो सके और बन्दों की आज़माइश व इम्तिहान हो सके कि कौन अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त करता है और कौन गुमराहों की इताअ़त करता है और रहमत वाले और ताअ़नत वाले लोगों में फ़र्क़ किया जा सके और इससे दीनी व दुनियावी निज़ाम क़ायम रहे अल्लाह तआ़ला ने लोगों की अक्सरियत की इताअ़त से बचने की तल्क़ीन फ़रमाई कि अगर लोगों की अक्सरियत का कहना माना तो वो अल्लाह के रास्ते से बहका देंगे क्योंकि उनमें से अक्सर लोग अपने दीन व

ऊ़लूमे हक़ और आअ़्माले सहीहा से मुनहरिफ़ हो चुके हैं पस उनके दीन फ़ासिद व उनके आअ़्माल उनकी ख़्वाहिशाते नफ़्स के ताबेअ़ हैं और उनके ऊ़लूम में न तहक़ीक़ है न सीधे रास्ते की तरफ़ राहनुमाई उनका तमाम तर मक़्सद ज़न व गुमान की पैर'वी है पस ऐ मुसलमानों तुम पर फ़र्ज़ है कि तुम अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की नसीहतों पर अ़मल करो और अल्लाह तआ़ला के अवामिर व नवाही पर अ़मल पैरा हो जाओ।

तो माअ़लूम हुआ कि किसी गिरोह की कसरत से उसके हक़ होने पर इस्तिदलाल नहीं किया जा सकता इसी तरह अगर किसी मुआ़मले में उसके इतिख़्यार करने वाले थोड़े हों तो ये क़िल्लत उनके नाहक़ होने की दलील नहीं बन सकती व हक़ीक़त ये है कि बेशक किसी एक जगह पर अहले हक़ ताअ़दाद में बहुत कम हो मगर वो अहले हक़ ही रहेंगे उनको किसी बातिल दलील की बिना पर अहले बातिल ठहराना अव्वल दर्जे की जहालत है

जिन्नाती शैतान किसी को बहकाने के लिये इन्सान की मदद भी लेते हैं फिर इब्लीस इन्सानों में से चुनता है और उनके ज़रिये से लोगों को बहकाता है पहले ये अपने नुमांइंदों के दिलों में वसवसा डालता है फिर उसके नुमांइंदे लोगों को बहकाते हैं और अच्छे इल्हामात अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और मलाइका की तरफ़ से होते हैं

शैतान मुख़्तलिफ़ लोगों के पास मुख़्तलिफ़ शक्लो में जाता है दुनिया परस्तों के पास दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पैरोकारों के पास लज़्ज़ात व शहवात की शक्ल में और बद आअ़मालियों के पास वो शर व बुराई की हसीनो जमील तस्वीर बनकर जाता है अहले हक़ व दीन दारों के पास गुमराह कुन मौलवी और बेदीन पीर बनकर जाता है और बद आअ़माल और बद अ़क़ीदगी को कुरान व हदीस से साबित करता है और शैतान ने लोगों के लिये मुख़्तलिफ़ जाल बना रखे हैं जिनके ज़रिये वो लोगों को अपने जाल में फंसाता है और इब्लीस और उसकी जुर्रियात सारे इन्सानों के दिलो दिमाग़ पर तसर्रुफ़ कर सकते हैं कि लोंगों के दिलों में वसवसे डालें और उन्हें सारे इन्सानों की ख़बर भी होती है और हर एक पर नज़र भी होती है और उन्हें हर एक का मक़ाम व दर्जा भी माअ़लूम होता है कि कौन सा शख़्स उनके बहकावे आयेगा और कौन सा शख़्स उनके बहकावे में नहीं आयेगा व जिनके दिलों में ख़ौफ़े खुदा व इश्क़े इलाही व इश्क़े रसूल है वो शैतान के जाल में नहीं फंसते।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

शैतान और उसका गिरोह तुम्हें वहाँ से देखता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते और बेशक हमने शैतानों को ऐसे लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।

(सू०-आअराफ़-7/27)

एक शख़्स ने किसी अ़ालिम से पूछा कि हदीस में है कि माहे रमज़ान में शैतान क़ैद कर दिये जाते हैं तो फिर इस महीने में लोग गुनाह क्यों करते हैं उनसे गुनाह कौन कर'वाता है पस उन अ़ालिम साहब ने जवाब दिया कि शैतान इन्स जो आज़ाद फिर रहे हैं तो दुनिया में गुनाह क्यों न हों इसके अ़लावा खुद इन्सान का नफ़्स जो उसे शर व बुराई और लज़्ज़ात व शहवात की तरफ़ राग़िब करता है और शयातीन इन्स नफ़्से अम्मारा है ये तमाम दुश्मनो से सख़्त तर दुश्मन है इनके मुक़ाबले शैतान जिन के वसवसे और फ़रेब बहुत हल्के हैं।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

पस (ए मोमिनो) तुम शैतान के दोस्तों से लड़ो बेशक शैतान का दाओं कमज़ोर है।
(सू०–निसा–4/76)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

फिर जब उस अ़ज़ीज़ मिस्र ने उनका कमीज़ देखा वो पीछे से फ़टा हुआ था तो उसने कहा बेशक ये तुम अ़ौरतों का फ़रेब है यक़ीनन तुम अ़ौरतों का फ़रेब बड़ा ख़तरनाक होता है (सू०–युसूफ़–12/28)

याद रहे जो शख़्स ख़िलाफ़े शरअ़ बात की रग़बत दे वो शैतान है ख़्वाह वो हमारा अ़ज़ीज़ ही क्यों न हो या मौलवी या पीर हो और ऐसे लोग हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
ऐ ईमान वालो बेशक तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाअ़ज़ तुम्हारे दुश्मन हैं इसलिये– उनसे होशियार रहो। (सू०–तग़ाबुन–64/14)

इन्सानों में जिनका नफ़्स शर व बुराई की तरफ़ ज़्यादा मानूस रहता है तो उन पर बुराई का ग़लबा भी ज़्यादा होता है और उनकी शैतानों के साथ मुनासिबत होती है और फिर शैतान उनके दिलों में वसवसे डालता रहता है फिर वो इन्सान दूसरे इन्सानों के दिलों मे वसवसे डालते हैं और शैतान जिन और शैतान इन्स लोगों को गुमराह करने और धोके में डालने के लिये बुराईयों को खुशनुमा बना कर बयान करते है इसलिये हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने शैतान इन्स और शैतान जिन से पनाह मांगने का हुक्म फ़रमाया है।

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू ज़र अल्लाह की पनाह मांग जिन्नो के शैतानों से और इन्सानों के शैतानो से मैंने कहा क्या इन्सानों में भी शैतान होते हैं आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फरमाया हाँ।
(नसाई–सुनन–3/562-ह०–5512)
(मुस्नद अहमद–16/259-ह०–22189)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/652-ह०–7779)

शैतान की तरफ़ इल्क़ा (बात दिल में डालने) को वसवसा कहते हैं और फ़रिश्ते की तरफ़ से इल्क़ा को इल्हाम कहते हैं शैतान कुफ़्र व फ़िस्क़ और जुल्म के वसवसे डालता और तौहीद व रिसालत और मरने के बाद दोबारा उठने और क़यामत व जन्नत व दोज़ख़ के इन्कार की तल्क़ीन करता है और फ़रिश्ता अल्लाह व रसूल और कुरान मजीद और अहकामे शरीअ़त की तस्दीक़ व नेक कामों की तल्क़ीन करता है तो जब दिल में फ़रिश्ते की तरफ़ से इल्क़ा हो तो अल्लाह का शक्र अदा करे और जब इसके ख़िलाफ़ बातें दिल में आयें तो शैतान के शर से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगो

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक इब्ने आदम के क़रीब एक शैतान का नुजूल होता है और एक फ़रिश्ते का नुजूल होता है यानी इन्सान के दिल में इल्क़ा करने वाला एक शैतान होता है और एक फ़रिश्ता होता है शैतान की तरफ़ से इल्क़ा करने वाला इन्सान को मसाइब से डराता है और बुराई की तरफ़ लेकर जाता है और हक़ की तकज़ीब करता है और फ़रिश्ते की तरफ़ से इल्क़ा करने वाला भलाई की तरफ़ लेकर जाता है और ख़ैर की बिशारत देता है और हक़ की तस्दीक़ करता है तो जो शख़्स इस सूरते हाल को पाये तो वो अल्लाह तआ़ला की शुक्र बजा लाये और जो शख़्स अपने दिल में दूसरी सूरते-

हाल को पाये तो वो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगे फिर आपने ये आयते मुबारका पढ़ी 'शैतान तुमको मुफ़लिसी से डराता है और बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तआ़ला तुमसे अपनी बख़्शिश और अपने फ़ज़्ल का वाअ़दा फ़रमाता है' (सू-बक़राह-2/268)(तिर्मिज़ी-सुनन-2/600-ह०-2988) (इब्ने हिब्बान-सही-2/156-ह०-997)

यानी बुरे ख़्यालात वसवसे हैं और अच्छे ख़्यालात इल्हाम हैं नफ़्से अम्मारा के ग़लबे में वसवसे ज़्यादा होते हैं और नफ़्से मुतमइन्ना के ग़लबे में इल्हाम ज़्यादा होते हैं और जब इन्सान ग़ाफ़िल होता है तो ये इन्सान के दिल में वसवसा डालता है और जब इन्सान अल्लाह तआ़ला को याद करता व उसका ज़िक्र करता है तो ये शैतान पीछे हट जाता है और ये हर वक़्त मौकेअ़ का मुन्तज़िर रहता है और जैसे ही मौक़ाअ़ मिलता है ये वसवसे व बुरी ख़्वाहिशात दिलों में डालता है और इन्सान को बुरे कामों की तरफ़ राग़िब करता है तो जब भी शैतान इन्सान को बुराई की तरफ़ राग़िब करे तो इन्सान को चाहिये शैतान मरदूद के शर से अल्लाह तआ़ला की पनाह तलब करे और अगर कोई शख़्स बुरे कामों की तरफ़ राग़िब करे तो वो शैतान है और उसके शर से भी अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगे।

इख़लास याफ़्ता बन्दों पर शैतान का ज़ोर नहीं चलता

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि ये (इख़लास का) रास्ता ही सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है बेशक मेरे (इख़लास याफ़्ता) बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा सिवाय उन भटके हुये बन्दों के जो तेरी पैर'वी करेंगे और बेशक उन सबके लिये वाअ़दा की जगह जहन्नम है।
(सू०–हिज्र–15/41-43)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और शैतान ने कहा तूने मुझ पर उस (आदम अ़लैहिस्सलाम) को फ़ौक़ियत और फ़ज़ीलत दी है (आख़िर इसकी क्या वजह है) अगर तू मुझे रोज़े क़यामत तक मुहलत दे तो मैं उस (आदम अ़लै०) की औलाद में चन्द लोगों के सिवा सबके लगाम डाले रखूँगा अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया (जा तुझे मुहलत है) पस उनमें से जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक दोज़ख़ ही तुम सब की पूरी पूरी सज़ा है और जिस पर भी तेरा बस चल सकता है तू उसे अपनी आवाज़ से डग मगाले और उन पर अपनी (फ़ौज के) सवार व प्यादा दस्तों को चढ़ा दे और उनके माल व औलाद में उनका शरीक बन जा और उनसे (झूठे) वाअ़दे कर और शैतान जो भी वाअ़दा करता है वो बस धोका ही होता है बेशक

जो मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा बस नहीं चलेगा और तेरा रब उन अल्लाह वालों की कारसाज़ी के लिये काफ़ी है। (सू०–बनी इसराईल–17/62-65)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

उसने कहा सो तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मैं उन सब लोगों को ज़रुर गुमराह करता रहूँगा सिवाये तेरे उन बन्दों के जो तेरे मुख़लिस व बरगज़ीदा बन्दे हैं इरशाद हुआ पस हक़ ये है और मै हक़ ही कहता हूँ कि मैं तुझसे और जो तेरी पैर'वी करेंगे उन सब को दोज़ख़ से भर दूँगा।
(सू०–सॉद–38/82-85)

जब शैतान ने कहा कि मैं तेरे बन्दों को बहकाऊँगा और उन्हें गुमराह करूँगा और मैं उनके सामने दुनिया व मताये दुनिया को आरास्ता करके दिखाऊँगा और उन्हें इस बात पर आमादा करुँगा कि वो दुनिया को आख़िरत पर तरजीह दें और उनके लिये लज़्ज़त देने वाली चीज़ों और शर व गुनाह को खुशनुमा करके दिखाऊँगा और मैं उन्हें राहे रास्त पर चलने से रोकूँगा सिवाये तेरे उन मुख़लिस और बरगज़ीदा बन्दों के यानी जिनको तूने उनके इख़लास व ईमान और तवक्कुल की वजह से चुन कर अपने लिये ख़ालिस कर लिया है वो मेरे जाल से बच जायेंगे और वो सीधे रास्ते पर गामज़न रहेंगे और सिराते मुस्तक़ीम का रास्ता अल्लाह तआ़ला और उसके इ़ज़्ज़त वाले घर यानी जन्नत तक पहुँचता है और जो अल्लाह तआ़ला–

के मुख़लिस बन्दे हैं उन पर शैतान को कुछ भी कुदरत व क़ाबू हासिल नहीं यानी शैतान का उन पर कुछ ज़ोर नहीं चलेगा और शैतान (इब्लीस) को ये इख़्तियार नहीं कि वो अल्लाह तबारक व तआ़ला के चुने हुये बन्दों को मुख़्तलिफ़ अनवाअ़ की गुमराहियों मुब्तिला कर सके और इसका सबब ये है कि वो अपने रब की सच्ची इ़बादत करते हैं और उनके हर अ़मल में इख़लास व यक़ीन होता है और वो अहकामे शरीअ़त की ताअ़मील करते हैं और दुनिया को दिल से निकाल देते हैं और अपने रब से सच्ची व ख़ालिस मुहब्बत करते हैं और उसके रसूल की मुहब्बत व उनकी इत्तेबाअ़ में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करते हैं इसलिये अल्लाह तआ़ला उनकी मदद फ़रमाता है और उन्हें शैतान के शर से बचाता है।

पस जो अपने नफ़्स और शैतान की पैरवी करेगा और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त के बजाए ख़्वाहिशाते नफ़्स और शैतान का मुतीअ़ होगा वो शैतान के साथ दोज़ख़ में दाख़िल होगा।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

सो वो (बुत भी) उस (दोज़ख़) में औंधें मुँह गिरा दिये जायेंगे और गुमराह लोग भी और इब्लीस की सारी फ़ौजें (भी जहन्नुम में होंगी) वो गुमराह लोग उस दोज़ख़ में बाहम झगड़ा करते हुये कहेंगे कि अल्लाह की क़सम हम खुली गुमराही में थे।
(सू०-शुअ़रा-26/94-97)

सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की इ़बादत का नाम खुलूस नहीं है क्योंकि शैतान ने भी हज़ारों साल अल्लाह तआ़ला की इ़बादत की बल्कि मुख़लिस तो बन्दे हैं जो उन फ़रिश्तों की तरह अम्बिया किराम का अदब व इहतिराम और ताअ़ज़ीम करते हैं और हुक्मे बारी तआ़ला के सामने बग़ैर चून व चरा के झुक जाते हैं और वो औलिया किराम का भी अदब व इहतिराम करते हैं व जिनके दिल दुनिया की मुहब्बत से खाली हैं और वो हर वक़्त अपने रब को राज़ी करने में लगे रहते हैं और उनका हर अ़मल इख़लास से लबरेज़ व रिया से खाली होता है तो उन बन्दों पर बाक़ई शैतान का कोई ज़ोर नहीं चलता क्योंकि वो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम और उसकी हिफ़ाज़त में होते है।

पस जो शैतान की पैर'वी करेंगे और उसकी बात मानेंगे और बद अ़मलियों को इख़्तियार करेंगे तो उन पर शैतान की सल्तनत क़ायम हो जाती है और फिर वो शैतान के जाल और उसके तसल्लुत (हुकूमत) से निकल नहीं पाते हैं हालांकि शैतान किसी को जबरन अपना मुतीअ़ व पैरोकार नहीं बना सकता बल्कि वो खुफ़िया तौर पर दिल में वसवसे डालता है यानी लोग खुद अपने इख़्तियार से शैतान की पैर'वी करते हैं रोज़े कयामत शैतान कहेगा–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और मुझे दुनिया में तुम पर किसी क़िस्म का ज़ोर

नहीं था सिवाये इसके कि मैंने तुम्हें बातिल और बुराई की तरफ़ बुलाया सो तुमने अपने इख़्तियार से और अपने फ़ाइदे की ख़ातिर मेरी दाअ़वत को कुबूल किया अब तुम मुझे मलामत न करो बल्कि खुद अपने आपको मलामत करो।
(सू०-इब्राहीम-14/22)

पस जिसने शैतान के वसवसे को ठुकरा दिया वो मुख़लिस बन्दा हो गया और जिसने शैतान के वसवसे के ज़ेरे असर शैतान की इत्तेबाअ़ की तो वो गुमराह हो जायेगा और तमाम गुमराह रोज़े क़यामत बदतरीन ज़िल्लत वाले हाल में होंगे और मुख़लिसीन बन्दों का उख़र'वी हाल शानो अ़ज़मत का होगा और तमाम मुख़लिसीन जन्नतों में बाग़ों और चश्मों में ऐशो इशरत और अमनो अमान में होंगे और जब ये जन्नत में दाख़िल होंगे तो उन्हें चार खुश ख़बरियाँ सुनाई जायेंगी।

1- तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे और कभी भी किसी बीमारी में मुब्तिला न होगे 2- हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मौत न आयेगी 3- हमेशा जवान रहोगे कभी बुढ़ापा न आयेगा 4- हमेशा क़ायम व सुकूनत में रहोगे कभी जन्नत से निकाले न जाओगे और वो जन्नत उनके लिये आराम के एतबार से मिस्ले मेहमान व रिहायश के एतबार से दायमी मिल्कियत होगी और तमाम जन्नतियों के सीनो से हर क़िस्म की गन्दगी मैल कुचैल निकाल दिया जायेगा और न उनके दिलों में हिर्स व हसद रहेगा न तकब्बुर

और न अ़क्ल में फ़ितूर और न बुग़्ज़ न कीना न नफ़रत और न पेट में गन्दगी और न दिमाग़ में गुस्सा होगा और किसी के दिल में किसी का मक़ाम व मर्तबा देखकर या नेअ़मतों की कसरत देखकर हसद या रश्क पैदा न होगा बल्कि सब भाईयों की तरह आपस में मुहब्बत करेंगे और वो लोग नूर की तरह तख़्तियों पर बैठा करेंगे और बाअ़ज़ जन्नती बाअ़ज़ से बड़े फ़ासले पर होंगे और जब कभी किसी दूर वाले जन्नती से मिलने का इरादा करेंगे तो वो तख़्त पर बैठकर ख़्वाहिश करेंगे और तख़्त चल पड़ेगा और किसी भी वक़्त या किसी भी तरह की उन्हें कोई भी मशक़्क़त व तकलीफ़ न होगी।

हज़रत इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स जन्नत की नेअ़मतों से बहरा अन्दोज़ होने के लिये या दोज़ख़ के अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से इ़बादत करे तो इसमें भी इख़लास है लेकिन ये कामिल दर्जे का और सिद्दीक़ीन का इख़लास नहीं है क्योंकि वो अपने अ़मल में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा जोई का इरादा नहीं कर रहा है और जो कामिलीन व सिद्दीक़ीन हैं उनका मतलूब सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करना और उसकी रिज़ा जोई होती है और उन्हें अल्लाह तआ़ला के दीदार और उसकी माअ़रिफ़त से जो लज़्ज़त हासिल होती वो उसके तालिब और मुश्ताक़ होते हैं हक़ीक़त में वो ही रब तआ़ला के कामिल मुख़लिस बन्दे होते हैं।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि दो सिफ़ात ऐसी हैं जिनके बग़ैर अल्लाह तआ़ला कोई भी अ़मल कुबलू नहीं करता सिद्क़े नियत और इख़लास और कुछ सिफ़ात ऐसी हैं जिनका हामिल दुनिया व आख़िरत में कामयाब व फ़लाह पाता है जैसे लोगों को नेक आअ़माल की दाअ़वत देना व खुद भी नेक कामों पर अ़मल पैरा रहना और लोगों को शर व बुराई के कामों से रोकना व खुद भी शर व बुराई के कामों से बाज़ रहना और अल्लाह तआ़ला के हुदूद व अहकामात की हिफ़ाज़त करना और तकब्बुर व रिया और खुद पसंदी से हिफ़ाज़त करना और इन अ़ज़ीम बुराइयों से खुद को पाक करना और लोगों के साथ सिला रहमी से पेश आना और नफ़्सानी ख्वाहिशात व शहवात पर ग़ालिब आना और दुनिया से बेरग़बती और आख़िरत के लिये आअ़माले सालेहा जमाअ़ करना और सब्र व शुक्र पर इस्तिक़ामत हासिल करना और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहना और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत को हर शैः पर मुक़द्दम रखना और राहे खुदा में कसरत से सदक़ा ख़ैरात करना वग़ैराह।

अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और इख़्लास के मुताअ़ल्लिक़ चन्द कुरआनी आयात

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
हांलांकि उन्हें फ़क़त यही हुक्म दिया गया था कि सिर्फ़ उसी के लिये अपने दीन को ख़ालिस करते हुये अल्लाह की इ़बादत करें। (सू०–बय्यना–98/5)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो आप अल्लाह की इ़बादत कीजिये इख़्लास के साथ (और लोंगों से फ़रमादें) सुन लो ताअ़त व बन्दगी अल्लाह ही के लिये है। (सू०–जुमर–39/3)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और उन्होंने इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की सो वो लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अ़नक़रीब अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमायेगा। (सू०–निसा–4/146)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बाअ़ज़ लोग वो हैं जो अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने के लिये अपनी जान फ़रोख़्त कर देते है। (सू०–बक़राह–2/207)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो लोग अपने माल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने और अपने आप को (ईमान–

व इताअ़त पर) मज़बूत करने के लिये ख़र्च करते हैं तो उनकी मिसाल ऐसे बाग़ की है जो ऊँची सतह पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो दो गुना फल जाये और अगर उसे ज़ोरदार बारिश न मिले तो उसे शबनम (या हल्की सी फुवार) भी काफ़ी हो। (सू०–बक़राह–2/265)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जो किसी ख़ैरात का या नेक काम या या लोगों में सुलह कराने का हुक्म देता है और जो कोई ये काम अल्लाह की रिज़ा जोई के लिये करता है तो हम उसे अ़नक़रीब अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमायेंगे। (सू०–निसा–4/114)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं हर ग़ैर माअ़रुफ़ आदमी के लिये खुश ख़बरी है जो लोगों को तो पहचानता है लेकिन लोग उसको नहीं पहचानते मगर अल्लाह तआ़ला उन मुख़लस लोगों को अपनी रिज़ा के साथ पहचानता है यही लोग हिदायत के चराग़ हैं और इनसे हर अंधेरा–ए–फ़ित्ना दूर किया जाता है और अल्लाह तआ़ला उनको अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–7/100-34497)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–10/507-35638)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया

से इस हाल में जुदा हुआ कि वो अल्लाह के साथ इख़्लास पर था और वो अपनी इ़बादत में किसी को शरीक नहीं करता था और वो नमाज़ क़ायम करता था और ज़कात दिया करता था तो वो इस हाल में मरा कि अल्लाह तआ़ला उसे राज़ी होगा। (इब्ने माजा–सुनन–1/53-ह०–70)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन शख़्सों के दिलों में कीना और हसद नहीं होता उनमें से एक वो जो इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला के लिये अ़मल करता हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/430-ह०–2658)
(दारमी सुनन–1/197-ह०–235)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ और उसने अ़र्ज़ किया कि एक शख़्स जिहाद करता है वो अज्र का भी तालिब है और शोहरत का भी तालिब है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उसके लिये कोई अज्र नहीं उसने तीन बार सुवाल दुहराया और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने तीन बार यही जवाब दिया उसके लिये कोई अज्र नहीं फिर फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला उस अ़मल को कुबूल फ़रमाता है जो कि ख़ालिस

उसके लिये हो और उस अ़मल में सिर्फ़ उसकी ज़ात का इरादा किया हो।
(नसाई–सुनन–2/355-ह०–3145)

➡हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह की राह में जिहाद करे और उसकी नियत में इख़्लास न हो यानी सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिये जिहाद न करे बल्कि नियत एक रस्सी लेने की हो तो उसको वही चीज़ मिलेगी जो उसकी नियत में है (यानी जिहाद का सवाब नहीं मिलेगा क्योंकि उसकी नियत ख़ालिस नहीं थी हालांकि रस्सी कोई बड़ी चीज़ नहीं मगर इतना ज़रा सा ख़्याल रखने से खुलूस को धब्बा लगता है इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि हर नेक अ़मल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और उसकी खुशनूदी हासिल करने के लिये करे)। (नसाई–सुनन–2/354-ह०–3143)

तमाम इ़बादात व आअ़माल के कुबूल होने और उनमें अज्रो सवाब के हुसूल की शर्त ये है कि उनमें इख़्लास हो और हर वो अ़मल जिसमें इख़्लास न हो वो ज़ाया होने के ज़्यादा क़रीब है और इख़्लास के सिवा हर अ़मल गुबार के ज़र्रात की तरह मुन्तशिर हो जायेंगे और नेक अ़मल से तुम्हारा मक़सूद न दोज़ख़ का ख़ौफ़ हो और न जन्नत की उम्मीद बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की

रिज़ा व खुशनूदी मक्सूद हो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इख़्लास के सब से बुलन्द दर्जे तक पहुँचा देगा और तुम्हें अपने मुकर्रबीन व मख़्सूस बन्दों में शामिल कर लेगा।

सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि इख़्लास ये है कि इन्सान की दायमी नज़र ख़ालिक़ की तरफ़ हो वो मख़्लूक़ को भूल जाये और जो नेक आअ़्माल मख़्लूक़ से मख़्फ़ी हैं वो इख़्लास है और वो जो भी नेक अ़मल अ़ल्लाह तआ़ला के लिये करे तो उस अ़मल में मख़्लूक़ की ताअ़रीफ़ को पसंद न करे और अपनी नज़र को अल्लाह तआ़ला के मा सिवा से मुनक़्ताअ़ करना इख़्लास है और लोगों को दिखाने के लिये अ़मल करना रिया व शिर्क है

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शिर्क ख़फ़ी ये है कि आदमी किसी इन्सान को राज़ी करने के लिये अ़मल करे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/341-ह०–7936,)

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/342-7937,7938,7940)

शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी (उसकी मुख़ालिफ़त की शक्ल में) उसे दुश्मन ही बनाये रखो वो अपने पैरोकारों को सिर्फ़ इसलिये बुलाता है कि वो भी दोज़ख़ियों में शामिल हो जायें।
(सू०–फ़ातिर–35/6)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक शैतान लोगों के दरमियान फ़साद डालता है यक़ीनन शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है।
(बनी ईसराईल–17/53)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ औलादे आदम क्या मैंने तुम से इ़बादत का अ़हद नहीं लिया था कि तुम शैतान की परस्तिश न करना बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है और ये कि मेरी इ़बादत करते रहना यही सीधा रास्ता है और बेशक उसने तुममें से बहुत से लोगों को गुमराह कर डाला फिर क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते
(सू०–यासीन–36/60-62)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के रास्तों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (सू०–बक़राह–2/208)

हक़ीक़त में शैतान तुम्हारा बहुत बड़ा दुश्मन है लिहाज़ा तुम उसे अपना दोस्त न जानो और अपने अ़क़ाइद व अफ़आ़ल व आअ़माल के मुआ़मले में उसे अपना दुश्मन ही समझो और उसकी इताअ़त न करो बल्कि उसकी मुख़ालिफ़त में तमाम कामों को अन्जाम दो और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की फ़रमां बरदारी में मशगूल रहो बेशक शैतान अपनी पैर'वी करने वालों को कुफ़्र व गुमराही की तरफ़ ले जाता है ताकि वो तुम्हें भी दोज़ख़ी बनादे और काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है।

शैतान से जंग में किसी भी वक़्त ढ़ीले न पड़ो क्योंकि वो हर वक़्त तुम्हें देखता है और तुम उसे नहीं देखते और वो हर वक़्त तुम्हारी घात में रहता है ताकि तुम्हें फ़रेब व धोका दे सके और शैतान का धोका और फ़रेब ये है कि वो तुम्हें दुनिया की नेअ़मतों व लज़्ज़तों और उसकी ज़ैबो ज़ीनत की तरफ़ राग़िब करता है ताकि इन्सान अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व उसकी इ़बादत से ग़ाफ़िल हो जाये और वो बुराइयों और गुनाहों को आरास्ता करके दिखाता है ताकि गुनाहों की तरफ़ तुम्हारी रग़बत बढ़ जाये फिर तुम मुसलसल गुनाह करते रहो और कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाओ और फिर वो तुम्हें अपने साथ दोज़ख में ले जाये शैतान वाअ़ज़ औक़ात इन्सान के दिल में ये वसवसा डालता है कि तुम अपने गुनाहों पर–

परेशान न हो अल्लाह तअ़ाला तुम्हारी मग़फिरत फ़रमां देगा क्योंकि वो ग़फ़ूरुर्रहीम है और तमाम मुसलमानों पर निहायत फ़ज़्लो करम फ़रमाता है वो तुमको मुअ़ाफ़ कर देगा और इस तरह से वो इन्सान को तौबा करने से बाज़ रखता है और इस तरह से शैतान इन्सान का दीन और उसकी आख़िरत दोंनों तबाह व बर्बाद कर देता है और उसे दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बना देता है।

इसलिये हर मुसलमान को चााहिये कि वो शैतान की पैर'वी न करे और तमाम बुराईयों व गुनाहों से इजतिनाब करे और हर वक़्त शैतान के ख़िलाफ़ मसरुफ़े जंग रहे ताकि शैतान के शर से बच सके और अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल की इताअ़त पर गामज़न रह सके और गुनाहों से बच सके और कसरते नेक आअ़माल कर सके ताकि उसका ख़ात्मा ईमान बिल ख़ैर पर हो।

शैतान से इन्सान की दुश्मनी बहुत क़दीमी चली आ रही है और वो हमारी राहे सअ़ादत में मुख़्तलिफ़ रुकावटें डालता है और चारों तरफ़ से वो हमारे दिलों में वसवसे डालता है।

रोज़े क़यामत अल्लाह तअ़ाला मुजरिमों से फ़रमायेगा कि ऐ औलादे आदम क्या मैनें तुम्हें अम्बिया किराम की माअ़रिफ़त तुम्हें ये हुक्म नहीं दिया था कि शैतान तुम्हें जो वसवसे दिलाता है और तुम्हारे लिये अल्लाह तअ़ाला की नाफ़रमानी

को मुज़य्यन करता है इसमें तुम उसकी इताअ़त न करना बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है और उसकी अ़दावत बिल्कुल ज़ाहिर है और क्या मैंने हुक्म न दिया था कि सिर्फ़ मेरी इ़बादत करना और किसी को मेरी इ़बादत में शरीक न करना और उसने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया तो क्या तुममें अ़क्ल न थी कि तुम उसकी अ़दावत और गुमराह गरी को समझते और अपने जुमला बुरे आअ़मालों से इजतिनाब करते तो तुम अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ न होते।

सो तुमने मेरे अ़हृद की हिफ़ाज़त न की व मेरे अवामिर की ताअ़मील नहीं की और मेरी नाफ़रमानी की और तुमने अपने दुश्मन शैतान से दोस्ती रखी और रहमान के साथ अ़दावत रखी हत्ता कि तुम अपनी आख़िरत और अपने हिसाब और मेरी मुलाक़ात को भूल गये कि तम्हें क़ब्र में जाना है क़यामत के दिन फिर उठना है और फिर अल्लाह तआ़ला के सामने हिसाब देना है तो अब दोज़ख़ ही तुम्हारा ठिकाना है जिसका कि तुमसे वाअ़दा किया जाता रहा है सो आज तुम दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ।

जिस इन्सान के दिल में दुनिया व मताये दुनिया की मुहब्बत का ग़लबा हो जाता है तो वो शैतान की मुवाफ़िक़त और अल्लाह तआ़ला की मुख़ालिफ़त के काम करता है और जिसके दिल में अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब की मुहब्बत का

ग़लबा होता है और दिल में खौफ़े इलाही रहता है तो वो शैतान की तरग़ीबात के ख़िलाफ़ और अल्लाह तआ़ला के मुवाफ़िक़ काम करता है पस उसका ईमान क़वी (मज़बूत) हो जाता है फिर उस पर शैतान के वसवसों का असर नहीं होता और जिसका ईमान मज़बूत होता है तो वो नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर भी क़ाबू और ग़लबा पा लेता है और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के अहकाम पर अ़मल पैरा रहता है और यही सीधा रास्ता है और जो इस रास्ते पर गामज़न होता है तो वो हिदायत पा जाता है और जो इस रास्ते को छोड़ कर किसी और रास्ते पर चलता है वो गुमराह हो जाता है और गुमराही का रास्ता उसे दोज़ख़ की तरफ़ ले जाता है।

कोई भी शख़्स कामिले ईमान और हिदायत याफ़्ता नहीं हो सकता जब तक कि कायनात की हर शैः से बढ़कर उसके दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत न हो फिर उसके हबीब की मुहब्बत और फिर अल्लाह तआ़ला के महबूब व मख़सूस बन्दों की मुहब्बत न हो व जिस हाल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत दिल में हो तो उस हाल में अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और की मुहब्बत न हो और बन्दा अपने रब से किये हुये अ़ह्द को पूरा करे और उसके हुदूद की हिफ़ाज़त करे और अल्लाह तआ़ला जिस हाल में रखें उस हाल में बन्दा अपने रब से राज़ी बा रिज़ाये इलाही रहे और उसकी शिकायत न करे और रब तआ़ला जो

भी नेअ़मत अ़ता करे तो उसकी ना शुक्री न करे और किसी हाल में भी गुनाह का क़सद न करे और अपने पर‘वर दिगाार से हर वक़्त डरता रहे कि ना माअ़लूम किस अ़मल पर उसकी गिरफ़्त कर ली जाये और अपने रब की रिज़ा व खुश्नूदी हासिल करने के लिये कसरते नेक आअ़माल करे तो बन्दा सआ़दत व हिदायत के आअ़ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाता है और वो अल्लाह तआ़ला का महबूब बन्दा हो जाता है।

जिस शख़्स के दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत व ख़ौफ़ होता है तो उसके लिये अल्लाह तआ़ला के मुश्किल अहकामात पर अ़मल करना आसान हो जाता है जैसे इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) नारे नमरुद में बग़ैर किसी फ़िक्र व ख़तरे के उस में दाख़िल हो गये ये मुश्किलात अ़क़्ल के लिये होती हैं इश्क के लिये नहीं होती और मुख़लिस मोमिनीन हमेशा अपने रब की क़ज़ा पर राज़ी व उसके शुक्र गुज़ार रहते हैं और उसकी हर अ़ता पर क़ानेअ़ और मुतमइन रहते हैं।

इसलिये हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को दिल से निकाल फेंके और अपने दिल को अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत से मुज़य्यन व आरास्ता करे और मुहब्बत की अ़लामत और उसका तक़ाज़ा ये होता है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल को–

पसंद हो तो वो हमें भी पसंद हो और जो चीज़ अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को ना पसंद हो तो वो चीज़ हमें भी नापसंद हो व जिन चीज़ों से अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को नफ़रत हो तो वो हमारे नज़दीक भी क़ाबिले नफ़रत हो व जिन बातों का हमें हुक्म दिया गया उन्हें हम बग़ैर चून व चरा के उनकी ताअ़मील करें और जिन कामों से हमें मनाअ़ किया गया तो उससे रुक जायें तो इस तरह हम अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दे व उसके रसूल के महबूब उम्मती हो जायेंगे फिर अल्लाह तआ़ला हर बुराई और शैतान के शर से हमें महफ़ूज़ रखेगा और हमें अपनी माअ़रिफ़त अ़ता फ़रमायेगा।

शैतान सिर्फ़ हमारी वजह से ज़लील हुआ और जन्नत से निकाला गया क्योंकि उसने आदम (अ़लैहिस्सलाम) को बाइसे तकब्बुर व हसद सज्दा नहीं किया और मरदूद होकर जन्नत से निकाला गया और दोज़ख़ी हो गया अब वो हमें भी जन्नत से दूर और ज़लील रखना चाहता है और हमें भी अपनी तरह दोज़ख़ी बनाने में लगा हुआ है और वो दौलते ईमान जो हमारे पास है वो उसकी ताक में है किसी तरह मुसलमानों के ईमान को बर्बाद किया जाये इसलिये हमें चाहिये है कि हम शैतान के मुआ़मले में ग़फ़लत से काम न लें बल्कि हम होशियार रहें कहीं शैतान के हाथों हमारा ईमान बर्बाद न हो जाये और हम जहन्नमी हो जायें सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि दुनिया में फिसलन

भी है और यहाँ अंधेरा भी है तो जब रास्ते में फिसलन व अंधेरा दोंनों हों तो मुसाफ़िर को एक लाठी भी चाहिये जिसकी टेक से वो फिसलने से बचे और रौशनी की भी ज़रुरत है ताकि वो ग़ार व ख़ार वग़ैराह में फंस न जाये तो इश्क़े इलाही और इश्क़े मुश्तफ़ा ये दो नूर की शमाअ़ हैं और शरीअ़ते मुहम्मदी यहाँ की लाठी है अगर मुसाफ़िर के पास ये दोंनों चीज़ें हों तो वो बा ख़ैर मन्ज़िले मक़सूद पर पहुँच जायेगा और अगर इन दोंनों से अलग रहा तो वो फिसलकर ग़ार में गिर जायेगा और ख़ार में फंस जायेगा और हलाक हो जायेगा

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने जब ऐअ़लाने नबूवत फ़रमाया तो शैतान के पास उसके हीले आये और कहने लगे कि अल्लाह के रसूल ने ऐअ़लाने नबूवत कर दिया है और उनकी उम्मत भी पैदा हो गयी है तो शैतान ने कहा क्या वो लोग दुनिया से मुहब्बत करते हैं शैतान के शागिर्दों ने कहा जी हां फिर शैतान ने कहा अगर वाक़ई वो दुनिया से मुहब्बत करते हैं तो मुझे कोई पर'वाह नहीं कि बुतों की इ़बादत नहीं करेंगे मगर ये लोग मुझसे बच नहीं सकते मैं उन पर तीन चीज़ों के साथ सुबह और शाम करूँगा ये नाहक़ माल लेंगे व उसको नाहक़ राह में ख़र्च करेंगे और उसको हक़ के रास्ते से रोक कर रखेंगे और तमाम बुराईयाँ इन्हीं तीन चीज़ों के ताबेअ़ हैं। (हाकिम–6/332-ह०–7918)

शैतान इन्सानों को उनके बुरे आअ़्माल आरस्ता करके दिखाता है

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

और शैतान ने उनके लिये वो (गुनाह) आरास्ता करके दिखाये थे जो वो किया करते थे फिर जब उन्होंने उन नसीहतों को भुला दिया जो उनसे की गई थीं तो हमने उन पर हर चीज़ के दर'वाज़े खोल दिये यहाँ तक कि जब वो उन चीज़ों (की लज़्ज़तों व राहतों) से खूब खुश हुये जो उन्हें दी गई थीं तो हमने अचानक उन्हें (अ़ज़ाब के लिये) पकड़ लिया तो उस वक़्त वो मायूस होकर रह-गये। (सू०-अनअ़ाम-6/43-44)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

और शैतान ने उनके आअ़्माले (बद) उनके लिये खूब खुशनुमा बना दिये हैं और उन्हें (तौहीद की) राह से रोक दिया है सो वो हिदायत नहीं पा रहे हैं। (सू०-नम्ल-27/24)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

अल्लाह तअ़ाला की क़सम यक़ीनन हमने आपसे पहले (भी बहुत सी) उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उन (उम्मतों) के लिये उनके (बुरे) आअ़्माल आरास्ता व खुशनुमा करके दिखाये सो वही (शैतान) आज उनका दोस्त है और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू०नह्ल-16/63)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और शैतान ने उनके लिये आअ़माले बद उनके लिये खुशनुमा बना दिये थे और उन्हें (हक़ की) राह से फेर दिया था हालांकि वो बीना व दाना थे (सू०–अ़नक़बूत–29/38)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

इसी तरह हद से बढ़ने वालों के लिये उनके (बुरे) आअ़माल आरास्ता करके दिखाये गये हैं जो वो करते रहे थे। (सू०–युनूस–10/12)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सो क्या वो शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से वाज़ेह दलील पर (क़ायम) हो उन लोगों की मिस्ल हो सकता है जिनके बुरे आअ़माल उनके लिये आरास्ता करके दिखाये गये हैं और वो अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चल रहे हों।
(सू०–मुहम्मद–47/14)

कुफ़्र व गुनाहों के बावुजूद दुनियावी नेअ़मतें व राहतें और ऐशो इशरत का मिलना दर अस्ल अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ढील व उसका ग़ज़ब और उसका अ़ज़ाब होता जिसे बाअ़ज़ लोग कम इ़ल्मी के सबब अल्लाह तआ़ला की रहमत तसव्वुर करते हैं ताकि इन्सान और ज़्यादा ग़ाफ़िल होकर मज़ीद गुनाहों का मुरतकिब हो जाये और बाअ़ज़ औक़ात वो ये ख़्याल करता है कि जो मैं कर रहा वो वो सहीह व दुरुस्त कर रहा हूँ वरना मुझे ये

नेअ़मतें व राहतें न मिलती और इसके अ़लावा शैतान गुनाहों को इन्सान के लिये आरास्ता करके दिखाता है तो इन्सान उसे बहुत अच्छा व लज़्ज़त आमेज़ समझता है और इस तरह से वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है।

बाअ़ज़ लोग सरकश नाफ़रमानों की माली तरक़्क़ी देखकर मायूस हो जाते हैं और कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला उन्हें खूब अ़ता कर रहा है और हमें नहीं दे रहा है बल्कि लोगों से शिकवा शिकायत करते हैं और अल्लाह तआ़ला के लिये दिलों में बदगुमानी पैदा करते हैं तो उन्हें इससे सबक़ व इ़बरत हासिल करना चाहिये कि ये सब अल्लाह तआ़ला की हिकमत के तहत होता है कि अल्लाह तआ़ला नाफ़रमानों के लिये ऐशो इशरत व दुनिया की लज़्ज़तों व मालो मताअ़ और उसकी ग़फ़लतों के दर'वाज़े खोल देता है और दुनिया में उन्हें कसीर नेअ़मतें अ़ता करता है और मआ़श की तंगी को रिज़्क़ की वुसअ़त में बदल देता है ताकि वो अपने शर व गुनाहों में और ज़्यादा बढ़ जायें उनके लिये रुसवा कुन दर्दनाक अ़ज़ाब है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

हमने जब भी किसी बस्ती में कोई नबी भेजा तो उस बस्ती वालों को (नबी को तकज़ीब की वजह से) हमने उन्हें तंगी व तकलीफ़ में गिरफ़्तार कर लिया ताकि वो गिड़गिड़ा कर दुआ़ करें फिर हमने बदहाली को खुशहाली में बदल दिया हत्ता कि वो

(माल व औलाद में) बहुत ज़्यादा हो गये और कहने लगे हमारे आबाओ अजदाद को भी इसी तरह तकलीफ़ और राहत पहुँचती रही है फिर हमने अचानक उनको अपनी गिरफ़्त में ले लिया और उन्हें उसकी ख़बर भी न थी।
(सू०–आअ़राफ़–7/94,95)

इरशादे बारी तअ़ाला है:–
और मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ बेशक मेरी गिरफ़्त बड़ी मज़बूत है। (सू०–आअ़राफ़–7/183)

याद रहे कि अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मतों पर खुश होना अगर फ़ख़्र व तकब्बुर के तौर पर हो तो ये निहायत ही बुरा है और ये कुफ़्फ़ारों का तरीक़ा है और अगर शुक्र के तौर पर हो तो ये निहायत बेहतर है और ये सालिहीन का तरीक़ा है बल्कि हुक्मे इलाही है।

इरशादे बारी तअ़ाला है:–
और अपने रब की नेअ़मतों का खूब चर्चा करो।
(सू०–दुहा–93/11)

आज अक्सर मुसलमानों के हालात ये है कि वो अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल की मुख़ालिफ़त वाले कामों को करके बहुत खुश व मुतमइन होते हैं और अक्सर लोग ऐसे हैं जो बुराई व गुनाहों के काम के करने वालों की ताअ़रीफ़ व वाह वाही करते हैं जिसके सबब बद आअ़माल करने वालों

को ये लगता है कि मैं बिल्कुल सहीह काम कर रहा हूँ तभी तो लोग मेरी ताअ़रीफ़ और वाहवाही कर रहे हैं मगर वो कभी ये नहीं सोचते और न इस बात पर ग़ौर करते हैं कि जो काम लोगों के नज़दीक क़ाबिले ताअ़रीफ़ है क्या वो काम अल्लाह व उसके रसूल के नज़दीक भी क़ाबिले ताअ़रीफ़ है या क़ाबिले मज़म्मत है।

शैतान के फ़रेब और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी के सबब इन्सान अपने बद आअ़मालों पर कभी ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता कि उसके बुरे आअ़माल उसे दोज़ख़ में ले जाने के लिये काफ़ी हैं और इन्सान जिस बातिल और शैतान की राह पर गामज़न होता है उसी को हक़ समझता है और खुद को निहायत अ़क़्लमंद समझता है जबकि उसकी अ़क़्ल शैतान और दुनिया और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ताबेअ़ व मुक़ीद होती है और ऐसे लोगों के लिये सख़्त अ़ज़ाब और निहायत बड़ी मुसीबत है जो उन पर अ़नक़रीब आने वाली है और उनके अ़ज़ाब की नौअ़इयत सख़्त तरीन होगी और ऐसे लोग खुद अपनी हलाकत का सबब बनते हैं।

हालांकि हर वो काम जो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल नज़दीक अच्छा है तो वो अच्छा है और जो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक बुरा व ना पसंदीदा और क़ाबिले मज़म्मत है तो वो काम हर सूरत बुरा और मज़मूम है ख़्वाह दुनिया

के तमाम लोगों के नज़दीक वो अच्छा हो मगर वो काम बुरा और मज़मूम है।

आज अक्सर लोग आँख वाले होकर अन्धे हैं कान वाले होकर बहरे हैं अ़क्ल के बावुजूद वो बेवकूफ़ हैं व सीने में दिल की हरकत के बावुजूद मुर्दा हैं और जिस्मी आज़ा के बावुजूद अपाहिज हैं क्योंकि वो हक़ को जानते हैं मगर वो शैतान और नफ़्स पैर‘वी के सबब बुरे कामों की तरफ़ राग़िब और मुतावज्जे हैं कानों से हक़ को सुनते है मगर काम शैताननियत के करते हैं और अपनी अ़क्ल से अच्छे व बुरे कामों में फ़र्क़ करना जानते हैं फिर भी वो ख़िलाफ़े शरअ़ व शैतान के मुवाफ़िक़ कामों को अन्जाम देते हैं और उन्होंने अपने दिलों को अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की मुहब्बत से मुज़य्यन करने के बजाए अपने दिलों को शर व गुनाह और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और दुनिया की लज़्ज़तों व शहवतों की गन्दगी व मैल कुचैल से आलूदा कर रखा है और उनके जिस्मी आज़ा भलाई के कामों के बजाए अल्लाह व रसूल की मुख़ालिफ़त में काम करते हैं फिर भी अल्लाह तआ़ला से ख़ैर व भलाई और जन्नत की उम्मीद रखते हैं तो ऐ मुसलमानो तुम ज़रा ग़ौर करो कि आअ़माल के एतबार से तुममें और ग़ैर मुस्लिमों में क्या फ़र्क़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

(ऐ महबूब आप उनसे) फ़रमां दीजिये कि बताओ

अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखे ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह तआ़ला के सिवा कौन माअ़बूद ऐसा है जो ये नेअ़मतें दोबारा तुम्हें दिला सके देखो हम कैसे कैसे मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से आयात बयान करते हैं फिर भी ये लोग मुँह फेर लेते हैं।
(सू०–अनआ़म–6/46)

पस ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी आंखे छीन ले व तुम्हारे कान छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो न तुम्हारी बसारत बाक़ी रहे और न तुम्हारी समाअ़त बाक़ी रहे और न सोचने समझने की कुव्वत बाक़ी रहे तो अल्लाह के सिवा कौन है जो ये चीज़ें तुम्हें दिला सके तो इसका जवाब ये है कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं तो फिर तुम क्यों अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी करते हो और ख़्वाहिशे नफ़्स और शैतान की पैर‘वी करते हो क्या तुम्हें मरना नहीं है क्या तुम्हें अंधेरी क़ब्र में जाना नहीं है क्या तुम्हें अल्लाह तआ़ला के सामने अपने आअ़मालों का हिसाब देना नहीं है क्या तुम को क़ब्र के अ़ज़ाब से डर नहीं लगता क्या तुम दोज़ख़ की तीन हज़ार साल तक दहकने वाली आग को बर्दाश्त कर सकते हो क्या तुम्हें क़यामत की हौलनाकियों से डर नहीं लगता जब गुनाहगारों का निहायत ही सख़्त तरीन बुरा हाल होगा जब प्यास की शिद्दत से ज़बाने मुँह को आयेंगी जब सूरज तुम्हारे सरों के ऊपर कर दिया जायेगा और

उस पर चटयल मैदान जो निहायत सख़्त तेज़ धूप से आग की तरह जल रहा होगा जिस पर तुम्हें नंगे पाव व नंगे बदन भूके प्यासे खड़ा होना होगा

अब भी वक़्त है अपने पर'वर दिगार से अपने गुनाहों की तौबा करो और उससे मग़फ़िरत तलब करते रहो जब तक कि दम न निकल जाये और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के अहकामात पर गामज़न हो जाओ व दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को तीन तलाक़ दे दो और कसरते नेक आअ़्माल में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो और तमाम बुराइयों व गुनाहों से इजतिनाब करो।

अल्लाह तआ़ला तुम्हें कभी अपनी नेअ़्मतें याद दिलाता है कभी साबिक़ा उम्मतों पर आने वाले अ़ज़ाब याद दिलाता है और कभी क़ब्र के अ़ज़ाब से डराता है और कभी क़यामत की हौलनाकियों और कभी दोज़ख़ की दहकती हुई आग से डराता है और कभी नेक आअ़्माल के सबब मिलने वाली नेअ़्मतों व लज़्ज़तों की खुश ख़बरी सुनाता ताकि मेरे बन्दे मेरे रास्ते पर आ जायें और शैतान का रास्ता छोड़ दें और क्या हमारी नसीहत के लिये अल्लाह तआ़ला का कुरान काफ़ी नहीं क्या हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की लाखों हदीसें सिराते मुस्तक़ीम की राह दिखाने के लिये काफ़ी नहीं हैं और क्या तुम्हें शर व गुनाहों और बातिल रास्तों से हक़ के रास्ते पर लगाने के लिये क्या औलिया किराम की कुतुब और उनकी अ़मली

ज़िन्दगी काफ़ी नहीं फिर क्यों तुम अपनी आख़िरत बर्बाद करने और खुद को हलाक करने व दोज़ख़ का ईधन बनने के लिये बुरे आअ़माल क्यों कर रहे हो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी से आख़िर तुम्हें क्या हासिल होगा सिर्फ़ गिनती के चन्द दिनों की लज़्ज़त फिर दायमी अ़ज़ाब क्या तुम इस बात को पसंद करते हो कि तुम्हें दुनिया में चन्द दिनों ऐशो आराम मिले फिर लाखों साल तुम्हें आग का अ़ज़ाब दिया जाये अब तुम खुद फ़ैसला करलो कि दुनिया की चन्द दिनों की ऐशो इशरत चाहते हो या फिर लाखों साल तक दोज़ख़ में रहना चाहते हो जहाँ चारों तरफ़ सिर्फ आग ही आग है और पीने को खौलता हुआ पानी व पीप और खाने को कांटेदार फल या फिर दुनिया में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के अहकामात पर अ़मल पैरा होकर चन्द दिनों मशक़्क़त व तकलीफ़ और फिर हमेशा के लिये जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतों में अमन व सुकून और ऐशो आराम में रहना चाहते हो।

जब कोई शख़्स बुरा अ़मल करता है तो शैतान उसकी नज़र को वो अ़मल अच्छा करके दिखाता है और वसवसा डालता है कि यही हक़ व सहीह रास्ता है तो जब बन्दा अपनी बुराईयों को भलाई समझने लगे तो फिर समझ लो कि वो गुमराही व शैतान के रास्ते की तरफ़ चल पड़ा है और रब तआ़ला जिस शख़्स पर माल व मताअ़ और दुनिया को खूब वसीअ़ कर दे और उसके-

अक्सर काम अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के ख़िलाफ़ हों तो उसको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ढील दी जाती है और वो ये समझता है कि अल्लाह तआ़ला हमसे राज़ी है इसलिये अल्लाह तआला हमें कसीर नेअ़मतें अ़ता कर रहा हैं और हम ऐशो इशरत में रह रहे हैं और हमारे काम अच्छे हैं तभी तो ये नेअ़मतें हमको बतौर इनआ़म मिल रही हैं और इस तरह वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब होने के बावुजूद भी ये समझता है कि उसका मुवाख़िज़ा नहीं किया जायेगा और न ही उसको सज़ा दी जायेगी।

पस वो कुफ़्र व सरकशी और गुमराही और गुनाहों में बढ़ता चला जाता है इस तरह उसके गुनाहों में इज़ाफ़ा होता चला जाता है और साथ साथ उसको मिलने वाली सज़ा में भी इज़ाफ़ा होता चला जाता है और उसे इस बात का क़तई इ़ल्म नहीं होता इस तरह जब वो किसी गुनाह का इरतिकाब करता है तो अल्लाह तआ़ला उस पर नेअ़मतों दर‘वाज़े खोल देता है जिससे वो बहुत खुश होता है फिर वो सरकशी और गुमराही में मज़ीद मुनहमिक और मुस्तग़रक़ हो जाता है और जूँ जूँ उस पर नेअ़मतें ज़्यादा होती जाती हैं तूँ तूँ वो ज़्यादा गुनाह करता है फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला ऐन ग़फ़लत में उसको अपनी गिरफ़्त में ले लेता है अल्लाह तआ़ला सरकश व नाफ़रमानों की सज़ा में इसीलिये जल्दी नहीं करता कि वो जानता है कि वो मुझसे बच कर कहीं नहीं जा सकते।

अक्सर लोग मालो दुनिया की मुहब्बत व रग़बत व नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर‘वी के सबब शैतान की राह इख़्तियार किये हुये हैं और वो अपने बातिल गुमान से ये समझते हैं कि वो जिस राह पर चले रहे हैं यही रास्ता सहीह व दुरुस्त और निजात देने वाला है जबकि उनका रास्ता अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के रास्ते के बरअ़क्स है और शैतान ने उनके सामने उनके बुरे आअ़माल मुज़य्यन कर दिये जिसमें वो मसरुफ़ हैं और वो शैतान और अपने नफ़्स की इताअ़त कर रहे हैं और शैतान को अपना दोस्त बना लिया है जबकि वो इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन है तो उनके लिये आख़िरत में दर्दनाक ज़िल्लत आमेज़ अ़ज़ाब है क्योंकि वो रहमान की दोस्ती से मुह मोड़कर शैतान की दोस्ती पर राज़ी हो गये हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जो शख़्स (खुदाये) रहमान की याद से मुँह फेर ले तो हम उसके लिये एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं जो हर वक़्त उसके साथ जुड़ा रहता है और वो (शयातीन) उन्हें (हिदायत के) रास्ते से रोकते हैं और वो यही गुमान किये रहते हैं कि वो हिदायत याफ़्ता हैं यहाँ तक कि जब वो हमारे पास आयेगा तो (अपने साथी शैतान से) से कहेगा ऐ काश मेरे व तेरे दरमियान मशरिक़ व मग़रिब का फ़ासला होता पस तू बहुत बुरा साथी था।
(सू०–ज़ुख़रुफ़–43/36-38)

शैतान हमेशा बेहयाई और बुरे कामों का हुक्म देता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो शैतान के रास्तों पर न चलो और जो शख़्स शैतान के रास्तों पर चलता है तो वो याद रखे कि वो (शैतान) हमेशा बेहयाई और बुरे कामों की राह दिखाता है और अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई भी शख़्स कभी (गुनाहों से) पाक नहीं हो सकता था और अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है पाक फ़रमां देता है और अल्लाह तआ़ला खूब सुनने वाला जानने वाला है।
(सू०–नूर–24/21)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ लोगों ज़मीन की चीज़ों में से जो हलाल और पाकीज़ा हैं उन्हें खाओ और शैतान के रास्तों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है वो तुम्हें बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है।
(सू०–बक़राह–2/168-169)

वो तमाम काम जिन पर बेहयाई और बुरी बात होने का इत्लाक़ होता है वो तमाम कामों का रास्ता शैतान का रास्ता है और उस पर न चलने का अल्लाह तआ़ला ने हमें हुक्म फ़रमाया है कि ऐ ईमान वालो तुम अपने आअ़माल व अफ़आ़ल

में शैतान के तरीक़ों पर न चलो और अल्लाह तबारक व तआ़ला जिसे चाहता है उसे गुनाहों की गन्दगी से उसके बातिन को पाक व साफ़ फ़रमां देता है और उसे हुस्ने अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमांता है।

शैतान व उसके लश्कर बन्दों को अपने नक़्शे क़दम की पैर'वी करने की दाअ़वत देते रहते हैं और गुनाहों को उनके सामने मुज़य्यन करते रहते हैं और इन्सान के नफ़्स की भी यही हालत है कि वो बुराई की तरफ़ माइल रहता है और बन्दे को बुराई के इरतिकाब का हुक्म देता रहता है और अगर बन्दा खुद को नफ़्स और शैतान के हवाले कर दे तो वो कभी बुराईयों और गुनाहों से पाक नहीं हो सकता तो तुममें से जिसने भी अपने नफ़्स का तज़किया कर लिया और अपने क़ल्ब का तसफ़िया कर लिया तो ये अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़ज़्ल व करम और उसकी रहमत है और अल्लाह तआ़ला उसी को पाक करता है जो पाक होना चाहता है इसलिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि मैं खूब सुनने वाला और जानने वाला हूँ।

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते थे ऐ अल्लाह मेरे नफ़्स को तक़वा अ़ता फ़रमां और इसे पाक कर दे तू बेहतर पाक करने वाला है और ऐ मेरे

रब मैं पनाह मांगता हूँ तेरे उस इ़ल्म से जो नफ़ा न दे और उस दिल से जिसमें नरमी और रहम न हो और उस नफ़्स से जो सेर न हो और उस दुआ़ से जो कु़बूल न हो और तेरी पनाह मांगता हूँ सुस्ती से और बख़ीली से और बुढ़ापे से और क़ब्र के अ़ज़ाब से।
(नसाई–सुनन–3/547-ह०–5463)
(मुस्लिम–सहीह–5/195-ह०–6906)

➡ हज़रत इ़याज़ बिन हिमार (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) एक तवील हदीस में बयान करते है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने अपने सब बन्दों को एक ही दीन पर यानी दीन इस्लाम पर और गुनाहों से पाक पैदा फ़रमाया फिर उनके पास शैतान आया और उन्हें उनके दीन से हटा दिया और जो चीज़ें हमने उनके लिये हलाल कीं थी तो उसने वो चीज़ें हराम की और उनको मेरे साथ शिर्क करने का हुक्म दिया जिसकी मैंने कोई दलील नहीं उतारी थी।
(मुस्लिम–सहीह–5/363-ह०–7207)

पस बन्दे को अपने बारे में ग़ौर करना चाहिये कि क्या तू अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नेकी की दाअ़वत देने वाले की पैर‘वी कर रहा है जो तेरे लिये भलाई चाहता है और जो तेरे लिये दुनियावी व उख़रवी सआ़दत चाहता है और तुझे अल्लाह तआ़ला के रास्ते पर और कामयाबी की–

मंजिल पर ले जाना चाहता है और तुझे शर व गुनाह से रोकता है या फिर तू शैतान के दाअ़ी की पैर'वी कर रहा है और जो इन्सान का दुश्मन है जो तेरे लिये हमेशा बुराई चहता है और जो तुझे हलाक करने के लिये भरपूर कोशिश और जद्दो जह्द में मसरुफ़ है और वो तुझे ख़ैर व भलाई के कामों से रोकता है और तुझे जहन्नुम में ले जाना चाहता है और बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं जो शर व गुनाहों के काम करते हैं अगर उन्हें उन कामों से रोका जाये तो वो कहते हैं हमारे बाप दादा भी इसी तरह करते थे और हम भी ऐसा ही करेंगे।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह तआ़ाला ने नाज़िल फ़रमाया है उसकी पैर'वी करो तो वो कहते हैं (नहीं बल्कि) हम तो उसी रविश पर चलेंगें जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है अगरचा उनके बाप दादा न कुछ अ़क़्ल रखते हों और न ही हिदायत पर हों।
(सू०-बक़राह-2/170)

पस वो अपने बाप दादा की तक़लीद पर इक्तिफ़ा करते हैं और कुरानो सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल नहीं करते जबकि उनके बाप दादा बेइ़ल्म व बेअ़क़्ल और गुमराह थे और उनके बाप दादा दीन के उमूर और दीन के अहकामात को नहीं जानते थे और राहे रास्त पर भी न थे तो फिर

उनकी पैरवी करना हिमाकत व गुमराही है जबकि हक़ व सहीह ये है कि दीने हक़ की तमाम बातों की पैरवी की जाये और कुफ़्र व गुनाहों के कामों की पैर'वी न की जाये।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माअ़सियत (गुनाह के कामों) में किसी की इताअ़त नहीं इताअ़त सिर्फ़ नेकी में है। (मुस्लिम–सहीह–3/709-ह०–7465)

शैतान मुख़्तलिफ क़िस्म के वसवसे डालता है ताकि मुसलमान को उसके ईमान से हटाकर कुफ़्र में फंसा दे और मुसलमान को गुमराही व ख़िलाफ़े शरअ़ कामों में मुब्तिला कर दे व सहीहुल अ़क़ीदा के अ़क़ीदे को बातिल व ख़राब करदे व मुसलमान को कबीरा गुनाहों में फंसा दे और परहेज़गार से माअ़मूली गुनाह करा दे और रियाकारी में जाल में फंसा दे और आ़लिमे दीन को ख़िदमते दीन से रोक दे और इसके अ़लावा दुनिया की मुहब्बत व रग़बत व दुनियावी लज़्ज़ात व शहवात और दीगर बुराईयों व गुनाह जैसे तकब्बुर, हसद, खुद पसंदी, रिया, शराब नोशी, ज़िना, चोरी, क़त्लो ग़ारत व जुल्म व ज़्यादती, ख़्यानत, सूद खोरी, बेईमानी, माल की हिर्स व हवस बुख़्ल वग़ैराह ताकि इन्सान कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाये और अपने माल से ज़कात सद्क़ात ख़ैरात न दे और नेक कामों से वो दूर करने की कोशिश करता रहता है

शैतान वसवसों के ज़रिये इन्सान को फ़ित्नों में डालता है

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
ऐ औलादे आदम (कहीं) शैतान तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दे जैसे उसने तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकाल दिया और उनसे उनका लिबास उतर'वा दिया ताकि उन्हें उनकी शर्मगाहें दिखादे बेशक वो खुद और उसका क़बीला तुम्हें वहाँ से दखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते बेशक हमने शैतानों को ईमान न लाने वालों का दोस्त बना दिया है। (सू०-आअ़राफ़-7/27)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला इस आयते करीमा में शैतान लईन की फ़रेबकारी और हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) के साथ उसकी दुश्मनी व अ़दावत का बयान फ़रमां कर औलादे आदम को होशियार व ख़बरदार कर रहा है कि ऐ औलादे आदम तुम शैतान के फ़रेब और उसके वसवसे और उसकी मक्कारियों से बचते रहना जो शैतान हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) के साथ ऐसी फ़रेब कारी कर चुका है तो वो तुम्हें क़तई नहीं छोड़ेगा और वो तुम्हें मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से अपने जाल में फंसायेगा और जब तुम कोई नेक काम करने का इरादा करोगे तो वो तुम्हें उस नेक काम से रोकेगा और जब तुम कोई बुरा काम करोगे तो वो तुम्हारे उस बुरे काम में तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें-

वो बुरे कामों को हक़ व सहीह व आरास्ता करके दिखायेगा ताकि तुम उस काम की तरफ़ राग़िब हो जाओ और उस काम को कर डालो लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि अपनी अ़क़्ल से काम लेते हुये उसके नुक़सान व उसके फ़रेब से बचने की कोशिश करता रहे और शैतान मरदूद के शर से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगे और हर वक़्त शैतान से मुक़ाबले के लिये तैयार रहे।

अल्लाह तबारक व तआ़ला औलादे आदम को डराता है कि कहीं शैतान तुम्हारे सामने गुनाह व मआ़सी को आरास्ता और खुशनुमा करके तुम्हें उनकी तरफ़ बुलाये व तरग़ीब दे और तुम उसकी इताअ़त करने लगो पस तुम उससे बचो वो तुम्हें गुमराह करने की कोशिश में ज़र्रा भर भी कोताही नहीं करता जब तक कि तुम्हें फ़ित्ने और मुसीबत में न डाल दे इसलिये तुम उससे अपना बचाओ करते रहो और बेशक वो दायमी तौर पर तुम्हारी निगरानी करता है अल्लाह तआ़ला ने शैतान को तीन ताक़तें दी हैं 1- वो हर सामने वाले से शख़्स से ख़बर दार रहता है 2- वो हर शख़्स के पास जा सकता है 3- और वो तसर्रुफ़ कर सकता है उसकी वुसअ़ते इ़ल्म का ज़िक्र सू०-आअ़राफ़ की आयत न० 27 में हुआ ''बेशक वो और उसका क़बीला तुम्हें वहाँ से देखते है जहाँ से तुम नहीं देखते'' और लोगों के पास होने का ज़िक्र सू०-आअ़राफ़-की आयत न० 17 में हुआ '' फिर मैं उन पर चारों तरफ़ से हमले करुंगा'' और उसके

तसर्रुफ़ का ज़िक्र सू० हिज्र की आयत न० 39 में हुआ "और अब मैं क़सम खाता हूँ कि इन्सानों के लिये दुनिया को आरास्ता व खुशनुमा बना दूँगा और मैं उन सब को ज़रुर गुमराह करके रहूँगा" शैतान सिर्फ़ हमारी सूरतों को ही नहीं देखता है बल्कि हमारे हर उ़ज़्व और हर उ़ज़्व की हरकात को देखता है और इब्लीस शैतान तामाम शयातीन का सरदार है।

शैतान तुम्हारा क़वी दुश्मन है अगर तुम उसके फ़रेब में फंस गये तो वो तुमको ऐसे अ़क़ाइद व आअ़माल की तरफ़ धकेल देगा जो तुम्हें जन्नत से दूर व दोज़ख के क़रीब कर देंगे इसलिये उससे कभी भी ग़ाफ़िल न रहो और जो दुश्मन नज़र न आये तो वो सबसे ज़्यादा ख़तरनाक होता है और शैतान का क़ाबू उन्हीं लोगों पर होता है जो ईमान से खाली होते हैं लिहाज़ा तुम मोमिन मुत्तक़ी बन कर रहो ये ईमान को उससे बचाने का बेहतरीन क़िलाअ़ है और तक़वा शैतान के मुक़ाबले के लिये बेहतरीन हथियार है।

शैतान वसवसे डालता और अल्लाह बख़्शिश व फ़ज़्ल का वाअ़दा फ़रमाता

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
शैतान तुम्हें (अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोकने के लिये) तंगदस्ती का ख़ौफ़ दिलाता है और बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज्ल का वाअ़दा फ़रमाता है और अल्लाह तअ़ाला बहुत वुसअ़त वाला खूब जानने वाला है। (सू०–बक़राह–2/268)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तहक़ीक़ इन्सान के दिल में दो तरह के ख़्याल आते हैं एक फ़रिश्ते की तरफ़ से होता है और वो भलाई का वाअ़दा और हक़ की तस्दीक़ करता है तो जो इसे पाये वो जान ले कि ये अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से है और अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करे दूसरा ख़्याल शैतान की तरफ़ से आता है और वो शर का वाअ़दा और हक़ की तकज़ीब और ख़ैर से रोकता है तो जो इसे पाये वो जान ले कि ये शैतान मरदूद की तरफ़ से है तो वो शैतान के वसवसों से अल्लाह तबारक व तअ़ाला की पनाह मांगे फिर आपने ने ये आयत तिलावत फ़रमाई शैतान तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोकने के लिये तंगदस्ती का ख़ौफ़

दिलाता है और बेहयाई का हुक्म देता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/600-ह०–2988)

शैतान इन्सान के दिलों में तरह तरह के वसवसे डालता है कि अगर तुम राहे खुदा में ख़र्च करोगे ज़कात व सद्क़ात दोगे तो तुम फ़क़ीर व नादार (ग़रीब मुहताज कंगाल) हो जाओगे लिहाज़ा तुम राहे खुदा में क़तई ख़र्च न करो न ज़कात दो न सद्क़ात दो हालांकि जिन लोगों के दिलों में ये वसवसा डाला जा रहा होता है वही लोग अपनी औलाद की दुनियावी ताअ़लीम व अपने मकानात को खूबसूरत बनाने और शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब और फ़िज़ूल कामों में नाजाइज़ व फिजूल ख़र्ची कर रहे होते हैं।

शैतान हमेशा इन्सान को बुख़्ल व कंजूसी की तरफ़ बुलाता है लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला वाअ़दा फ़रमाता है कि अगर तुम उसकी राह में ख़र्च करोगे तो वो तुम्हें अपने फ़ज़्ल व मग़फ़िरत से नवाज़ेगा और दुनिया व आख़िरत में तुम्हारे लिये ख़ैर और भलाई होगी और दिलों को सुकून और क़ब्र में राहत हासिल होगी व रोज़े क़यामत तुम्हें पूरा पूरा अज्र दिया जायेगा और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमायेगा इसलिये अब सोच समझकर फैसला करना चाहिय कि बन्दे को अल्लाह तआ़ला की बात माननी चाहिये या फिर शैतान की बात माननी चाहिये और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुसअ़त वाला और खूब जानने वाला

है और अल्लाह तआ़ाला जिस पर करम फ़रमाये उसे इ़ल्म व नेक अ़मल व ख़ौफ़े इलाही व अ़क्ल और हिकमत व माअ़रिफ़त जैसी न मिटने वाली नेअ़मतें अ़ता फ़रमाता है और जिन्हें ये नेअ़मतें मिल गई उसे बहुत बड़ी भलाई मिली।

इब्लीस की नज़र तमाम लोगों पर है और वो तमाम लोगों के इरादों से बाख़बर है और वो नेक इरादों से बाज़ रखता है और वो बुरे इरादों की हिमायत करता है और दिलों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के वसवसे डालता रहता है।

➡ हज़रत सबराह बिन अबू फ़ाके (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शैतान इन्सान के रास्तों पर बैठता है फिर वो लोगों को इस्लाम के रास्ते से रोकता है और वो कहता है कि तू मुसलमान होता है और अपने बाप दादाओं के दीन को छोड़ता है फिर अगर वो शख़्स उसकी बात को नहीं सुनता और वो मुसलमान हो जाता है तो फिर वो शैतान उसको हिजरत के रास्ते से रोकता है और कहता है कि मुहाजिर की मिसाल ऐसी है जैसे घोड़े को रस्सी बांधकर चरने के लिये छोड़ते हैं वो अपनी जगह से कहीं जा नहीं सकता फिर वो उस शैतान की बात को रद्द कर देता है और हिजरत करता है फिर शैतान उसे जिहाद से रोकता है और कहता है कि तू जिहाद करता है वो तो जान और माल के लिये एक बड़ी आफ़त है

और तू लड़ेगा और मारा जायेगा फिर लोग तेरी बीवी का निकाह कर देंगे और तेरा माल आपस में बांट लेंगे फिर वो शख़्स उस शैतान की बात नहीं सुनता और वो जिहाद करता है फिर आपने फ़रमाया जिसने ये काम किये और शैतान की बात नहीं मानी तो अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि वो उसको जन्नत में दाख़िल करेगा और अगर वो जिहाद में मारा जाये तो अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि उसे जन्नत में आअ़ला मक़ाम व दरजात अ़ता फ़रमायेगा। (नसाई–सुनन–2/351-ह०–3139)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया जो नमाज़ में इधर उधर देखता रहता है तो आपने फ़रमाया ये शैतान की झपट है इसके ज़रिये से वो तुम में से किसी एक की नमाज़ उचक ले जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–3/490-ह०–3291)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई अपनी नींद से बेदार हो तो वुजू करे और तीन मर्तबा नाक में पानी डालकर नाक को साफ़ करे क्योंकि शैतान उसकी नाक के बाँसे में रात गुज़ारता है। (बुख़ारी–सहीह–3/492-ह०–3295)

शैतान के शर व मक्रो फ़रेब और उसके वसवसों से बचने का तरीक़ा

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और (ऐ इन्सान) अगर शैतान की तरफ़ से कोई वसवसा (बुराई की तरफ़) तुझे उभारे तो अल्लाह तआ़ला से पनाह तलब किया कर बेशक वो सुनने वाला जानने वाला है बेशक जिन लोगों ने परहेज़ गारी इख़्तियार की है जब उन्हें शैतान की तरफ़ से कोई बुरा ख़्याल आता है तो वो यादे इलाही में लग में जाते हैं सो उसी वक़्त उनकी (बसीरत की) आंखें खुल जाती हैं और जो उन शैतान के भाई बन्द हैं वो उन्हें (अपनी वसवसा अन्दाज़ी के ज़रिये) गुमराही में खींचे रखते हैं और कोई कसर नहीं उठा रखते हैं।

(सू०–आअ़राफ़–7/200-202)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और अगर शैतान की वसवसा अन्दाज़ी से तुम्हें कोई वसवसा आ जाये तो अल्लाह की पनाह मांग लिया करो बेशक वो खूब सुनने वाला और जानने वाला है। (सू०–फुस्सिलत–41/36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सो जब आप कुरान पढ़ने लगें तो शैतान मूरदूद (की वसवसा अंदज़ियों) से अल्लाह की पनाह मांग लिया करो बेशक उस (शैतान) को उन लोगों पर

कुछ भी ग़लबा हासिल नहीं है जो ईमान लाये और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं बस उसका ग़लबा सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर होता हैं जो उसे दोस्त बनाते हैं। (सू०–नह्ल–16/98-100)

हज़रत इमाम मुहम्मद गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि सूफ़िया किराम के नज़दीक शैतान से जंग करने और उसे मग़लूब करने के दो तरीक़े हैं एक तरीक़ा ये कि शैतान के मक्रो फ़रेब से बचने के लिये सिर्फ़ अल्लाह तआ़ाला की पनाह ली जाये और इसके अ़लावा और कोई रास्ता नहीं है क्योंकि शैतान एक ऐसा कुत्ता है कि जिसे अल्लाह सुबहानहू व तआ़ाला ने तुम पर मुसल्लत कर दिया है अगर तुम इससे मुक़ाबला व जंग करने व इससे खुद को दूर करने में मशगूल रहोगे तो तुम तंग आ जाओगे और तुम्हारा क़ीमती वक़्त ज़ाए हो जायेगा और बिल आख़िर वो तुम पर ग़ालिब आ जायेगा इसलिये तुम्हें अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ मुतावज्जै होना ही पड़ेगा और अल्लाह तआ़ाला की पनाह लेनी पड़ेगी ताकि अल्लाह तआ़ाला शैतान को तुमसे दूर करदे और ये तुम्हारे लिये शैतान के साथ मुक़ाबला व जंग करने से बेहतर है।

दूसरा तरीक़ा ये है कि शैतान से मुक़ाबला करने और उसे दूर करने और उसकी तरदीद व मुख़ालिफ़त करने के लिये हमा वक़्त तैयार रहना चाहिये और मैं मुहम्मद गज़ाली ये कहता हूँ कि–

मेरे नज़दीक इसका जामेअ़ व बेहतरीन तरीक़ा ये है कि मज़कूरा बाला दोंनों तरीक़ों को इख़्तियार किया जाये लिहाज़ा सबसे पहले शैतान मरदूद की शरारतों से अल्लाह की पनाह ली जाये जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने हमें इसका हुक्म फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला हमें शैतान लईन से महफ़ूज़ रखने के लिये काफ़ी है इसके बाअ़द भी अगर तुम ये महसूस करो कि अल्लाह तआ़ला की पनाह लेने के बावुजूद भी शैतान तुम पर ग़ालिब आने की कोशिश कर रहा है और तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ रहा है तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा इम्तिहान लेना चाहता है ताकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे मुजाहिदे और इ़बादात में तुम्हारी कुव्वत की सच्चाई व सफ़ाई देखे और तुम्हारे सब्र की जांच करे।

जैसा कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने काफ़िरों को हम पर मुसल्लत किया हालांकि अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ारों की शर अंगेज़ियों को हमारे जिहाद के बग़ैर ही नेस्तो नाबूद करने पर क़ादिर है मगर वो ऐसा नहीं करता बल्कि उनके ख़िलाफ़ जिहाद करने का हुक्म देता है ताकि हम उस इम्तिहान में कामयाब व कामरान हो जायें इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने हमें शैतान के साथ मुक़ाबला और जंग करने का हुक्म दिया है।

इसके अ़लावा शैतान से मुक़ाबला करने और उस पर ग़लबा हासिल करने के तीन तरीक़े हैं एक ये

कि तुम शैतान के मक्रो फ़रेब और उसकी हीला साजियों से होशियार हो जाओ क्योंकि जब तुम्हें उसकी हीला साजियों का इ़ल्म होगा तो वो तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा जिस तरह चोर को जब माअ़लूम हो जाता है कि मकान के मालिक को मेरे आने का इ़ल्म हो गया है तो वो भाग जाता है।

दूसरा तरीक़ा ये है कि जब शैतान तुम्हें गुमराहियों की तरफ़ बुलाये तो तुम उसकी बात को रद्द कर दो और तुम्हारा दिल क़तअन उसकी तरफ़ मुतावज्जै न हो और न तुम उसकी पैर'वी करो क्योंकि शैतान लईन एक भौंकने वाले कुत्ते की तरह है अगर तुम उसे छेड़ोगे तो वो तुम्हारी तरफ़ तेज़ी के साथ लपकेगा और वो तुम्हें ज़ख़्मी कर देगा और अगर तुम उस से किनारा कशी इख़्तियार करोगे तो वो ख़ामोश हो जायेगा।

तीसरा तरीक़ा ये है कि तुम अल्लाह तआ़ला का हमेशा ज़िक्र करते रहो और हमा वक़्त खुद को अल्लाह तआ़ला की याद में मसरुफ़ रखो।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शैतान तुममें से किसी के पास आता है और उससे कहता है कि ये किसने पैदा किया वो किसने पैदा किया हत्ता कि सुवाल करने लगता है कि तेरे रब को किसने

पैदा किया लिहाज़ा जब नौबत यहाँ तक आ जाये तो उसे अल्लाह की पनाह में आना चाहिये और उस शैतानी ख़्यालात को तर्क कर देना चाहिये व उसे ये कहना चाहिये कि मैं ईमान लाया अल्लाह पर और अल्लाह के रसूल पर और दुआ़ करे कि ऐ अल्लाह मुझे अपनी पनाह में रख और शैतान मरदूद के शर से महफ़ूज़ रख।
(बुख़ारी–सहीह–3/484-ह०–3276)
(अबू दाऊद–सुनन–6/584-ह०–4721)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोग सुवालात करते रहेंगे हत्ता कि कहा जायेगा कि ये मख़्लूक़ अल्लाह तआ़ाला ने पैदा की तो अल्लाह तआ़ाला को किसने पैदा किया सो जो कोई इस क़िस्म की बात करे या शैतान इस तरह के ख़्याल दिल में डाले तो उसे चाहिये कि वो यूँ कहे कि मैं ईमान लाया अल्लाह पर और अल्लाह तआ़ाला बे नियाज़ है न उसे किसी ने जना और न उसने किसी को जना और कोई नहीं जो उसकी बराबरी कर सके फिर बाँयी जानिब कुछ लुआ़ाब थूके और शैतान के शर से पनाह मांगे।
(अबू दाऊद–सुनन–6/584-ह०–4722)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शैतान तुममें से

किसी के पास आकर कहता है कि आसमान को किसने पैदा किया ज़मीन को किसने पैदा किया वो कहता है कि अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया फिर शैतान कहता है कि अल्लाह तआ़ला को किसने पैदा किया जब ऐसा वसवसा दिल में पैदा हो तो वो कहे में ईमान लाया अल्लाह पर और उसके रसूलों पर या फिर सू०-हदीद की आयत न०-3 पढ़े "वही सबसे अव्वल है वही सबसे आख़िर है और वो (अपनी कुदरत के ए़तबार से) ज़ाहिर और (अपनी ज़ात के ए़तबार से) पोशीदा है और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है"।
(मुस्लिम-सहीह-1/288-ह०-344)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तहक़ीक़ इन्सान के दिल में दो तरह के ख़्यालात आते हैं एक फ़रिश्ते की तरफ़ से होता है और वो भलाई का वाअ़दा और हक़ की तस्दीक़ करता है तो जो इसे पाये वो जान ले कि ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और अल्लाह का शुक्र अदा करे और दूसरा ख़्याल शैतान की तरफ़ से आता है और वो शर का वाअ़दा व हक़ की तकज़ीब और ख़ैर से रोकता है तो जो ऐसा ख़्याल पाये वो शैतान मरदूद के वसवसों से अल्लाह की पनाह मांगे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई "शैतान तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोकने के लिये तंगदस्ती का

ख़ौफ़ दिलाता है और बेहयाई का हुक्म देता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/600-ह०–2988)
(दिल में आने वाले बुरे ख़्यालात को वसवसा और दिल में आने वाले नेक ख़्यालात को इल्हाम कहा जाता है)

जो लोग मुत्तक़ी परहेज़गार हैं जब शैतान लईन की तरफ़ से उन्हें कोई बुराई व गुनाह का वसवसा आता है ख़्वाह वो शैतान जिन की तरफ़ से हो या फिर शैतान इन्स की तरफ़ से हो वो लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र व उसकी याद में मशगूल हो जाते हैं और वो अल्लाह तआ़ला के इनाअ़मात और उसके अ़ज़ाब व सवाब को याद करते हैं तो उसी वक़्त उनके दिल से बुराई और गुनाह का इरादा निकल जाता है।

अमीरुल मोमिन हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के अ़ह्दे मुबारक में एक नौजवान बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार व इबादत गुजार था यहाँ तक कि हज़रत उ़मर भी उसकी इ़बादत पर तअ़ाज्जुब किया करते थे वो शख़्स नमाज़े इशां मस्जिद में अदा करने के बाद अपने बूढ़े बाप की ख़िदमत करने के लिये जाया करता था रास्ते में एक औ़रत उसे अपनी तरफ़ बुलाती और छेड़ती थी लेकिन वो नौजवान उस पर तवज्जो दिये बग़ैर निगाहें झुकाये गुज़र जाया करता था आख़िरकार एक दिन वो नौजवान शैतान के वर ग़लाने और उस औ़रत की दाअ़वत पर बुराई के इरादे से वो

उसकी जानिब बढ़ा लेकिन जब वो दर'वाज़े पर पहुँचा तो उसे अल्लाह तआ़ला का फ़रमान याद आ गया ''बेशक जब शैतान की तरफ़ से परहेज़ गारों को कोई ख़्याल आता है तो वो फ़ौरन खुदा को याद करते हैं फिर उसी वक़्त उनकी आंखे खुल जाती हैं''। (सू०-आअ़राफ़-7/201)

ये आयते करीमा याद आते ही उसके दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुआ कि वो बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया फिर जब वो बहुत देर तक घर न पहुँचा तो बूढ़ा बाप उसे तलाश करता हुआ वहाँ पहुँचा व लोगों की मदद से उसे उठाकर घर ले आया होश आने पर बाप से तमाम वाक़ेआ़ बयान किया जब इस इस आयते करीमा का ज़िक्र किया तो एक मर्तबा फिर उस पर अल्लाह तआ़ला का शदीद ख़ौफ़ ग़ालिब हुआ और उसने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उसका दम निकल गया।

रातों रात ही उसके गुस्ल व कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम कर दिया गया जब सुबह ये वाक़ेआ़ हज़रत ऊ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की ख़िदमत में पेश किया गया तो हज़रत ऊ़मर उसके बाप के पास ताअ़ज़ियत के लिये तशरीफ़ ले गये और उनसे फ़रमाया आपने हमें इत्तिलाअ़ क्यों नहीं दी ताकि हम भी जनाज़े में शरीक हो जाते तो उन्होंने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन उसका इन्तिक़ाल रात में हुआ था इसलिये हमने आपके

आराम का ख़्याल करते हुये आपको को बताना मुनासिब न समझा फिर हज़रत उ़मर ने फ़रमाया मुझे उसकी क़ब्र पर ले चलो वहाँ पहुँच कर फिर आपने ये आयते मुबारका पढ़ी ''जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा उसके लिये दो जन्नतें हैं' (सू०-रहमान-55/46)

तो क़ब्र में से उस नौजवान ने जवाब देते हुये कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन बेशक मेरे रब ने मुझे दो जन्नतें अ़ता फ़रमाई हैं।
(इब्ने असाकिर-तारीख़ दमिश्क़-45/450)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-1/449-ह०-736)

सू०-आअ़राफ़ में दो क़िस्म के लोगों का तज़किरा है परहेज़गार और बदकार और परहेज़गार का हाल ये है कि जब उनके दिलों में शैतानी ख़्याल पैदा होता है तो उनके दिल फ़ौरन बेदार हो जाते हैं और उनकी आंखे खुल जाती हैं और वो गुनाह व उसके इरादे से किनारा कश हो जाते हैं और वो उस पर नादिम भी होते हैं और बदकार लोग वो तो शयातीन के भाई के तरह हैं और शैतान उन्हें शर व गुनाह की तरफ़ खींचे व घसीटे फिरते हैं और शैतान के भाई बन्द से मुराद इन्सानों में से जो शैतान हैं वो लागों को बेहयाई व बुराई के कामों की तरफ़ माइल करते हैं और उन्हें गुमराह करके शयातीने जिन्नात की मदद करते हैं शैतान हर वक़्त इन्सान को शर व बुराई तरफ़ माइल करने के लिये घात लगाये रहता है जैसे ही बन्दा

ग़ाफ़िल होता है वैसे ही शैतान उस पर वसवसों के ज़रिये हमला करता है और जो शैतान के पैरोकार और उसके दोस्त हैं और उसकी इताअ़त करते और उसकी बात मानते हैं तो वो अक्सर अपनी गुमराही और गुनाहों के इरतिकाब में बढ़ते चले जाते हैं और वो गुनाह पर गुनाह करते हैं और गुनाहों के करने में कोई कोताही नहीं करते और शैतान भी उनको बुरे कामों की तरफ़ रग़बत दिलाता और उनसे गुनाह कराने में कोई कोताही नहीं करता क्योंकि शैतान जब ये देखता है कि वो निहायत आसानी से मेरे ताबेअ़ हैं तो फिर शैतान की ये कोशिश रहती है कि अब वो मेरे बुरे और गुमराही के रास्ते पर ही हमेशा गामज़न रहें और वो भी शैतान के बुरे और गुमराही के रास्ते पर गामज़न रहते हैं और वो शैतान के बुरे रास्ते के तालिब और ख़्वाहिश मन्द हो जाते हैं।

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इब्लीस का तख़्त समुन्दर पर है वो अपने लश्करों को लोगों को बहकाने के लिये भेजता है तो इब्लीस के नज़दीक उसके शैतानी लश्कर में सबसे बड़ा वो है जो कि लोगों के दरमियान बड़ा फ़ित्ना बपा करे।
(मुस्लिम–सहीह–6/370-ह०–7115)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया गुज़िश्ता रात को एक सरकश शैतान जिन मुझ पर हमला करने के लिये आया ताकि मेरी नमाज़ तोड़ दे तो मैंने तीन बार 'आऊज़ू बिल्लाहि मिन्का' यानी मैं तुझसे अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगता हूँ फिर मैनें तीन बार कहा कि ''मैं तुझ पर अल्लाह की लाअ़नत भेजता हूँ'' पस अल्लाह तआ़ला ने उस शैतान को मेरे क़ाबू में दे दिया तो मैंने ज़ोर से उसका गला दबोचा और ये इरादा किया कि मैं शैतान को इस मस्जिद के किसी सुतून के साथ बांध दूँ ताकि सुबह को तुम सब उसे देखते और मदीना के बच्चे उसके साथ खेलते मगर फिर मुझे अपने भाई सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) का ये क़ौल याद आ गया 'ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी हुकूमत अ़ता फ़रमां जो मेरे बाद किसी और को ज़ैबा न हो'। (सू०–सॉद–38/35) तो मैंने उसे छोड़ दिया और अल्लाह तआ़ला ने उस शैतान जिन को रुसवा करके लौटा दिया।
(मुस्लिम–सहीह–1/606-ह०–1209,1211)

जब शैतान किसी इन्सान को किसी बुराई व गुनाह पर उकसाये तो इन्सान को चाहिये कि वो शैतान के शर से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगे और उसके ग़ज़ब को याद करे और अल्लाह तआ़ला के अ़ता कर्दा इनाअ़मात को याद करे कि अल्लाह तआ़ला ने उसे दुनिया में कितनी नेअ़मतें अ़ता फ़रमाईं हैं और आख़िरत में भी नेक अ़मल के सबब से अ़ज़ीम नेअ़मतें अ़ता फ़रमायेगा और

अल्लाह तआ़ला ने हम पर अ़ज़ीम फ़ज़्लो करम किया कि हमने बेशुमार गुनाह किये हैं और रब तआ़ला सज़ा देने पर क़ादिर है इसके बावुजूद वो बाअ़ज़ ख़ताओं को दर गुज़र फ़रमाता है और हमसे इन्तिक़ाम नहीं लेता और बाअ़ज़ गुनाहों पर हमें तौबा की तौफ़ीक़ देता है तो क्या ये इन्साफ़ होगा कि हम अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी करें और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब का सबब बने अगर हमने शैतान के उकसाने पर गुनाह किया तो शैतान तो राज़ी हो जायेगा मगर अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो जायेगा तो क्या शैतान को राज़ी और अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करना ये कहाँ की अ़क़्ल मंदी और इन्साफ़ है और हमें इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिये कि अगर आज हमने अल्लाह तआ़ला को भुला दिया तो क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला हमें भुला देगा।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और कहा जायेगा आज हम तुम्हें इस तरह भुला देते हैं जिस तरह तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है (सू०-जासिया-45/34)

और हमें इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में हमें रिज़्क़ देने और पर'वरिश करने का जो वाअ़दा किया है तो वो अपना वाअ़दा पूरा कर रहा है तो जो हमने कलमा पढ़कर अल्लाह तआ़ला की इताअ़त का-

वाअ़दा किया था तो क्या हम उस वाअ़दे को पूरा कर रहे हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
तुम मेरे (साथ किया हुआ) वाअ़दा पूरा करो मैं तुम्हारे (साथ किया हुआ) वाअ़दा पूरा करुँगा और मुझसे ही डरा करो। (सू०-बक़राह-2/40)

और हमें इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं और अल्लाह तआ़ला हमारी दुआ़ओं को कुबूल फ़रमाता है तो फिर क्या ये इन्साफ़ का तक़ाज़ा नहीं है कि अल्लाह तआ़ला हमें जो भी हुक्म दे हम उसकी ताअ़मील करें।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ हबीब जब मेरे बन्दे आपसे मेरी निस्बत सुवाल करें तो आप बता दिया करें कि मै नजंदीक हूँ मैं पुकराने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब भी वो मुझे पुकारता है पस उन्हें चाहिये कि मेरी फ़रमां बरदारी इतिख़्यार करें (सू०-बक़राह-2/186)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक मेरा रब क़रीब है वो दुआ़एें कुबूल फ़रमाने वाला है। (सू०-हूद-11/61)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
तो वो कौन है जो बेक़रार शख़्स की दुआ़ कुबूल

फ़रमाता है जब वो उसे पुकारें और (वो तुम्हारी) तकलीफ़ दूर फ़रमाता है और तुम्हें ज़मीन में पहले लोगों का वारिस और जा नशीन बनाता है क्या अल्लाह तआ़ाला के सिवा कोई और भी माअ़बूद है तुम लोग बहुत कम नसीहत कुबूल करते हो। (सू०–नम्ल–27/62)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और तुम्हारे रब ने फ़रमाया है कि तुम लोग मुझसे दुआ़ किया करो मैं ज़रुर कुबूल करूँगा।
(सू०–मोमिन–40/60)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा तुम्हारा रब बहुत हया वाला और सख़ी है कि बन्दा जब अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ अपने हाथ उठाता है तो उसे हया आती है कि उन्हें खाली लौटा दे।
(अबू दाऊद–सुनन–2/180-ह०–1488)

और हमें इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिये कि हम अपने बच्चों और बड़ों व अपने शार्गिदों और अपने उस्तादों और अपने घर वालों और बाहर वालों के सामने बेहयाई और बुरे काम नहीं करते व जब हम तन्हा होते हैं जब सिर्फ़ अल्लाह तआ़ाला ही हमें देख रहा होता है तो हम बेहयाई और बुरे कामों से बाज़ नहीं आते तो फिर इससे साफ ज़ाहिर होता है कि हमें खुदा का ख़ौफ़ नहीं

है बल्कि मख़लूक़ का ख़ौफ़ है जबकि कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
पस तुम लोगों से न डरो सिर्फ़ मुझसे डरो। (सू०-मायदा-5/44)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
पस जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और अपने नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात से रोका तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत है। (सू०-नाज़िआ़त-79/40,41)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और हम उसके दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं। (सू०-क़ाफ़-50/16)

बेशक वो उन कामों से ख़बरदार है जो तुम करते हो। (सू०-नम्ल-27/88)

(ऐ इन्सान) क्या तुझको माअ़लूम नहीं कि अल्लाह उन सब चीज़ों को जानता है जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और कहीं भी तीन (लोगों) की कोई सरगोशी नहीं होती मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका चौथा होता है और न ही कोई पाँच (लोगों) की कोई सरगोशी होती है मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका छटा होता है और न

इससे कम लोगों की और न ज़्यादा की मगर वो हमेशा उनके साथ होता है जहाँ कहीं भी वो होते हैं फिर वो क़यामत के दिन उन्हें उन कामों से ख़बरदार फ़रमां देगा जो वो करते रहे थे।
(सू०–मुजादला–58/7)

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि मैं गुनाह करता हूँ मगर मैं चाहता हूँ कि गुनाह दोड़ दूँ तो मैं क्या करुं तो आपने फ़रमाया कि तू गुनाह कर मगर अल्लाह का रिज़्क़ खाना छोड़ दे उसने कहा कि रिज़्क़ तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही देता है और ज़मीन में सब उसी का रिज़्क़ है तो हज़रत ने फ़रमाया ऐ बन्दे तू इतना तो हया कर तू उसी का रिज़्क़ खाये और उसी की ना फ़रमानी करे फिर हज़रत ने फ़रमाया कि तू गुनाह कर मगर अल्लाह की ज़मीन के किसी हिस्से में न रह और उसकी ज़मीन से बाहर जाकर गुनाह कर कि तू रहे भी उसी की ज़मीन पर और उसी से बग़ावत और उसी की नाफ़रमानी करता है तो फिर हया कर कि तू उसकी ज़मीन पर रहता है और उसी की नाफ़रमानी करता है फिर हज़रत ने फ़रमाया कि तू गुनाह कर मगर ऐसी जगह कर जहाँ पर अल्लाह तुझे देख न सके उसने कहा अल्लाह तो हर जगह हाज़िर व नाज़िर है और उससे कोई भी चीज़ मख़्फ़ी नहीं तो हज़रत ने फ़रमाया तो फिर हया कर ये जानते हुये कि वो तुझे देख रहा है फिर भी तू गुनाह कर रहा है।

शुरु रात के वक़्त शैतान फैल जाते

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब रात शुरुअ़ हो या रात का अंधेरा छा जाये तो तुम अपने जानवरों और बच्चों को बाहर न निकलने दो क्योंकि उस वक़्त शयातीन फैल जाते हैं फिर जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र जाये तो फिर उस वक़्त अपने जानवरों व अपने बच्चों को छोड़ दो बिस्मिल्लाह पढ़कर दर'वाज़े बन्द करो व बिस्मिल्लाह पढ़कर चराग़ गुल करो और अल्लाह तअ़ाला का नाम लेकर मशकीज़े का मुँह बन्द करो और अल्लाह तअ़ाला का नाम लेकर खाने का बरतन ढाँप दो।
(बुख़ारी–सहीह–3/485-ह०–3280)
(अबू दाऊद–सुनन–4/903-ह०–3733)
(मुस्लिम–सहीह–5/246-ह०–5253)

अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से

➡ हज़रत अबू क़तादा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अच्छा ख़्वाब अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से है और जब तुममें से कोई अच्छा ख़्वाब देखे जिसे तुम पसंद करते हो तो अल्लाह तअ़ाला की हम्दो सना करो और

उस ख़्वाब को किसी से बयान करो और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से होता है लिहाज़ा अगर तुम में से कोई बुरा ख़्वाब देखे जिससे वो डर महसूस करे तो उसे चाहिये अपनी बांयी जानिब थूक दे और शैतान के शर से अल्लाह तअ़ाला की पनाह मांगे यानी आऊज़ू बिल्लहि मिनश्शैता निर्रजीम पढ़े और किसी से बुरे ख़्वाब का ज़िक्र न करे इस तरह वो उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा (बुख़ारी–सहीह–3/490-3292 व 6/341-6985)

ख़्वाब में हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की शक्ल में शैतान नहीं आ सकता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत इख़्तियार न करो जिसने मुझे ख़्वाब में देखा उसने मुझे ही देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता और जिसने भी मुझ पर जान बूझकर झूठ बांधा वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।
(बुख़ारी–सहीह–5/672-ह०–6197)
(मुस्लिम–सहीह–1/39-4 व 5/402-ह०–5919)

जमाई शैतान की तरफ़ से होती है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जमाई आना शैतान की तरफ़ से है सो जब किसी को जमाई आये तो उसे रोके अपना मुँह बन्द करे जहाँ तक हो सके क्योंकि जब कोई जमाई के वक़्त हा हा करता है तो शैतान उस पर हंसता है और बिला शुबा उस में दाख़िल हो जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–3/489-ह०–3289)
(मुस्लिम–सहीह–6/488-ह०–7490)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/259-ह०–370)
(अबू दाऊद–सुनन–6/768-ह०–5026)

जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द साएदी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ताअम्मुल (सोच बिचार फ़िक्र वक़्फ़ा) व ताख़ीर व आहिस्तगी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और जल्द बाज़ी व तेज़ी शैतान की तरफ़ से है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1071-ह०–2012)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ताअम्मुल व आहिस्तगी से हर काम करना अच्छी ख़सलत है। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1070-ह०–2010)

बीवी के पास जाने से पहले शैतान से तहफ़्फ़ुज़ की दुआ़ करना

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुममें से कोई अपनी बीवी के पास जाये और बिस्मिल्ला पढ़कर ये दुआ़ करे ऐ अल्लाह हमें शैतान से महफ़ूज़ रख और जो औलाद हमें तू अ़ता फ़रमाये उसे भी शैतान से महफ़ूज़ रख फिर अगर उन्हें बच्चा अ़ता किया गया तो शैतान उस बच्चे को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा (बुख़ारी–सहीह-3/482-ह०-3271)

घर में घुसते वक़्त अल्लाह का नाम

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब आदमी घर जाता है और घर में घुसते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम लेता है तो शैतान अपने रफ़ीक़ों व दूसरे ताबेअ़दारों से कहता है न तुम्हारे रहने का यहाँ ठिकाना है न खाने का और जब घर में घुसते वक़्त अल्लाह का नाम न लिया जाये तो शैतान कहता है कि तुम्हें रहने का ठिकाना मिल गया और जब खाते वक़्त भी अल्लाह का नाम न लिया जाये तो शैतान कहता है कि तुम्हारे रहने का भी ठिकाना हुआ और खाना भी मिला।
(मुस्लिम–सहीह–5/248-ह०–5262)
(अबू दाऊद–सुनन–4/922-ह०–3765)

तुलूअ़ व गुरुबे आफ़ताब के वक़्त नमाज़ न पढ़ने की वजह

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सूरज के तुलूअ़ व गुरुब के वक़्त नमाज़ न पढ़ो क्योंकि वो शैतान के दोंनों सींगों के दरमियान से तुलूअ़ होता है।
(बुख़ारी–सहीह–3/483-ह०–3274)
(मुस्लिम–सहीह–2/309-ह०–1925)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब सूरज का किनारा निकल आये तो नमाज़ न पढ़ो जब तक कि वो पूरी तरह नुमायां न हो जाये और जब गुरुब होने लगे तो उस वक़्त भी नमाज़ न पढ़ो जब तक बिल्कुल गुरुब न हो जाये।
(बुख़ारी–सहीह–3/483-ह०–3272)
(मुस्लिम–सहीह–2/310-ह०–1926)
(नसाई–सुनन–1/244-ह०–565 व 1/246-ह०–574)

कसरत से शैतानी वसवसों का आना ऐ़न ईमान है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सहाबा में से कुछ लोग आपके पास आये और आप से अ़र्ज़ किया

हमारे दिलों में वो ख़्याल गुज़रते हैं जिनका बयान करना हममें से हर एक को बड़ा गुनाह माअ़लूम होता है यानी उस ख़्याल को हम कह नहीं सकते क्योंकि वो ख़्याल कुफ़्र व फ़िर्क़ का ख़्याल है कि जिसका मुँह से निकालना मुश्किल माअ़लूम होता है तो आपने फ़रमाया क्या तुमको ऐसे वसवसे होते हैं लोगों ने कहा हाँ या रसूलल्लाह फिर आप ने फ़रमाया ये तो ऐ़न ईमान है।
(मुस्लिम–सहीह–1/227-ह०–340)
(अबू दाऊद–सुनन–6/823-ह०–5111)

शैतान खून की तरह गर्दिश करता है

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि़अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शैतान इन्सान के अन्दर इस तरह दोड़ता है जैसे खून गार्दिश करता है। (बुख़ारी–सहीह–6/436-ह०–7171)
(बुख़ारी–सहीह–3/486-ह०–3281)
(अबू दाऊद–सुनन–4/583-ह०–4719)
(अबू दाऊद–सुनन–4/750-ह०–4994)

हर इन्सान के साथ शैतान होता है

➡ हज़रत जाबिर (रज़ि़अल्लाहु तअ़ाला अन्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उन औ़रतों के घरों में दाख़िल न हुआ करो जिनके शौहर घर में न–

हो इसलिये कि तुम्हारे बदनों में शैतान र‘वां होता है जैसे खून र‘वां होता है अ़र्ज किया गया कि या रसूलल्लाह क्या आपके बदन में भी तो आपने फ़रमाया हाँ मुझमें में भी लेकिन अल्लाह तआ़ला तआ़ला ने मदद फ़रमाई और वो ईमान ले आया। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/645-ह०–1172)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से हर शख़्स के साथ एक शैतान मुक़र्रर किया गया है (जो उसे बुराई की तरफ़ माइल करता है) तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या आपके साथ भी तो अपने फ़रमाया हां मेरे साथ भी फिर आपने फ़रमाया मगर अल्लाह तआ़ला ने मेरी मदद फ़रमाई और वो मेरा फ़रमां बरदार हो गया है और अब वो मुझे भलाई के सिवा कोई मशवरा नहीं देता (मुस्लिम-सहीह–5/320-ह०-7108) (तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/288-ह०–496)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक इब्ने आदम के क़रीब एक शैतान का नुजूल होता है और एक फ़रिश्ते का नुजूल होता है यानी इन्सान के दिल में एक असर शैतान का होता है और एक असर फ़रिश्ते का होता है तो शैतान का असर ये होता है कि शैतान बुराई की

तरफ़ लेकर जाता है और हक़ की तकज़ीब करता है और फ़रिश्ते की तरफ़ से इल्क़ा करने वाला हमेशा भलाई की तरफ़ लेकर जाता है और ख़ैर की बिशारत देता है और हक़ की तस्दीक़ करता है तो जो शख़्स इस सूरते हाल को पाये तो वो अल्लाह का शुक्र बजा लाये और जो शख़्स अपने दिल में दूसरी सूरते हाल को पाये तो वो शैतान से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगे फिर आपने ये आयत पढ़ी शैतान तुमको मुफ़लिसी से डराता है व बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तआ़ला तुमसे बख़्शिश और फ़ज़्ल का वाअ़दा फ़रमाता है (सू-बक़राह-2/268)(तिर्मिज़ी-सुनन-2/600-ह०-2988) (इब्ने हिब्बान-सहीह-2/156-ह०-997)

ग़ैर इख़्तियारी वसवसे मुआ़फ़

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत से वसवसे और ख़्यालो को जो दिल में आयें और दिलों में आने वाली बातों से दर गुज़र फ़रमाया है जब तक कि वो उन पर अ़मल न करें या उन्हें जुबान पर न लायें।

(बुख़ारी-सहीह-6/158-ह०-6664)
(मुस्लिम-सहीह-1/223-ह०-331)
(अबू दाऊद-सुनन-1/688-ह०-2209)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/653-ह०-1183)
(इब्ने माजा-सुनन-2/93-ह०-2040)

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन अल्लाह तबारक व तआला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) की इनायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अहले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअलीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था।

अल्लाह तआला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

★★★★★

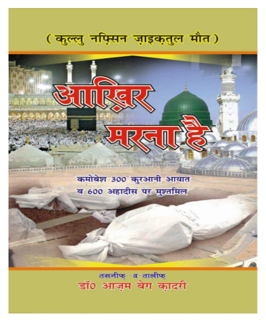

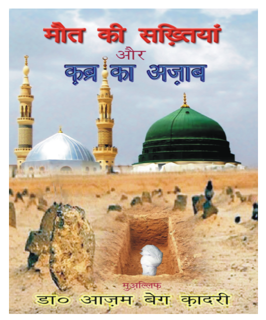

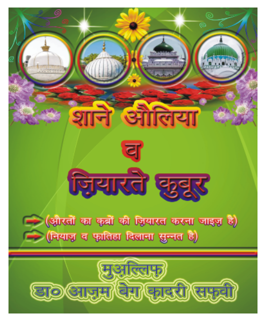

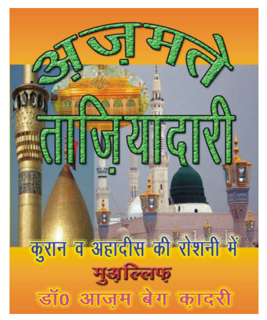

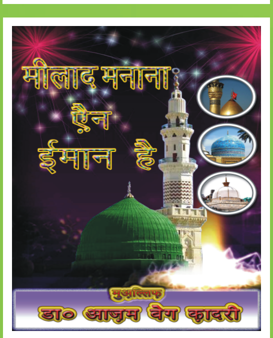

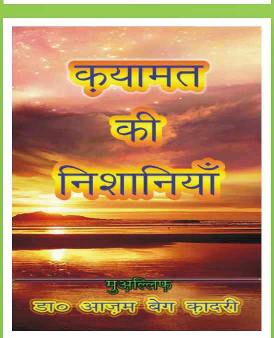

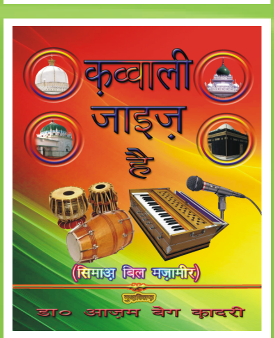

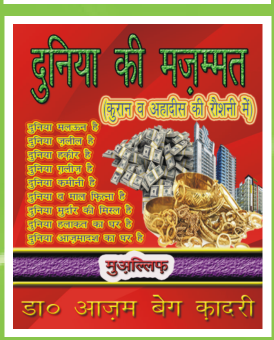

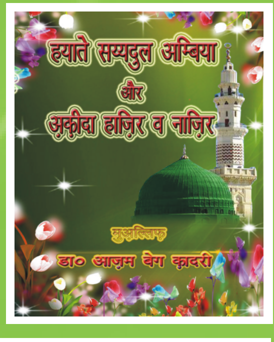

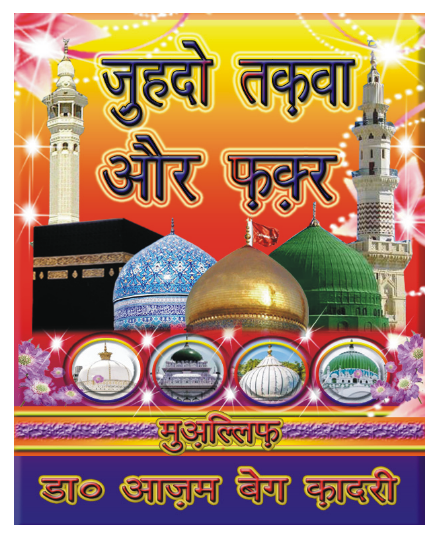

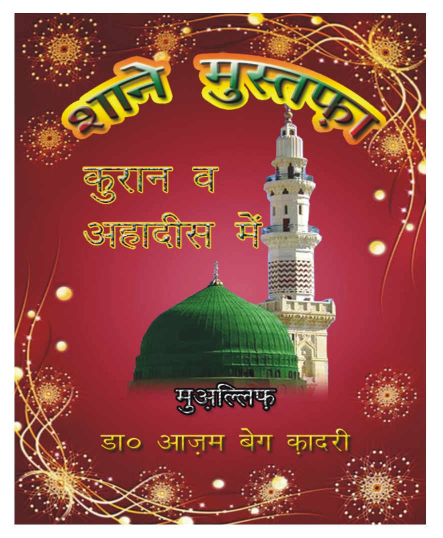

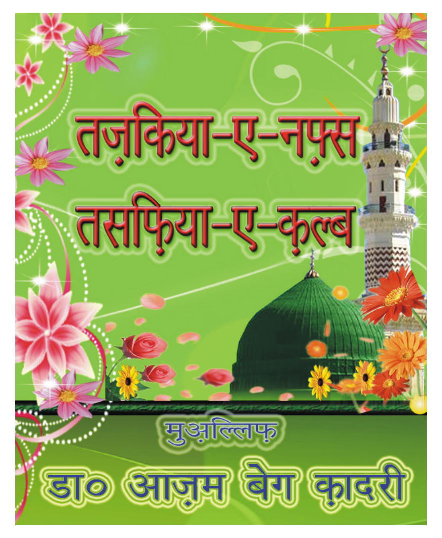

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)